अपराधों को जानिए, सुरक्षित रहिए

मनोहर कहानियां

नवंबर, 2021 ₹ 50/-

J

आर्यन खान पर ड्रग्स का डंक

मोहब्बत के दुश्मन

रसूखदार का प्यार

सिंदूर की आड़ में इश्क की उड़ान

डेरा सच्चा सौदा के पाखंडी को फिर मिली सजा

Piramal
TETMOSOL®
टेटमोसॉल रोज़ लगाना, मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.
खुजली
लाल दाने
फोड़े
पपड़ी
से राहत दे
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
नया
डस्टिंग पाउडर भी उपलब्ध
TETMOSOL®
DUSTING POWDER
ANTI-FUNGAL
TRIPLE SKIN BENEFITS
100 g
डॉक्टर का सुझाया
No.1
ब्रैंड#
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
Monosulfiram
Prescribed by Doctors
नींबू जैसी ताज़ी महक
नया टेटमोसोल डस्टिंग पाउडर त्वचा के इन्फेक्शन, घमोरियां और खुजली से राहत देता है।
नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।
1800 22 9898
consumercare@piramal.com

Divisa
www.divisastore.com

सच्ची सहेली®

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक

- कठिन दर्द
- चिड़चिड़ापन
- थकान
- कमज़ोरी
- कमर कटना
- इम्यूनिटी

आदि में सहायक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli

Available at all medical & general stores

नवंबर 2021

मनोहर कहानियां

टिप्पणी, घटना की सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स के लिए :
manoharkahaniyanmonthly@gmail.com
08527666775
08527750077

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in Phone : 08488843408 (Mon to Saturday 10 AM to 6 PM)

06. डेरा सच्चा सौदा के पाखंडी को फिर मिली सजा
सुनील वर्मा

22. आर्यन खान पर ड्रग्स का डंक
भारत भूषण श्रीवास्तव

30. मुंबई का असली सिंघम समीर वानखेडे
वीरेंद्र बहादुर सिंह

34. मोहब्बत के दुश्मन
शाहनवाज

42. सिंदूर की आड़ में इश्क की उड़ान
सुरेशचंद्र मिश्र

50. रसूखदार के प्यार का वार
नितिन कुमार शर्मा

56. मनीष गुप्ता केस : जब रक्षक बन गए भक्षक
शाहनवाज

62. बलिदान
कस्तूर सिंह भाटी

66. प्रेमिका की खातिर इतना बड़ा गुनाह
प्रतिनिधि

70. प्यार को भस्म कर गया नफरत का शोला
दिनेश बैजल 'राज'

78. बेवफा बीवी बरदाश्त नहीं
मोहम्मद आसिफ 'कमल' एडवोकेट

खबर

21. मिलिए दाढ़ीमूंछ वाली लड़की से

49. 11 हजार हत्याओं की आरोपी 96 साल की महिला फरार

55. नहीं रहा करोड़ों का सुलतान

77. पागलखाना जो अब है भूतखाना

06 डेरा सच्चा सौदा के पाखंडी राम रहीम को फिर मिली सजा

गुरमीत राम रहीम ने डेरा सच्चा सौदा आश्रम में अपना पूरा साम्राज्य स्थापित कर रखा था. देश में उस के लाखों भक्त थे, जो उस पर आंखें मूंद कर विश्वास किया करते थे. इन अंधभक्तों की बदौलत उस ने अकूत संपत्ति ही नहीं जुटाई बल्कि आश्रम में अय्याशी का खेल भी खेला. गुफा के अंदर स्थित अपने निवास में वह साध्वियों के साथ क्या रासलीला खेलता था सभी जानते थे. जब उसे लगता था कि डेरे का कोई सेवादार उस के राज उजागर कर सकता है तो वह उसे रास्ते से हटवा देता था. ऐसा ही उस ने सेवादार रणजीत कुमार के साथ किया. सीबीआई अदालत ने उस के इस गुनाह की सजा दे कर साबित कर दिया कि...

22 आर्यन खान पर ड्रग्स का डंक

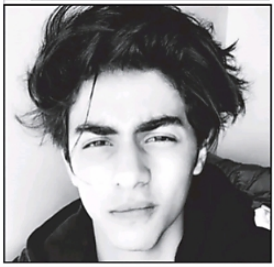

34 मोहब्बत के दुश्मन

आवश्यकता है: राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें : editor@delhipress.biz

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली प्रैस, डीएलएफ 50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक:परेशनाथ (वौ-7, अंक-1)
संपादकीय, वितरण एवं एजेंसी कार्यालय : ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

वार्षिक ग्राहक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055. फोन: 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 **मुंबई कार्यालय:** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन: 91-22-24122661/43473050

संपादकीय

संतों को हिंदू समाज में ऊंचा दरजा दिया गया है, तभी तो लोग उन्हें बहुत ज्यादा आदरसम्मान देते हैं. कुछ लोग तो एक बार को अपने परिवार के बड़ेबुजुर्गों की बात को भले ही टाल दें लेकिन संतों की बातों का अनुसरण करते हैं. अपने भक्तों के इसी अंधविश्वास का कुछ संत भरपूर फायदा उठाते हैं. उन संतों के लिए ये भक्त सीधीसादी दुधारू गाय जैसे होते हैं. अपने भक्तों की बदौलत कुछ संतों ने न सिर्फ करोड़ोंअरबों रुपए की संपत्ति अर्जित कर ली बल्कि अपने आश्रम को अय्याशी का अड्डा तक बना लिया.

हरियाणा के सिरसा शहर में स्थित डेरा सच्चा सौदा आश्रम के गद्दीदार संत गुरमीत राम रहीम उन्हीं में से एक हैं.

देशविदेश में इन के लाखों अनुयायी थे, जिन की बदौलत इन्होंने करोड़ों रुपए की संपत्ति अर्जित की. 700 एकड़ जमीन पर इन्होंने अपना एक साम्राज्य ही स्थापित कर लिया था. स्कूलकालेज सब कुछ आश्रम के अंदर ही था. लेकिन यह वहां की सुंदर साध्वियों को गुफा में स्थित अपने आवास में बुला कर अय्याशी करते थे.

इन की यही फितरत ही इन के विनाश का कारण बनी. यदि एक साध्वी तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी को गुमनाम चिट्ठी भेज कर अपनी पीड़ा बयान नहीं करती तो शायद गुरमीत राम रहीम के कुकर्मों की सच्चाई सामने नहीं आ पाती.

पोल खुलने पर इन्होंने पत्रकार रामचंद्र छत्रपति और अपने ही आश्रम के पुराने सेवादार रणजीत कुमार को भी ठिकाने लगवा दिया. इन तीनों ही मामलों में इन्हें अलगअलग 3 बार आजीवान कारावास की सजा सुनाई गई. अभी इन के खिलाफ आश्रम के करीब 400 साधुओं को नपुंसक बनाने का मामला सीबीआई कोर्ट में विचाराधीन है.

आस्था की बाजार सजाने के बाद लोगों को भ्रमजाल में फांस कर अपना उल्लू सीधा करने वालों में संत राम रहीम ही कोई अकेले नहीं हैं. संत के चोले की आड़ में वासना का खेल खेलने वाले पाखंडी संतोंबाबाओं के किस्से आए दिन सुर्खियों में आते रहते हैं.

ऋषिकेश के विख्यात संत स्वामी रामेश्वरानंद गिरि तो 18 देशों में अध्यात्म के प्रवचन देते थे. उन्होंने अपने एक भक्त की बेटी सविता को अपने मोहजाल में फांस लिया था. जब सविता की शादी मनोज नाम के युवक से हो गई तो उन्होंने प्रेमिका सविता के साथ मिल कर मनोज की हत्या करा दी.

कामक्रीड़ा वाले स्वामी नित्यानंद को अधिकांश लोग जानते होंगे. दक्षिण भारत की एक अभिनेत्री के साथ कामक्रीड़ारत जब उन का वीडियो वायरल हुआ तो धर्मगुरु की हकीकत सामने आई. इसी तरह संत आसाराम, भीमानंद, स्वामी वीरेंद्रदेव दीक्षित, फलाहारी बाबा स्वामी कौशलेंद्र आदि के अध्यात्म की आड़ में अय्याशी के किस्से सामने आ चुके हैं.

अब बात यह समझ में नहीं आती कि तमाम पाखंडियों के चेहरे उजागर होने के बावजूद भी लोग आखिर जागरूक क्यों नहीं हो रहे. कुछ की आंखों पर अंधभक्ति का ऐसा चश्मा लगा हुआ है कि संत का चोला ओढ़े तमाम व्यभिचारियों को सजा हो जाने के बाद भी उन्हें वे बेकुसूर लगते हैं.

आजकल के अनेक संत पूरी तरह से प्रोफेशनल हो गए हैं. भक्त तो उन का प्रमोशन करते ही हैं, इस के अलावा उन की प्रमोशनल और मैनेजमेंट की अपनी टीम भी होती है जो उन के धंधे को आगे बढ़ाने का काम करती है. जब इन संतों के पास चढ़ावे के करोड़ों रुपए आते हैं तो उन की लाइफस्टाइल भी बदल जाती है. ऐसे में कुछ संत अपनी कामेंद्रियों पर नियंत्रण नहीं रख पाते और उन के किस्से उजागर हो जाते हैं.

यह संत अपने अनुयायियों का इस तरह से ब्रेनवाश कर देते हैं कि भक्त उन्हें अपना सब कुछ मान लेते हैं. उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि इन्हीं के सान्निध्य में रह कर उन का कल्याण हो सकेगा. लेकिन वह यह बात नहीं समझ पाते कि उन के 'बाबा' उन के सहारे अपना कल्याण करने में लगे हुए हैं. भक्तों की बदौलत उन की अपनी संपत्ति में भरपूर इजाफा हो रहा है.

संत का चोला ओढ़े हुए आज भी अनेक पाखंडी लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं. लोगों को ऐसे कथित संतों से सावधान रहने की जरूरत है. वरना ऐसे तथाकथित संत लोगों को बेवकूफ बना कर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे.

सरकार को भी चाहिए कि किसी संत के गंभीर अपराध में दोषी पाए जाने के बाद उस की सारी संपत्ति अपने कब्जे में ले कर, वह जनहित के कामों में प्रयोग करे क्योंकि वह संपत्ति आम लोगों के पैसे से ही अर्जित की गई होती है.

पंचकूला, हरियाणा

डेरा सच्चा सौदा के संत राम रहीम ने अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा के लिए डेरे को अनैतिक कार्यों का केंद्र और अकूत संपत्ति हासिल करने का माध्यम बना लिया था. सब कुछ जानने के बाद उस के डर से डेरे में कोई मुंह तक नहीं खोल पाता था. लेकिन उस के काले कारनामों की जिस तरह कोर्ट द्वारा सजा सुनाई जा रही है, उस से तो यही लगता है कि...

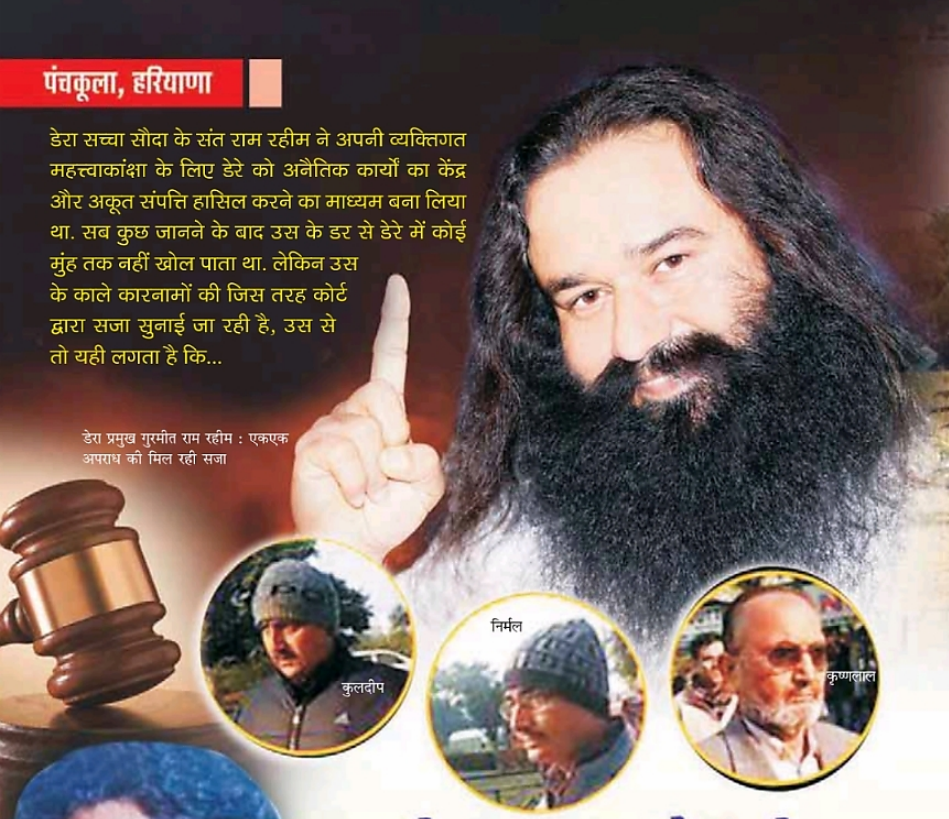

डेरा प्रमुख गुरमीत राम रहीम : एकएक अपराध की मिल रही सजा

कुलदीप

निर्मल

कृष्णलाल

डेरा सच्चा सौदा के पाखंडी को फिर मिली सजा

❑ सुनील वर्मा

निर्भीक पत्रकार रामचंद्र छत्रपति

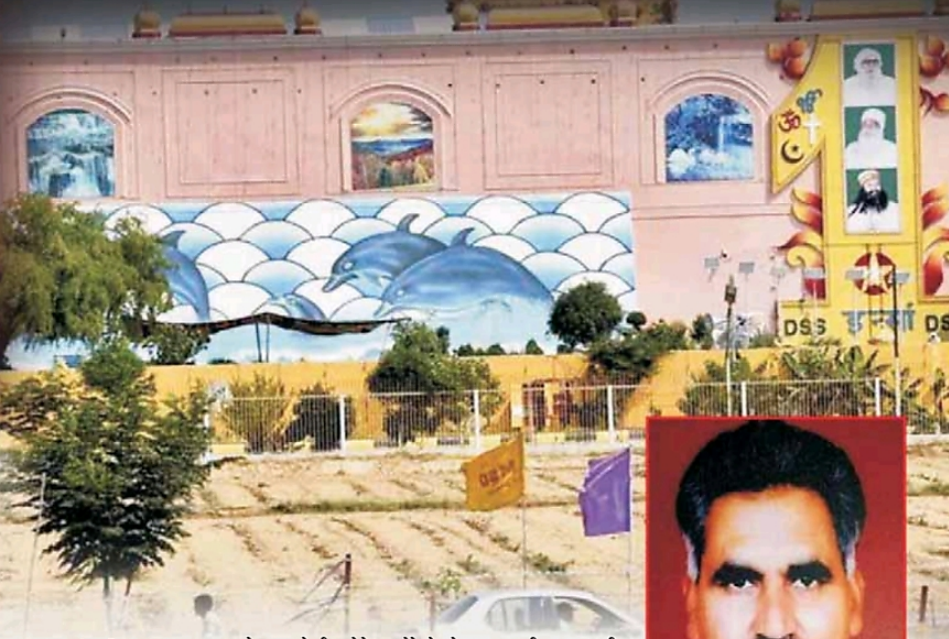

18 अक्तूबर, 2021 को सुबह से ही पंचकूला की विशेष सीबीआई अदालत के बाहर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे. अदालत के आसपास धारा 144 लागू कर दी गई थी. हत्या के जिस मामले में विशेष सीबीआई कोर्ट के जज सुशील कुमार गर्ग सजा का ऐलान करने वाले थे, उस में 5 आरोपी उन के सामने कठघरे में खड़े थे. जबकि एक आरोपी पिछले कई घंटों से रोहतक की सुनारिया जेल से वीडियो कौन्फ्रैंसिंग के जरिए जुड़ा था. इसी शख्स के कारण सुरक्षा के तमाम इंतजाम किए गए थे.

क्योंकि प्रशासन को आशंका थी कि उस के खिलाफ सजा का ऐलान होने से कहीं उस के भक्त भड़क कर हिंसा पर उतारू न हो जाएं. यह शख्स कोई छोटामोटा व्यक्ति नहीं, बल्कि डेरा सच्चा सौदा का मुखिया संत गुरमीत राम रहीम था, जिस के देशविदेश में लाखों समर्थक थे.

सरकारी वकील और बचाव पक्ष के वकीलों की कई घंटे दलील चली. आखिरकार कई घंटों की बहस के बाद सीबीआई जज सुशील कुमार ने अपना फैसला देते हुए डेरे के सेवादार रणजीत कुमार की हत्या के आरोप में डेरा सच्चा सौदा प्रमुख संत गुरमीत राम रहीम, अवतार सिंह, जसबीर सिंह, सर्वदिल सिंह और कृष्णलाल को धारा 120बी, 302 एवं 506 के साथ उम्रकैद की सजा सुनाई.

इस मामले में आरोपित इंद्रसेन की सुनवाई के दौरान 8 अक्तूबर, 2020 को मौत हो गई थी. जज ने गुरमीत राम रहीम को 32 लाख रुपए का जुरमाना अदा करने की सजा भी सुनाई. यह रकम पीड़ित परिवार को देने का आदेश दिया.

सजा का ऐलान होते ही रोहतक की सुनारिया जेल से वीडियो कौन्फ्रैंसिंग के जरिए कोर्ट के साथ जुड़े राम रहीम ने अपना सिर पकड़ लिया और वहीं जमीन पर बैठ गया.

ये वही गुरमीत राम रहीम था, जिस के आगेपीछे कुछ साल पहले तक लाखों अनुयायियों की भीड़ जुटी रहती थी. लेकिन अपने कर्मों के कारण आज वह सलाखों के पीछे एक नहीं बल्कि 3 आपराधिक मामलों में सजा भोग रहा है.

रणजीत सिंह हत्याकांड की कहानी को समझने के लिए हमें पहले राम रहीम और उस के उस साम्राज्य की बात करनी होगी, जिस के गुमान में वह अपराध दर अपराध करते हुए आज सलाखों के पीछे है.

सेवादार रणजीत सिंह

गुरमीत सिंह के डेरा प्रमुख राम रहीम बनने की कहानी

गुरमीत सिंह अपने मातापिता की इकलौती संतान था. उस का जन्म 15 अगस्त, 1967 को राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के गुरुसर मोदिया में जट सिख परिवार में हुआ था. उस के पिता का नाम मघर सिंह व मां का नाम नसीब कौर है. मातापिता हरियाणा के सिरसा स्थित डेरा सच्चा सौदा के अनुयायी थे.

महज 7 साल की उम्र में मातापिता ने 31 मार्च, 1974 को अपने बेटे गुरमीत सिंह को तत्कालीन डेरा प्रमुख शाह सतनाम सिंह के चरणों में समर्पित कर दिया था. जिस के बाद डेरे में ही उस की शिक्षादीक्षा शुरू हुई.

23 सितंबर, 1990 को शाह सतनाम सिंह ने देशभर से अनुयायियों का सत्संग बुलाया. उसी समय उन्होंने गुरमीत सिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया. गुरमीत सिंह हरियाणा के सिरसा में स्थित आध्यात्मिक संस्था डेरा सच्चा सौदा के तीसरे प्रमुख बने. जिस की स्थापना 1969 में शाह सतनाम सिंह के गुरु शाह मस्तानाजी ने की थी.

डेरा प्रमुख बनने से पहले ही गुरमीत सिंह का गृहस्थ जीवन शुरू हो चुका था. गुरमीत सिंह की 2 बेटियां और एक बेटा है. बड़ी बेटी चरणप्रीत और छोटी का नाम अमरप्रीत है. उस ने इन 2 बेटियों के अलावा एक बेटी हनीप्रीत को गोद लिया हुआ था. इस की बड़ी बेटी चरणप्रीत कौर के पति का नाम डा. शान-ए-मीत इंसां जबकि छोटी बेटी अमरप्रीत के पति का नाम रूह-ए-मीत इंसां है.

गुरमीत सिंह के बेटे जसमीत की शादी बठिंडा के पूर्व एमएलए हरमिंदर सिंह जस्सी की बेटी हुस्नमीत इंसां से हुई थी. डेरा सच्चा सौदा का साम्राज्य विदेशों तक फैला हुआ है.

अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड से ले कर आस्ट्रेलिया और यूएई तक उन के आश्रम व अनुयायी हैं. डेरे की तरफ से दावा किया जाता है कि दुनिया भर में उन के करीब 5 करोड़ अनुयायी हैं, जिन में से 25 लाख अनुयायी अकेले हरियाणा में ही मौजूद हैं.

बहरहाल, गद्दी संभालने के बाद गुरमीत सिंह ने सर्वधर्म समभाव का संदेश देने के लिए अपने नाम में सभी धर्मों के नाम शामिल किए और अपना नाम गुरमीत सिंह से बदल कर गुरमीत राम रहीम सिंह रख लिया. जिस कारण चौतरफा उन की प्रशंसा हुई.

उन्होंने जाति प्रथा की समाप्ति का आह्वान किया तथा अपने भक्तों से जातिवाचक नाम हटा कर 'इंसां' नाम लगाने को प्रेरित किया. गुरमीत राम रहीम ने कई वेश्याओं को अपनी पुत्री का दरजा दे कर अपनाया व अनुयायियों से आह्वान कर उन के घर बसाए.

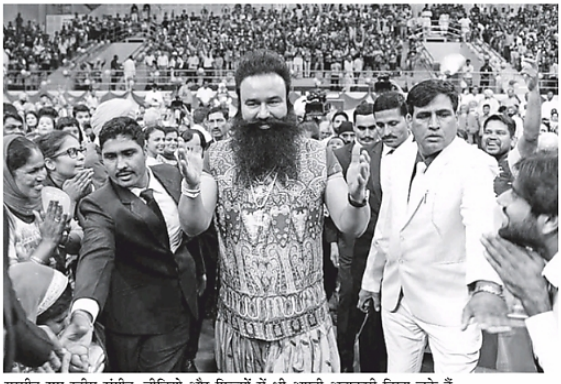

गुरमीत राम रहीम संगीत, वीडियो और फिल्मों में भी अपनी अदाकारी दिखा चुके हैं.

उन्होंने सफाई के कई अभियान चलाए. ऐसे कई काम थे, जिस कारण संत गुरमीत राम रहीम की शोहरत दुनिया भर में फैलने लगी और उन के भक्तों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी.

लेकिन इंसान चाहे साधारण हो या कोई संत, अगर अपनी इच्छाओं और कामनाओं पर अंकुश न रख सके तो शोहरत को कलंक लगने में देर नहीं लगती. गुरमीत राम रहीम के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ.

गुरमीत राम रहीम सन 2002 में पहली बार सुर्खियों में तब आए, जब उन के ऊपर डेरे की साध्वियों के यौनशोषण के आरोप लगे. उसी साल उन के खिलाफ यौन शोषण की खबर छापने वाले सिरसा के एक स्थानीय पत्रकार रामचंद्र छत्रपति की हत्या हो गई. इस के आरोप भी डेरामुखी पर ही लगे.

अचानक शोहरत की बुलंदियां छूते राम रहीम अपने किसी न किसी कारनामे के कारण आए दिन मीडिया की सुर्खियां बनने लगे. डेरामुखी राम रहीम ने अपने ऊपर लगे आरोपों से निकलने के लिए एक के बाद एक ऐसी गलतियां कीं, जिस से वह अपराध की दलदल में गहरे तक फंसते चले गए.

अचानक शोहरत की बुलंदियां छूते राम रहीम अपने किसी न किसी कारनामे के कारण आए दिन मीडिया की सुर्खियां बनने लगे. डेरामुखी राम रहीम ने अपने ऊपर लगे आरोपों से निकलने के लिए एक के बाद ऐसी गलतियां कीं, जिस से वह अपराध की दलदल में गहरे तक फंसते चले गए.

जब हुआ बेनकाब डेरे में चल रही अय्याशगाह का खेल

28 अगस्त, 2017 को सीबीआई कोर्ट ने पहली बार गुरमीत राम रहीम को 4 साध्वियों के बलात्कार मामले में 20 साल की जेल व 30 लाख रुपए जुरमाने की सजा सुनाई थी. जिस मामले में उन्हें सजा सुनाई गई थी. डेरे में चल रहे साध्वियों के यौन उत्पीड़न के खुलासे की कहानी बेहद रोचक है.

हुआ यूं कि साल 2002 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को एक गुमनाम पत्र मिला. इस में एक गुमनाम साध्वी ने लिखा कि वह पंजाब की रहने वाली है और सिरसा के डेरा सच्चा सौदा में 5 साल से रह रही है. डेरे में साध्वियों का यौन शोषण किया जा रहा है. लेटर में बठिंडा, कुरुक्षेत्र की कुछ साध्वियों के यौन शोषण किए जाने की बात भी लिखी थी.

साध्वी के पत्र में लिखी बातों का कुछ

हिस्सा बेहद आपत्तिजनक था. इस गुमनाम पत्र के बाद से ही बवाल शुरू हो गया था.

2002 में गुमनाम साध्वी की लिखी चिट्ठी की गोपनीय जांच शुरू हो गई, लेकिन इसी बीच ये चिट्ठी मीडिया के जरिए सार्वजनिक हो गई, जिस पर संज्ञान लेते हुए पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने सीबीआई को मामले की जांच सौंप दी.

सीबीआई ने डेरे के मैनेजर इंद्रसेन से 1999 से 2001 तक की साध्वियों की लिस्ट मांगी तो 2005 में सीबीआई को 3 लिस्ट मिलीं. पहली लिस्ट में 53, दूसरी में 80 और तीसरी लिस्ट में 24 साध्वियों के नाम थे.

राम रहीम के खिलाफ सबूत जुटाने के लिए सीबीआई ने 1997 से 2002 के बीच डेरा छोड़ चुकी 24 साध्वियों पर फोकस किया. इन में से 18 को ही सीबीआई ट्रेस कर पूछताछ कर पाई. इन में भी सिर्फ 2 ही साध्वियां अदालत तक पहुंचीं और और अपने बयान दर्ज कराए. इन शादीशुदा साध्वियों के बच्चे भी हैं.

जो साध्वी सीबीआई के सामने आईं, उस में से फतेहाबाद की एक पूर्व साध्वी ने 4 मई, 2006 को सीबीआई के सामने बयान दर्ज कराया. उस ने बताया कि 1998 में डेरा में बतौर साध्वी जौइन किया था. वह शाह सतनामजी स्कूल में पढ़ाती थी. 6 महीने बाद उस की बहन भी साध्वी बन गई. बाबा ने उस का नाम नाजम और बहन का तसलीम रखा.

बाबा गर्ल्स हौस्टल के पास बनी अपनी गुफा में रहता था और गुफा के बाहर साध्वियों को ही संतरी रखता था. जिन की ड्यूटी रात 8 बजे से 12 और 12 बजे से 4 बजे 2 शिफ्टों में होती थी.

एक दिन उसे रात को 10 बजे गुफा में बुलाया गया, जहां बाबा ने उस के साथ जबरन रेप किया. वह रोती हुई गुफा से निकली और हौस्टल चली गई. वहां पर उस ने किसी को कुछ नहीं बताया. मगर उस दिन उस की बहन ने बताया कि बाबा उस के साथ भी रेप कर चुका है.

रेप होने के एक साल बाद उसे डेरे के मैनेजर ने बुलाया और कहा कि बाबा ने उसे गुफा में बुलाया है. मगर पहले हुई घटना के कारण उस ने गुफा में जाने से मना कर दिया.

इस के बाद मैनेजर ने उसे ऐसा करने पर भूखा रखने की धमकी दी. मजबूर हो कर उसे गुफा में दोबारा जाना पड़ा और बाबा ने उस के साथ फिर रेप किया.

दोनों बहनों ने हौस्टल की दूसरी साध्वियों को भी बाबा की गुफा से कई बार रोते हुए निकलते देखा था. एक बहन ने तो अपने साथ हुई घटना के तुरंत बाद डेरा छोड़ दिया. दूसरी साध्वी बहन भी डेरा छोड़ना चाहती थी, मगर उस के भाई की बेटियां डेरे में बीए की पढ़ाई कर रही थीं. इस कारण उसे वहां रुकने के लिए मजबूर होना पड़ा.

फिर अप्रैल, 2001 में उस ने अपने भाई और उस की दोनों बेटियों समेत डेरा छोड़ दिया.

दोनों बहनों के डेरा छोड़ने के बाद ही प्रधानमंत्री कार्यालय को गुमनाम चिट्ठी

आस्था का बाजार सजा कर रासलीलाएं करने वाला बाबा

डेरा सच्चा सौदा का संत गुरमीत राम रहीम अकेला ऐसा संत नहीं है, जिस ने संत का चोला पहन कर आस्था का बाजार सजाया और फिर भोलेभाले लोगों से उन की दौलत ही नहीं लूटी, बल्कि उन के घरों की मासूम अबलाओं की अस्मत से भी खिलवाड़ करता रहा. ऐसे तमाम संत और बाबाओं ने आस्था की आड़ में अपनेअपने ढंग से रासलीलाओं का खेल खेला.

लेकिन इस के कारण समाज की आस्था पर जो चोट पहुंची है, उस का आंकलन करना आसान नहीं है. आस्था की आड़ में रासलीलाएं रचाने वाले संतों और बाबाओं की लंबी फेहरिस्त है.

ऋषिकेश का एक विख्यात संत स्वामी रामेश्वरानंद गिरि जो 18 देशों में अध्यात्म के प्रवचन देता था, देशविदेश में जिस के लाखों भक्त थे, लोग उस के चरणों में दौलत के श्रद्धा सुमन चढ़ाते थे. ऋषिकेश में जिस का पांचसितारा सुविधाओं से युक्त 'तीर्थकर शेषधारा आश्रम' नाम से एक आश्रम भी था.

लेकिन उस ने संन्यासी होते हुए भी अपनी हवस, भोगविलास और सांसारिक सुखों की चाहत में अपने एक भक्त परिवार की जवान लड़की सविता को अपने मोहजाल में फंसा लिया. कई सालों तक उस युवती को मोहपाश में बांध कर स्वामी रामेश्वरानंद हवस का खेल खेलता रहा.

बाद में लड़की की शादी दिल्ली के पटेल नगर में रहने वाले एक गिरौत्रा परिवार के युवक मनोज से हो गई. स्वामी रामेश्वरानंद गिरि की अय्याशियों का खेल रुक गया. स्वामी ने अपनी भक्त प्रेयसी को पाने के लिए उस के सहयोग से एक साजिश रची और भाड़े के हत्यारों से अपनी प्रेयसी के पति को मौत की नींद सुलवा दिया.

दिसंबर, 1994 को हुई इस वारदात की साजिश इतनी अनोखी थी कि साजिश का बुना हुआ तानाबाना खोलने के लिए दिल्ली पुलिस को कई महीने लग गए. 4 महीनों की

कड़ी मेहनत के बाद पुलिस ने स्वामी रामेश्वरानंद, उस की प्रेमिका सविता और 2 भाड़े के हत्यारों को गिरफ्तार कर खुलासा किया कि आस्था की आड़ में यह स्वामी भोग विलास का खेल खेलता था.

बाद में साल 2001 में तीसहजारी कोर्ट ने इन सभी आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई और दिल्ली हाईकोर्ट ने भी उन की सजा को बरकरार रखा. आस्था की आड़ में अय्याशी का देश में यह पहला मामला था जो मीडिया की सुर्खी बना था. इस के बाद देश में ऐसे मामलों की बाढ़ आ गई. ○

25 अगस्त, 2017 को सीबीआई कोर्ट द्वारा राम रहीम को उम्रकैद की सुनाए जाने के बाद पंचकूला और सिरसा में डेरा समर्थकों ने जम कर उत्पात मचाया

मिली थी. बहरहाल, साध्वी के बयान कोर्ट में दर्ज कराने के बाद सीबीआई ने बाबा के साथ एक आरोपी अवतार सिंह, डेरा मैनेजर इंद्रसेन और मैनेजर कृष्णलाल को आरोपी बना कर उन का चंडीगढ़ और दिल्ली में लाई डिटेक्टर टेस्ट कराया.

जहां झूठ पकड़ने वाली मशीन से खुलासा हुआ कि डेरा प्रमुख गुरमीत राम रहीम साध्वियों का यौन शोषण करता था.

दोनों साध्वियों ने सीबीआई और अदालत को अपनी जो आपबीती सुनाई, उस में कहा था कि बाबा हर रोज साध्वियों को गुफा में बुलाता था और रेप करता था. उस के शीश महल जिसे वह गुफा कहता था, वहां से साध्वियां हर रोज रोते हुए बाहर निकलती थीं.

गुफा के आसपास बने हौस्टलों में 200 से ज्यादा सुंदर साध्वियों को रखा गया था. बाबा की गुफा के आसपास रात के वक्त महिला साध्वियों को गार्ड के रूप में तैनात किया जाता था. साध्वियों से दुष्कर्म का यही वो केस था, जिस के बाद गुरमीत राम रहीम नायक से खलनायक और संत से अपराधी बन गया था.

प्रधानमंत्री कार्यालय में भेजे गए गुमनाम साध्वी के इस पत्र को पहले गृह मंत्रालय को सौंपा गया था. जहां से बाद में पत्र की जांच का जिम्मा सिरसा के सेशन जज को सौंपा गया. इसी दौरान हाईकोर्ट ने भी इस पर संज्ञान ले लिया था.

दिसंबर 2002 में राम रहीम के खिलाफ धारा 376, 506 और 509 आईपीसी के तहत केस दर्ज किया गया था. दिसंबर 2003 में इस केस की जांच सीबीआई को सौंपी दी गई. जांच अधिकारी सतीश डागर ने केस की जांच शुरू की और आखिर साल 2005-2006 में उस साध्वी को ढूंढ निकाला, जिस का यौन शोषण हुआ था.

जुलाई 2007 में सीबीआई ने केस की जांच पूरी कर अंबाला सीबीआई कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर दी. अंबाला से केस की सुनवाई पंचकूला शिफ्ट कर दी गई. चार्जशीट के मुताबिक, डेरे में 1999 और 2001 में कुछ और साध्वियों का भी यौन शोषण हुआ, लेकिन वे मिल नहीं सकीं.

अगस्त 2008 में साध्वियों से दुष्कर्म केस का ट्रायल शुरू हुआ और डेरा प्रमुख राम रहीम के खिलाफ आरोप तय कर दिए गए. साल 2011 से 2016 तक केस का ट्रायल चला और डेरा प्रमुख राम रहीम की ओर से बड़ेबड़े वकील लगातार जिरह करते नजर आए.

जुलाई 2016 तक चली केस की सुनवाई के दौरान कुल 52 गवाह पेश किए गए, इन में 15 प्रौसिक्यूशन और 37 डिफेंस के थे.

कामक्रीड़ा करने वाला स्वामी नित्यानंद

साल 2010 में दक्षिण भारत के एक बड़े संत स्वामी नित्यानंद पर भी आस्था की आड़ में अय्याशी करने का आरोप लगा था. नित्यानंद का वास्तविक नाम ए. राजशेखरन है.

वर्ष 2000 में उस ने कर्नाटक के बिदादी में नित्यानंद ध्यानपीठम की स्थापना की. फिर 2003 में उस ने अमेरिका के लास एंजिलिस में लाइफ बिलस फाउंडेशन की स्थापना की. नित्यानंद ध्यानपीठम में योग, मेडिटेशन और कई तरह के फिटनेस कोर्स चलते थे. इस की पीठ ने कई देशों में मंदिर, आश्रम और गुरुकुल भी बनवाए.

विवादित धर्मगुरु नित्यानंद साल 2010 में पहली बार विवादों में घिरा. जब दक्षिण भारत की सन टीवी ने नित्यानंद का एक अश्लील वीडियो जारी किया, जिस में वह दक्षिण भारत की एक अभिनेत्री के साथ काम क्रीड़ा करते हुए दिखा. हालांकि नित्यानंद ने आरोप लगाया था कि वीडियो से छेड़छाड़ की गई है.

लेकिन जांच के बाद पाया गया कि वीडियो से कोई छेड़छाड़ नहीं की गई थी और

वह वीडियो क्लिप असली था. साल 2012 में उस पर दुष्कर्म का आरोप लगा. 5 दिन तक फरार रहने के बाद नित्यानंद ने आत्मसमर्पण कर दिया था. हालांकि बाद में उसे कोर्ट से जमानत मिल गई थी.

जमानत मिलने के बाद स्वामी नित्यानंद फरार हो गया और बताते हैं कि उस ने कोरोना काल में दक्षिण अमेरिका के त्रिनिदाद में एक द्वीप खरीद कर उस का नाम कैलासा रखा और अपने भक्तों को वहां आने के लिए निमंत्रण भेजने शुरू किए. बहरहाल, दुष्कर्म के आरोप में फरार स्वामी नित्यानंद को अदालत भगोड़ा घोषित कर चुकी है. ○

ग्लोइंग स्किन के लिए
प्राकृतिक नुस्ख़ा
आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।
New
Dr. Juneja's
Roop Mantra ®
Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash
Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash
• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com
शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से निर्मित

संत आसाराम जिस ने आस्था को सब से बड़ी चोट पहुंचाई

शाहजहांपुर की एक युवती से बलात्कार के आरोप में जोधपुर की जिला अदालत में उम्रकैद की सजा काट रहा संत आसाराम बापू देश का पहला और सब से बड़ा संत था, जो स्वामी रामेश्वरानंद के बाद आस्था की आड़ में अय्याशी और व्यभिचार करने के आरोप में कानून के शिकंजे में फंसा.

17 अप्रैल, 1941 को बंटवारे से पहले के भारत के नवाबशाह जिले के बेराणी गांव, जो अब पाकिस्तान में है, वहां आसूमल सिरूमलानी का जन्म हुआ था. उस की मां का नाम महंगीबा एवं पिता का नाम थाऊमल सिरूमलानी था.

1947 में भारतपाक विभाजन के समय वह और उस के परिवार के सभी लोग भारत के गुजरात राज्य के अहमदाबाद में बस गए. धनवैभव सब कुछ छूट जाने के कारण परिवार आर्थिक संकट में फंस गया.

अहमदाबाद आने के बाद आजीविका के लिए थाऊमल ने शक्कर बेचने का धंधा शुरू किया. पिता के निधन के बाद, अपनी मां से ध्यान और आध्यात्मिकता की शिक्षा प्राप्त कर आसूमल ने घर छोड़ दिया और देश भ्रमण पर निकल गया. भ्रमण करतेकरते वह स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज के आश्रम नैनीताल पहुंच गए. नैनीताल में गुरु से दीक्षा लेने के बाद गुरु ने आसूमल को नया नाम दिया आसाराम.

इस के बाद आसाराम घूमघूम कर आध्यात्मिक प्रवचन के साथसाथ स्वयं भी गुरुदीक्षा देने लगा. उस के सत्संग में श्रद्धालु भारी संख्या में पहुंचने लगे. आसाराम बापू पहली बार अगस्त, 2013 में कानून के शिकंजे में फंसा, जब उस के ऊपर जोधपुर में उस के ही आश्रम में 16 साल की एक लड़की के साथ अप्राकृतिक दुराचार के आरोप लगे.

लड़की के पिता ने दिल्ली जा कर पुलिस में इस कांड की रिपोर्ट दर्ज कराई. बाद में लड़की का बयान दर्ज कर सारा मामला राजस्थान पुलिस को ट्रांसफर कर दिया.

आसाराम को पूछताछ के लिए 31 अगस्त 2013 तक का समय देते हुए सम्मन जारी किया गया. इस के बावजूद जब वह हाजिर नहीं हुआ तो दिल्ली पुलिस ने उस के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 342 (गलत तरीके से बंधक बनाना), 376 (बलात्कार), 506 (आपराधिक हथकंडे) के अंतर्गत मुकदमा दर्ज करने हेतु जोधपुर की अदालत में सारा मामला भेज दिया.

फिर भी आसाराम गिरफ्तारी से बचने के उपाय करता रहा. पहली सितंबर 2013 को राजस्थान पुलिस ने आसाराम को गिरफ्तार कर लिया . इस मामले में 25 अप्रैल, 2018 को आसाराम को दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई.

साबरमती नदी के किनारे एक झोपड़ी से शुरुआत करने से ले कर देश और दुनियाभर में 400 से अधिक आश्रम बनाने वाले आसाराम ने 4 दशक में 10,000 करोड़ रुपए का साम्राज्य खड़ा कर लिया था. आसाराम बापू को अब तक दुष्कर्म के 2 मामलों में अदालत से सजा मिल चुकी है. ○

और फिर वह दिन आ गया, जब राम रहीम की गरदन इस केस में पूरी तरह फंसी नजर आई और जून 2017 में कोर्ट ने डेरा प्रमुख के विदेश जाने पर रोक लगा दी.

17 अगस्त, 2017 को दोनों पक्षों की ओर से चल रही जिरह खत्म हो गई और फैसले के लिए 25 अगस्त की तारीख तय की गई. 25 अगस्त, 2017 को पंचकूला सीबीआई कोर्ट के जज जगदीप सिंह ने राम रहीम को उम्र कैद की सजा सुनाई.

राम रहीम के खिलाफ सजा दिए जाने के आदेश के बाद डेरा समर्थकों ने पंचकूला और सिरसा में जम कर उत्पात मचाया और हिंसा की, जिस में करीब 41 लोगों की मौत हुई. अदालत के फैसले के खिलाफ सिरसा व पंचकूला में हुई हिंसा के बाद गुरमीत राम रहीम के डेरा सच्चा सौदा पर पुलिस के छापे पड़े तो वहां से हथियारों का जखीरा बरामद हुआ.

हरियाणा पुलिस ने हिंसा फैलाने के आरोप में राम रहीम की गोद ली बेटी और उस की कथित प्रेयसी कहीं जाने वाली हनीप्रीत को भी चंडीगढ़ से गिरफ्तार कर लिया. हनीप्रीत हिंसा होने के बाद से ही फरार थी.

फ्रीज हुए डेरा के 90 बैंक एकाउंट

साध्वियों से बलात्कार मामले में गुरमीत राम रहीम का सजा होने व गिरफ्तारी के बाद से ही डेरा सच्चा सौदा के रहस्य लोक की कहानियां सार्वजनिक होने लगीं.

इधर, डेरा समर्थकों की हिंसा के बाद डेरा के 90 बैंक खाते फ्रीज कर दिए गए. गुरमीत राम रहीम के खिलाफ एन्फोर्समेंट डायरेक्टोरेट (ईडी) ने भी जांच शुरू कर दी. क्योंकि डेरा की 700 करोड़ की संपत्ति में मनी लांड्रिंग की आशंका नजर आ रही थी.

गुरमीत राम रहीम को रेप मामले में सजा होने के बाद पंचकूला और सिरसा के अलावा करीब 5 राज्यों में हिंसक प्रदर्शन हुए थे. इस मामले में दरजनों केस दर्ज हुए. चंडीगढ़ व पंचकूला में हिंसा फैलाने के मामले में डेरा प्रवक्ता दिलावर सिंह को भी देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया.

दिलावर सिंह एमएसजी ग्लोरियस इंटरनैशनल स्कूल सिरसा का एडमिनिस्ट्रेटर था. उस ने डेरामुखी के गनमैन ओमप्रकाश सिंह, डेरा समर्थक दान सिंह व चमकौर सिंह

के साथ मिल कर पंचकूला में आगजनी की घटनाओं को अंजाम दिया था. करीब 177 से अधिक मामले दर्ज किए गए और 1137 आरोपियों को अरेस्ट किया गया था.

बहरहाल, गुरमीत राम रहीम के पापों की कलई खुलनी शुरू हो चुकी थी और कानून ने सख्त रुख अपना लिया था. उस के खिलाफ मुंह न खोलने वाले लोग भी अब अदालत में सच बयां कर रहे थे.

एक तरफ राम रहीम साध्वियों से बलात्कार के मामले में जेल से बाहर आने के लिए एड़ीचोटी का जोर लगा रहा था कि 17 जनवरी, 2019 को पंचकूला की विशेष सीबीआई के जज जगदीप सिंह ने सिरसा के स्थानीय पत्रकार रामचंद्र छत्रपति हत्या के मामले में भी गुरमीत राम रहीम को उम्रकैद की सजा सुना दी.

इस मामले में डेरा प्रमुख के साथ 3 अन्य लोगों कुलदीप सिंह, निर्मल सिंह और कृष्ण लाल को भी दोषी ठहराया गया था. इन्हें भी उम्रकैद की सजा सुनाई गई.

दरअसल, सिरसा के स्थानीय पत्रकार रामचंद्र छत्रपति वकालत छोड़ कर 'पूरा सच' नाम से एक अखबार निकालते थे. रामचंद्र अपने अखबार के नाम की तरह ही पत्रकारिता के लिए जाने जाते थे. निर्भीक छवि के रामचंद्र छत्रपति की हत्या का मामला कहीं न कहीं साध्वियों के दुष्कर्म से ही जुड़ा था.

2002 में रामचंद्र छत्रपति के हाथ वह चिट्ठी लग गई, जो गुमनाम साध्वी ने लिखी थी. रामचंद्र ने उस चिट्ठी को अपने अखबार में छाप दिया. इसी अखबार में छपी खबर के बाद लोगों को डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख राम रहीम द्वारा डेरे में साध्वियों के साथ दुष्कर्म करने की जानकारी मिली थी. इस खबर के छपने के बाद छत्रपति को जान से मारने की धमकियां मिलने लगीं.

आखिरकार 19 अक्तूबर, 2002 की रात छत्रपति को घर के बाहर गोली मारी गई. इस के बाद 21 अक्तूबर को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में उन की मौत हो गई.

हालांकि इस दौरान छत्रपति होश में आए लेकिन राजनीतिक दबाव के कारण छत्रपति का बयान तक दर्ज नहीं किया गया.

स्वामी भीमानंद का कामक्रीड़ा आश्रम

दिल्ली का एक बाबा खुद को इच्छाधारी संत बताता था. इच्छाधारी संत के नाम से मशहूर स्वामी भीमानंद चित्रकूट के चमरौहा गांव का रहने वाला था, जिस का असली नाम शिवमूरत द्विवेदी है. स्वामी भीमानंद खुद को साईंबाबा का अवतार बताता था.

वह 1988 में दिल्ली के नेहरू प्लेस स्थित एक पांच सितारा होटल में गार्ड की नौकरी करता था. 12 साल में ही स्वामी भीमानंद महाराज ने करोड़ों की संपत्ति बना ली थी. इस स्वामी की संपत्ति प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 2015 में जब्त कर ली थी.

इच्छाधारी संत के नाम से मशहूर स्वामी भीमानंद उर्फ रंजन उर्फ शिवा द्विवेदी सांप के साथ घूमने और नागिन डांस को ले कर हमेशा चर्चा में रहता था.

भीमानंद का असल चेहरा तब सामने आया, जब 26 फरवरी, 2010 को दक्षिण दिल्ली में दिल्ली पुलिस की टीम ने जाल बिछा कर 2 कारों को रोका.

इस के साथ ही एक हाईप्रोफाइल रैकेट का भंडाफोड़ हुआ. 8 लोग पकड़े गए. इन में 6 लड़कियां भी थीं. 2 लड़कियां एयरहोस्टेस थीं. जिस में से एक यूरोपियन एयरलाइंस में तो दूसरी भारतीय एयरलाइंस में काम करती थी.

पुलिस ने जिन 2 दलालों को पकड़ा उन्हीं में से एक था शिवमूरत द्विवेदी. शिवमूरत का रिकौर्ड खंगालना शुरू किया तो पुलिस भी यह जान कर चौंक गई कि वह कोई और नहीं बल्कि बदरपुर में साधु के तौर पर मशहूर इच्छाधारी संत भीमानंद था. भीमानंद की गिरफ्तारी के बाद दिल्ली में किसी को सहज यकीन नहीं हुआ कि एक गेरुआ वस्त्र धारण करने वाला और खुद को साईंबाबा का अवतार बताने वाला शैतान निकलेगा.

उस के सैक्स रैकेट में करीब 600 हाई प्रोफाइल लड़कियां शामिल थीं. इन में कालेज गर्ल, मौडल, एयरहोस्टेस, एग्जीक्यूटिव हर तरह के पेशे से जुड़ी लड़कियां थीं. उस के ठिकानों से बरामद 6 लाल डायरियों में देश के 100 हाईप्रोफाइल लोगों के नाम दर्ज थे. इन में कई सांसद, नेता, पुलिस वाले, बिजनैसमैन और बड़ी हैसियत वाले सफेदपोश लोग थे. इच्छाधारी की गिरफ्तारी दिल्ली के लोगों की आस्था पर सब से बड़ा आघात थी. ○

दरअसल, छत्रपति अपने अखबार में डेरा सच्चा सौदा की अच्छी और बुरी खबरों को छापते थे, जिस कारण उन्हें जान से मारने की धमकियां मिलती रहती थीं. यह बात सिरसा के सभी पत्रकार जानते थे.

मृतक पत्रकार के बेटे अंशुल ने हाईकोर्ट में दायर की थी याचिका

जनवरी, 2003 में मृतक के बेटे अंशुल ने हाईकोर्ट में एक याचिका दायर कर मामले को सीबीआई को सौंपने की मांग की. इस याचिका में डेरा प्रमुख गुरमीत राम रहीम के भी इस में संलिप्त होने के आरोप लगाए. सोशल मीडिया में रामचंद्र छत्रपति को इंसाफ दिए जाने की मांग जोर पकड़ने लगी.

इसी दौरान डेरामुखी पर डेरे के एक पूर्व मैनेजर रंजीत सिंह की हत्या के भी आरोप लगने लगे. इस मामले में भी पीड़ितों की तरफ से अदालत का दरवाजा खटखटाया गया.

हाईकोर्ट ने पत्रकार छत्रपति और डेरा मैनेजर रंजीत सिंह की हत्या के मामलों को जोड़ते हुए 10 नवंबर, 2003 को सीबीआई को एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया.

सीबीआई ने दिसंबर, 2003 में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी. मामला दर्ज होते ही डेरा की तरफ से सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर कर जांच पर रोक लगाने की

अपील की गई, जिस के बाद उस याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की और मामले की जांच पर उस वक्त रोक लगा दी गई.

लेकिन नवंबर, 2004 में दूसरे पक्ष की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने डेरा की याचिका को खारिज कर दिया और सीबीआई जांच को जारी रखने के आदेश दिए.

सीबीआई ने दोबारा दोनों मामलों की जांच शुरू की और डेरा प्रमुख समेत कइयों को अभियुक्त बनाया. इसी मामले में सीबीआई कोर्ट ने गुरमीत राम रहीम समेत 4 आरोपियों को उम्रकैद की सजा सुनाई.

साध्वी रेप केस मामले और पत्रकार छत्रपति हत्याकांड की सजा काट रहे डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम के जेल जाने के बाद से उस की खास राजदार हनीप्रीत सब से ज्यादा सुर्खियों में रही है. उस पर भी पंचकूला में दंगा भड़काने, राजद्रोह और राम रहीम को पुलिस कस्टडी से भगाने की साजिश रचने के आरोप लगे और बाद में उसे गिरफ्तार किया गया.

हालांकि कुछ महीने बाद हनीप्रीत को अदालत से जमानत मिल गई और उस के बाद हनीप्रीत ने डेरा सच्चा सौदा की कमान अपने हाथों में ले ली. लेकिन सवाल उठता है कि आखिर हनीप्रीत कौन है, जो गुरमीत राम रहीम के बाद डेरा सच्चा सौदा की सब से ताकतवर बनी है.

आखिर इतना बड़ा परिवार होते हुए राम रहीम क्यों हर वक्त हनीप्रीत को याद करता रहा और हनीप्रीत से उस का क्या खास रिश्ता है.

हनीप्रीत इंसां का जन्म 21 जुलाई, 1980 को हरियाणा के फतेहाबाद में हुआ था. उस का स्कूली नाम प्रियंका तनेजा है. प्रियंका तनेजा का पूरा परिवार करीब ढाई दशक से डेरे का अनुयायी था.

हनीप्रीत के दादा ने पाकिस्तान से आ कर हरियाणा के सिरसा में कपड़े की दुकान खोली थी. जहां गुरमीत राम रहीम के गुरु शाह मस्तानाजी आते रहते थे. तभी से उन की फैमिली डेरे की अनुयायी हो गई.

कुछ ही दिनों में हनीप्रीत के दादा डेरे के प्रशासक बन गए और वहां खजाने से संबंधित काम देखने लगे थे. 1996 में प्रियंका के दसवीं

अध्यात्म यूनिवर्सिटी के नाम पर अय्याशी का घिनौना सच

जिन दिनों देश में धर्म और अध्यात्म के नाम पर डेरा सच्चा सौदा प्रमुख बाबा राम रहीम के पाखंड और बड़ी संख्या में महिलाओं के यौनशोषण की गूंज सुनी जा रही थी. उसी वक्त देश की राजधानी दिल्ली से एक ऐसे बाबा के रंगीन किस्से सामने आ रहे थे, जो महिलाओं को अध्यात्म दीक्षा के नाम पर उन का यौन शोषण करता था.

वीरेंद्र देव दीक्षित नाम के इस बाबा के आश्रमों से 190 नाबालिग व बालिग लड़कियों और महिलाओं को मुक्त कराया गया, जिन्हें अध्यात्म के नाम पर यौनशोषण का शिकार बनाया गया था.

दिल्ली के रोहिणी, नांगलोई, द्वारका जैसे इलाकों में बड़े भूभाग पर आध्यात्मिक विश्वविद्यालय के नाम से बने इन आश्रमों के अलावा देश के करीब 9 राज्यों में इस रंगीनमिजाज बाबा के 80 आश्रम थे.

वीरेंद्र देव दीक्षित उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद जिले के गांव चौधरियान का रहने वाला है. 1975 में वीरेंद्र देव का अपने पिता से किसी बात को ले कर विवाद हो गया था.

इस से नाराज हो कर वह घर से निकल गया. इस के बाद उस ने गुजरात यूनिवर्सिटी में संस्कृत में शोध शुरू किया. बाद में वह राजस्थान के माउंट आबू में प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से जुड़ गया, लेकिन जल्दी ही उसे वहां से भगा दिया गया.

1984 में पिता की मृत्यु के बाद वीरेंद्र देव घर लौटा तो अपने पैतृक मकान में कुछ स्थानीय लोगों के सहयोग से आध्यात्मिक कार्यक्रम शुरू किया. कुछ समय बाद ही उस ने आश्रम का निर्माण कराया.

यह आश्रम पहली बार 1998 में तब चर्चा में आया जब 3 अलगअलग राज्यों के लोगों की शिकायतों पर पुलिस ने 3 लड़कियों को बरामद कर उसे व उस के कई सेवादारों को गिरफ्तार किया. इस के बाद उस ने खुद को बाबा के तौर पर स्थापित किया और देशभर में 80 आश्रम खोले.

12 नवंबर को यह मामला तब सामने आया, जब राजस्थान के झुंझनूं व दिल्ली के 2 परिवारों ने रोहिणी के आध्यात्मिक विश्वविद्यालय पहुंच कर हंगामा करते हुए आरोप लगाया कि उन की बेटी वहां जबरन कैद है और उन के साथ सैक्सुअल हिंसा होती है.

मामला बढ़ा तो फाउंडेशन फौर सोशल एम्पावरमेंट नाम के एनजीओ ने हाईकोर्ट में याचिका दायर कर इस आश्रम के क्रियाकलापों की जांच की मांग की. हाईकोर्ट के आदेश पर आश्रम की छानबीन के लिए

बनी कमेटी में दिल्ली पुलिस के अलावा दिल्ली महिला आयोग और शिकायकर्ता पक्ष तथा कुछ अन्य एजेंसियों के सदस्यों को भी शामिल किया गया.

21 दिसंबर से छापेमारी शुरू हुई तो आध्यात्मिक विश्वविद्यालय की सच्चाई सामने आई. दिल्ली के 8 आश्रमों से शुरू हुई जांच दूसरे राज्यों तक पहुंच गई. हर जगह एक ही शिकायत मिली कि आश्रमों में लड़कियों का यौन शोषण होता था. बाबा खुद उन्हें अपनी हवस का शिकार बनाता था.

हाईकोर्ट ने अपराध का दायरा बढ़ता देख इस मामले की छानबीन और वीरेंद्र देव को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश करने का जिम्मा सीबीआई को सौंप दिया. ○

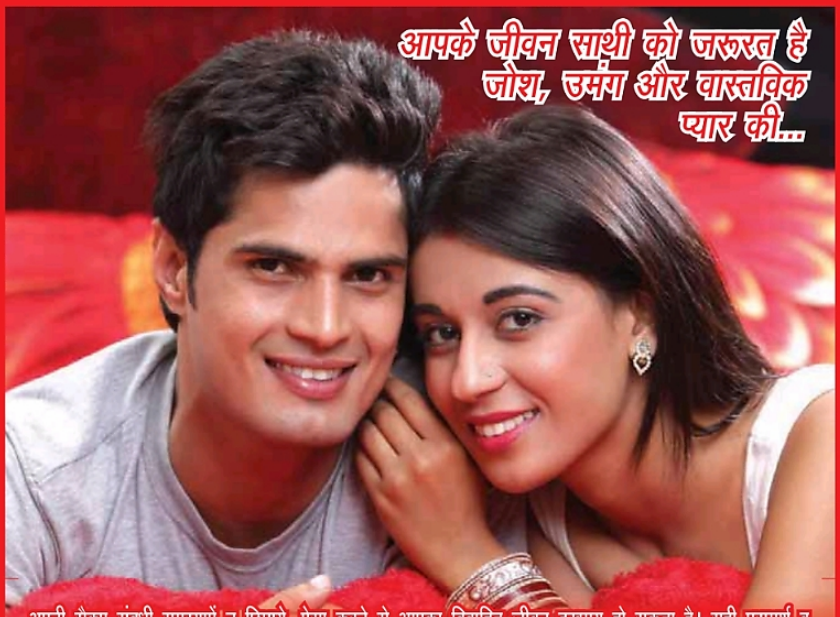

अपनी सैक्स संबधी समस्याऐं न छिपाये, ऐसा करने से आपका विवाहित जीवन दुखमय हो सकता है। सही परामर्श व सफल ईलाज से समस्या का समाधान किया जा सकता है। देश-विदेश में प्रसिद्ध सबलोक क्लिनिक के पास प्राकृतिक जड़ी-बूटियों व कीमती भस्मों से युक्त आयुर्वेदिक नुस्खे हैं। जिनके सेवन से आप अपनी सैक्स लाइफ को और भी रंगीन बनाकर विवाहित जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। संतान के इच्छुक दम्पती स्वयं मिले। ज्ञानवर्धक पुस्तक नवजीवन मुफ्त मंगवाये। विदेशों में हवाई डाक द्वारा इलाज भेजने का विशेष प्रबन्ध है।

एशिया में अपनी तरह का एकमात्र सर्वाधिक विश्वसनीय आधुनिक क्लिनिक

सबलोक क्लिनिक

दरियागंज (टाटा मोटर्स के ऊपर)

नेताजी सुभाष मार्ग (निकट दिल्ली गेट) नई दिल्ली-110002

9891300008 सुबह 12 से शाम 4, रविवार : अवकाश (रजिस्ट्रेशन 500/-)

www.sablokclinic.com / email : sablokclinicindia@gmail.com

सबलोक क्लिनिक, दरियागंज की इंडिया में कहीं कोई ब्रांच नहीं है।

पास करते ही दादा ने उस का एडमिशन डेरे के ही स्कूल में करवा दिया.

हनीप्रीत के पिता रामानंद तनेजा पहले पुरानी दिल्ली एमआरएफ टायर्स का 'सर्च टायर्स' नाम से शोरूम चलाते थे. लेकिन बाद में उन्होंने डेरे में ही एक बड़ा सीड प्लांट डाल लिया. बाद में गुरमीत राम रहीम ने उस के पिता रामानंद तनेजा को डेरा की पर्चेजिंग कमेटी का हेड बना दिया, जो डेरे के सारे सामान की खरीदफरोख्त का काम देखने लगे.

प्रियंका के भाई साहिल तनेजा को भी गुरमीत का आशीर्वाद मिल गया और वह भी डेरे में बड़े स्तर पर कारोबार करने लगा. बाद में प्रियंका की छोटी बहन नीशू तनेजा की गुरुग्राम में जो शादी हुई, उस में भी बाबा का खास योगदान रहा.

हनीप्रीत के चाचा और मामा समेत दूसरे कई रिश्तेदार सिरसा के मुख्य मार्गों पर टायरों का कारोबार करते हैं. आज भी डेरे में कई बड़े प्रोजेक्ट हनीप्रीत के नाम से चल रहे हैं.

बताते हैं कि गुरमीत राम रहीम 1996 में डेरे के स्कूल में जब छात्राओं को आशीर्वाद देने गया था तो वहां उस की नजर पहली बार प्रियंका तनेजा पर पड़ी थी. बस उसी के बाद बाबा ने कुछ ऐसा चक्कर चलाया कि वह प्रियंका को अपना खास आशीर्वाद देने के लिए डेरे में अपने निजी कक्ष में बुलाने लगा.

बाबा की खासमखास बन गई हनीप्रीत

कुछ ही दिनों में प्रियंका पूरी तरह बाबा के वश में हो गई. कुछ समय बाद बाबा ने उस का नया नामकरण किया और उस का नाम हनीप्रीत इंसां रख दिया. क्योंकि डेरे में सभी राजदारों व साधुसाध्वियों को 'इंसां' सरनेम दिया जाता है.

उम्र का काफी फासला होने के बावजूद धीरेधीरे गुरमीत राम रहीम और हनीप्रीत इंसा के बीच नजदीकियां बढ़ने लगीं.

जल्द ही हनीप्रीत बाबा की खास बन गई और उस की पहुंच बेरोकटोक बाबा के बैडरूम तक होने लगी. हनीप्रीत ने 12वीं तक की पढ़ाई डेरे के स्कूल में ही की. बाबा ने उस का डेरे से बाहर आनाजाना बंद करा दिया. डेरे में उस के लिए एक खास आवास की व्यवस्था कर दी गई और वहीं पर उस के टीचर उसे पढ़ाने के लिए आते. इतना ही नहीं, बाबा ने हनीप्रीत के लिए एक विशेष जिम बनवा दिया. हनीप्रीत के नाम पर डेरे के अंदर एक बुटीक भी खोल दिया गया.

बताते हैं कि धीरेधीरे हनीप्रीत और राम रहीम की नजदीकियां कुछ इस तरह बढ़ गईं कि हनीप्रीत बाबा के हर राज की राजदार हो गई. हनीप्रीत अब गुरमीत की सब से करीबी बन गई थी. गुरमीत उस पर इतना मेहरबान था

हनीप्रीत और राम रहीम: बाबा की 'बेबी' या 'हनी'

कि उस ने हनीप्रीत के नाम पर डेरे में कई बड़े कारोबार शुरू किए.

बताते हैं कि डेरे के अंदर बाबा और हनीप्रीत के रिश्ते को ले कर हमेशा लोगों के मन में सवाल रहते थे. लेकिन बाबा के डर से कोई अपनी जबान नहीं खोलता था, क्योंकि बाबा राम रहीम उसे लोगों के सामने अपनी बेटी, अपनी 'परी' कहता था. लेकिन हकीकत यह थी कि वो बाबा की 'परी' नहीं बल्कि बाबा की 'हनी' थी.

बताते हैं कि जब बाबा को लगा कि एक अविवाहित लड़की इस तरह उस की सेवा में रहेगी तो इस से उस की छवि और प्रतिष्ठा पर सवाल खड़े हो सकते हैं. इसलिए उस ने 14 फरवरी, 1999 वैलेनटाइंस डे के दिन हनीप्रीत की शादी विश्वास गुप्ता से करा दी. हनीप्रीत के परिवार की तरह करनाल के रहने वाले विश्वास गुप्ता का परिवार भी बाबा का अनुयायी था. बाबा ने ही शादी की सारी व्यवस्थाएं कराई थीं. राम रहीम ने हनीप्रीत की शादी तो गुप्ता से करा तो दी, लेकिन दोनों को आदेश दिया कि वे बच्चा पैदा न करें.

हनीप्रीत के पूर्व पति विश्वास गुप्ता ने बाबा की गिरफ्तारी के बाद मीडिया को बताया था कि शादी के 2 या 3 दिन बाद बाबा राम रहीम ने उसे हनीप्रीत के साथ डेरे में मुलाकात के लिए बुलाया था. तब बाबा ने कहा था कि तुम हमारे साथ बाहर यात्राओं पर जाती हो, अगर बच्चा हुआ तो उस के स्कूल जाने और लालनपालन के चलते हमारी सेवा नहीं कर पाओगी, इसलिए बच्चा पैदा न करो.

बाबा ने कहा था कि हम तुम्हें बेटा मानते हैं, उसी तरह हनीप्रीत भी हमारी बेटी है. हम उसे भी उतना ही प्यार देंगे.

विश्वास गुप्ता ने आरोप लगाया था कि बाबा हर सप्ताह हनीप्रीत और उसे डेरे में बुलाने लगा. वह गुफा के अंदर बने बैडरूम में हनीप्रीत को बुलाता था और उसे लिविंग रूम में ही बैठने को कहता था.

पूछने पर बाबा कहता था कि बेटी अकेले में ससुराल के हर सुखदुख बता सके, इसलिए

फलाहारी बाबा को मिला करनी का फल

बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी कौशलेंद्र प्रपन्नाचारी फलाहारी महाराज की अव्याशियों ने भी उसे सलाखों के पीछे पहुंचा दिया. मामला 2017 का है. छत्तीसगढ़ की एक 21 साल की लड़की, जो बाबा के एक शिष्य की बेटी थी, ने फलाहारी बाबा पर आरोप लगाया कि बाबा ने उसे अपनी हवस का शिकार बनाया था.

लड़की के परिवार के बाबा से करीब 25 साल पुराने पारिवारिक संबध थे. लड़की ने कुछ दिन पहले वकालत की पढ़ाई के बाद इंटर्नशिप पूरी की थी.

इस के लिए उसे 5 हजार रुपए मिले. वह पैसे मिलने को ले कर काफी खुश थी और 7 अगस्त, 2017 को बाबा के अलवर आश्रम पर पहुंची थी.

यहां शाम को 7 बजे बाबा ने उसे मंदिर के बेसमेंट में बने कमरे में ठहराया. बाबा ने यहां मौजूद लोगों को आरती में शामिल होने के लिए भेज दिया. फिर उस ने गेट बंद कर उस से अकेले में हालचाल पूछा हूं. विश्वास गुप्ता ने आरोप लगाए थे कि राम रहीम और हनीप्रीत की सभी मुलाकातें हर बार एक से डेढ़ घंटे तक होती थीं. इस दौरान बाबा के चेले और दूसरे सेवादार विश्वास गुप्ता को बातों और कुछ कामों में उलझाए रखते थे. बाद में बाबा ने विश्वास गुप्ता को सप्ताह में 2 दिन पत्नी के साथ गुफा में रहने का आदेश दिया.

बताते हैं कि उसी दौरान एक रात जब विश्वास गुप्ता डेरे में बाबा की गुफा के लिविंग रूम में सो रहा था तो उस ने रात के वक्त बाबा के बैडरूम में अपनी पत्नी हनीप्रीत व बाबा को कामक्रीड़ा करते देखा. बस इसी के बाद से बाबा और हनीप्रीत से उस का मोहभंग हो गया.

बाद में हनीप्रीत और विश्वास गुप्ता के संबध बिगड़ने लगे तथा दोनों में अकसर तकरार होने लगी.

विश्वास गुप्ता और हनीप्रीत का रिश्ता केवल 11 साल चला. बाबा राम रहीम ने साल 2009 में हनीप्रीत को बेटी के रूप में गोद ले लिया. जिस के बाद हनीप्रीत बाबा के साथ डेरे की गुफा में ही रहने लगी. हनीप्रीत को गोद लेने के बाद गुप्ता से हनी के मतभेद और गहरे हो गए.

गुप्ता ने जब हनीप्रीत पर घर वापस चलने का दबाव डाला तो उस के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज करवा दिया गया, जिस में उसे जेल की हवा खानी पड़ी. बाद में जेल से रिहा होने पर साल 2011 में विश्वास गुप्ता ने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में मुकदमा दायर कर राम रहीम के कब्जे से अपनी पत्नी यानी हनीप्रीत को मुक्त कराने की मांग की थी. अदालत में दी गई याचिका में विश्वास गुप्ता ने राम रहीम पर हनीप्रीत के साथ अवैध संबंध होने का भी आरोप लगाया था.

डेरे के सारे फैसले लेने लगी हनीप्रीत

बताते हैं कि बाद में डेरे के कुछ प्रभावशाली लोगों के दबाव के कारण विश्वास गुप्ता के परिवार वालों ने हनीप्रीत से दिया और लड़की से अश्लील बातें करते हुए छेड़छाड़ करने लगा. इस के बाद उस के साथ रेप किया. घटना के बाद लड़की दिल्ली में रह रहे भाई के पास पहुंची और उसे घटना की जानकारी दी. इस के बाद दोनों भाईबहन बिलासपुर पहुंचे और पेरेंट्स को बाबा की घिनौनी करतूत के बारे बताया.

लड़की की शिकायत पर बाबा के खिलाफ बिलासपुर महिला थाने में रेप का मामला दर्ज किया गया. बाद में अलवर पुलिस ने बाबा को गिरफ्तार कर लिया. ○

उस का तलाक करवा दिया. लेकिन इस दौरान गुप्ता परिवार को बाबा के ऊंचे रसूख के कारण कई तरह की प्रताड़नाओं का शिकार होना पड़ा.

विश्वास गुप्ता से तलाक के बाद हनीप्रीत पूरी तरह बाबा के लिए समर्पित हो गई.

हनीप्रीत डेरा के हर महत्त्वपूर्ण फैसले लेने लगी. बाबा राम रहीम के साथ वह साए की तरह चौबीसों घंटे रहने लगी. बाबा हर फैसला हनीप्रीत से सलाह ले कर ही करता था.

इतना ही नहीं, बाबा ने हनीप्रीत की फिल्मों में काम करने की ख्वाहिश को देखते हुए 'एमएसजी' नाम से एक फिल्म कंपनी बनाई जिस के तहत बनी फिल्म 'एमएसजी', 'जट्टू इंजीनियर', 'द वारियर लायन हार्ट' समेत दूसरी और भी फिल्मों का निर्देशन हनीप्रीत ने ही किया. एमएसजी नाम की फिल्म में तो बाबा ने खुद हीरो के रूप में काम भी किया.

बाबा की बेबी हनीप्रीत इतनी ताकतवर हो चुकी थी कि उसी के हाथ में डेरे की सभी चाबियां रहती थीं. पैसे से ले कर हर वो फैसला जो डेरे से संबंधित होता था, वह हनीप्रीत ही करती थी.

हनीप्रीत भले ही दिखावे के लिए बाबा की बेबी रही हो, लेकिन लोग अब खुली जुबान से कहते हैं कि वह बाबा की हनी थी. शायद यही वजह थी कि गुरमीत राम रहीम की अपनी बीवी और बेटेबहू से दूरियां रहती थीं.

राम रहीम को अपने तौरतरीकों से चलाने वाली हनीप्रीत जेल जाने तक उस के साथ नजर आई थी और बाद में उसी ने डेरे का प्रबंध अपने हाथों में लिया.

गुरमीत राम रहीम की गिरफ्तारी के बाद 600 करोड़ रुपए के टर्नओवर वाले उस के एमएसजी प्रोडक्ट्स की कमान भी बाद में हनीप्रीत के हाथों में आ गई. एमएसजी के सिरसा में 5 बड़े शोरूम थे, जिन में करीब 150 से ज्यादा प्रोडक्ट्स बेचे जाते थे.

हालांकि बाबा की गिरफ्तारी के बाद एमएसजी का यह कारोबार आर्थिक संकट का शिकार हो कर बंद हो गया, जिस से इस में निवेश करने वाले लगभग 10 हजार लोगों की रकम भी डूब गई.

साध्वियों के साथ रामचंद्र छत्रपति के

परिवार को इंसाफ मिल चुका था, लेकिन राम रहीम के दामन पर लगे डेरा प्रेमी रणजीत सिंह की हत्या के दागों का इंसाफ होना अभी बाकी था.

18 अक्तूबर, 2021 को रणजीत सिंह हत्याकांड में पंचकूला की विशेष सीबीआई अदालत के जज सुशील कुमार ने राम रहीम समेत 5 लोगों को दोषी ठहरा कर उम्रकैद की सजा सुनाई. 19 साल तक अदालत में चले इस मामले की 250 पेशी हुई और 61 गवाही के बाद अदालत ने 5 आरोपियों को दोषी माना.

रणजीत सिंह एक समय राम रहीम के डेरे का मैनेजर और उस का भक्त हुआ करता था, लेकिन 10 जुलाई, 2002 को अचानक रणजीत सिंह की गोली मार कर हत्या कर दी गई थी. हत्या का रहस्य बहुत गहरा था. हत्या के आरोप में राम रहीम के साथ उस का सहयोगी कृष्ण लाल भी फंसा था.

रणजीत सिंह हत्याकांड में 3 गवाह महत्त्वपूर्ण थे. इन में 2 चश्मदीद गवाह सुखदेव सिंह और जोगिंद्र सिंह थे. इन का कहना था कि उन्होंने आरोपियों को रंजीत सिंह पर गोली चलाते हुए देखा था.

तीसरा गवाह गुरमीत का ड्राइवर खट्टा सिंह था, जिस के सामने रंजीत को मारने की साजिश रची गई थी. हालांकि बाद में खट्टा सिंह अदालत के सामने बयान से मुकर गया था. कई साल बाद खट्टा सिंह फिर से कोर्ट में पेश हो गया और गवाही दी.

रणजीत का साला परमजीत सिंह भी इस मामले में गवाह था, जिस ने सीबीआई के स्पैशल मजिस्ट्रैट के सामने बयान दर्ज कराए थे. परमजीत ने अदालत को बताया था कि रणजीत की बहन भी जुलाई, 1999 में साध्वी बनी थी.

परमजीत ने कोर्ट के सामने डेरे से जुड़ी घटनाओं की कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए बताया कि रणजीत सिंह की साध्वी बहन डेरा प्रमुख की गुफा के बाहर पहरेदारी का काम करती थी. उसी ने अपने भाई को डेरा प्रमुख की गुफा में साध्वियों के साथ होने वाले दुष्कर्म की बात बताई थी.

जिस के बाद रणजीत सिंह ने डेरा छोड़ दिया और अपने गांव कुरुक्षेत्र चला गया. डेरा प्रमुख को शक था कि साध्वियों को डेरे से भगाने और उन के खिलाफ प्रधानमंत्री और सुप्रीम कोर्ट में चिट्ठी लिखवा कर उसे बदनाम करने का काम रणजीत सिंह ने अपनी साध्वी बहन के जरिए किया है, इसीलिए रणजीत सिंह की हत्या करा दी गई.

राम रहीम से आशीर्वाद लेती हनीप्रीत और उस का पति विश्वास गुप्ता

चूंकि डेरे में 20 साल तक सेवादार रहे रणजीत सिंह की 2002 में गुमनाम साध्वी का पत्र सामने आने के बाद ही हत्या हुई थी. इसीलिए परिस्थितिजन्य साक्ष्यों की कड़ियां जोड़ते हुए अदालत ने बाबा को उस की हत्या का दोषी माना.

वैसे साध्वियों से दुष्कर्म, पत्रकार रामचंद्र छत्रपति और डेरे के मैनेजर रणजीत सिंह की हत्या के अलावा भी डेरामुखी राम रहीम के खिलाफ कई संगीन आरोप हैं.

2010 में डेरा के ही एक पूर्व साधु रामकुमार बिश्नोई ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर डेराप्रमुख पर डेरे के पूर्व मैनेजर फकीर चंद की हत्या कराने का आरोप लगाया था.

> बाबा की बेबी हनीप्रीत इतनी ताकतवर हो चुकी थी कि उसी के हाथ में डेरे की सभी चाबियां रहती थीं. पैसे से ले कर हर वो फैसला जो डेरे से संबंधित होता था, वह हनीप्रीत ही करती थी. हनीप्रीत भले ही दिखावे के लिए बाबा की बेबी रही हो, लेकिन लोग अब खुली जुबान से कहते हैं कि वह बाबा की हनी थी.

400 साधुओं को बनाया नपुंसक

फकीरचंद की गुमशुदगी की सीबीआई जांच की मांग पर अदालत ने सीबीआई को जांच के आदेश तो दिए लेकिन जांच एजेंसी मामले में सबूत नहीं जुटा पाई और क्लोजर रिपोर्ट फाइल कर दी. हालांकि बिश्नोई ने क्लोजर रिपोर्ट को उच्च न्यायालय में चुनौती दे रखी है.

इस के अलावा फतेहाबाद जिले के कस्बा टोहाना के रहने वाले डेरे के एक पूर्व साधु हंसराज चौहान ने जुलाई 2012 में उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर राम रहीम पर डेरा के 400 साधुओं को नपुंसक बनाए जाने का गंभीर आरोप लगाया था.

अदालत के सामने उन्होंने 166 साधुओं का नाम सहित विवरण प्रस्तुत करते हुए गुरमीत राम रहीम की करतूतों की पोल खोली थी. अदालत ने इस शिकायत की जांच का काम भी सीबीआई को सौंपा, जिस के बाद ये मामला भी अब अदालत में विचाराधीन है.

साधु हंसराज ने बताया कि उस के मातापिता डेरे के अनुयायी थे, इसलिए वह भी साल 1996 में 17 साल की उम्र में डेरे के

Divisa
No More
CONSTIPATION!
If you are suffering from Constipation, Gas or Acidity, then use 'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.
Raju Srivastav
20% EXTRA
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
CONSTIPATION
ACIDITY
GAS
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative Granules & Tablets
24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com
Available at all medical & general stores

सतलोक आश्रम का संत रामपाल
अय्याश तो नहीं पर संत भी नहीं

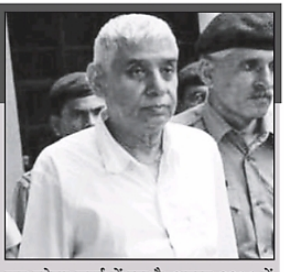

खुद को संत कबीर का अवतार और भगवान घोषित करने वाले रामपाल की कहानी किसी हिंदी फिल्म के किरदार से कम नहीं है. हरियाणा का ये नामचीन संत, जिस के लाखों अनुयायी हैं, उसे व्यभिचारी अथवा रंगीनमिजाज तो नहीं कहा जा सकता. लेकिन उस के आश्रम में जो कारनामे होते रहे वे किसी संत के भी नहीं हैं. इसलिए देशद्रोह के आरोप में इसे जेल की हवा खानी पड़ी.

हिसार के बरवाला में 2018 में हुए विवाद के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया था. इस से पहले 2006 में भी रामपाल पर हत्या का केस दर्ज हुआ था. रामपाल स्वामी रामदेवानंद महाराज का शिष्य है.

2006 में स्वामी दयानंद की लिखी एक किताब पर संत रामपाल ने एक टिप्पणी की. आर्यसमाज को ये टिप्पणी बेहद नागवार गुजरी थी और दोनों के समर्थकों के बीच हिंसक झड़प हुई. घटना में एक शख्स की मौत भी हो गई. इस के बाद एसडीएम ने 13 जुलाई, 2006 को आश्रम को कब्जे में ले लिया. रामपाल और उस के 24 समर्थकों को गिरफ्तार कर लिया गया.

2009 में संत रामपाल को आश्रम वापस मिल गया. उस के खिलाफ आर्यसमाज के लोगों ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया. कोर्ट ने उन की याचिका खारिज कर दी. 12 मई, 2013 को नाराज आर्यसमाजियों और संत रामपाल के समर्थकों में एक बार फिर झड़प हुई. इस हिंसक झड़प में 3 लोगों की मौत हो गई और करीब 100 लोग घायल हो गए.

सोनीपत के धनाणा गांव में 1951 में जन्मे रामपाल हरियाणा सरकार के सिंचाई विभाग में जूनियर इंजीनियर था. नौकरी के दौरान ही रामपाल दास सत्संग करने लगा और संत रामपाल बन गया.

सालों की नौकरी के बाद हरियाणा सरकार ने उसे 2000 में इस्तीफा देने को कहा. उस के बाद रामपाल ने करोंथा गांव में सतलोक आश्रम बनाया. जो फिलहाल सरकार के कब्जे में है.

हरियाणा में हिसार के पास बरवाला में स्थित इस आश्रम की जमीन को ले कर रामपाल पर कई आरोप लगे हैं. रामपाल इस्लामी विद्वान डा. जाकिर नाइक और कई अन्य धर्मगुरुओं पर अपनी टिप्पणियों को ले कर हमेशा चर्चा में रहा है. अगस्त 2014 में भी हिसार जिला अदालत में उस के समर्थकों ने काफी हुड़दंग मचाया था. जिस के बाद पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट ने स्वतःसंज्ञान लेते हुए उसे अदालत में पेश होने को कहा था और पूछा था कि उस की जमानत क्यों न रद्द कर दी जाए.

आरोप है कि उस के आश्रम के अस्पताल में गर्भपात सेंटर चलता था. उस के आश्रम से हथियार और कई आपत्तिजनक दवाएं जब्त की गई थीं. उस की गिरफ्तारी को ले कर जबरदस्त बवाल मचा और हिंसा हुई थी. उस पर सरकारी कार्य में बाधा डालने और आश्रम में जबरन लोगों को बंधक बनाने का केस दर्ज है. संत रामपाल देशद्रोह के एक मामले में फिलहाल हिसार जेल में बंद है. ○

अनुयायी बन गए थे. जहां डेरामुखी ने यह कहते हुए अनुयायियों को नपुंसक बनाया कि वे अगर खुद नपुंसक बनते हैं तो भगवान को पाने में सफल होंगे.

उन्हें साल 2002 में श्रीगंगानगर स्थित डेरे के अस्पताल में नपुंसक बनने के लिए मजबूर किया गया, जहां उन के अलावा कई अन्य साधु (डेरा अनुयायी) भी थे.

डेरामुखी का मानना था कि नपुंसक बनने के बाद अनुयायी डेरा छोड़ कर नहीं जा सकेंगे. डेरामुखी ऐसे अनुयायियों से खाली कागज पर दस्तखत भी करवा लेता था. उस के बाद उन के नामों पर डेरामुखी को दान की गई जमीन ट्रांसफर करवाता और कुछ समय बाद उस जमीन को डेरा ट्रस्ट के नाम पर ट्रांसफर करवा लिया जाता.

दरअसल, गुरमीत राम रहीम के गलत कामों की कुंडलियां खुलने के बाद ही पता चला कि डेरे का आकार बढ़ाने के लिए उस ने डेरे के आसपास की जमीन हथियाने के लिए अनोखा तरीका अपनाया हुआ था.

गुरमीत राम रहीम ने 1990 में गद्दीनशीं होने के बाद डेरे के चारों ओर की जमीन हासिल करने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाए. लोगों को डराधमका कर औनेपौने दामों पर 700 एकड़ जमीन हासिल की. इसी वजह से महज कुछ एकड़ में फैला डेरा आज बड़े शहर में तब्दील हो चुका है.

गांव शाहपुर बेगू, नेजियाखेड़ा और फूलकां बाजेकां के जिन लोगों ने बाबा को जमीन देने का विरोध किया, उन्हें परेशान करने के लिए बाबा के गुंडों ने पहले उन्हें धमकाया फिर समझाया और जो इस के बाद भी नहीं माना, उस की जमीन को रातोंरात ओपन टौयलेट बना दिया जाता था.

डेरे पर आने वाले हजारों लोग ऐसे लोगों के खेतों और फसल की ऐसी दुर्दशा कर देते थे कि गंदगी की वजह से खेतों के आसपास जाना भी मुश्किल हो जाता था. परेशान हो कर लोग उस जमीन को जमीन बेचने में ही भलाई समझते थे.

अदालत से जिन मामलों में गुरमीत राम रहीम को अपने कुकर्मों की सजा मिल चुकी है, वे तो महज उदाहरण हैं लेकिन यौन उत्पीड़न से ले कर हत्या और लोगों की संपत्ति हड़पने के ऐसे सैकड़ों गुनाह हैं, जिन की पीड़ितों ने शिकायत ही नहीं की. लेकिन ऐसे तमाम लोग आज इस बात से खुश हैं कि सच्चे डेरे की आस्था को कलंकित करने वाला संत अब सलाखों के पीछे है. ●

मिलिए दाढ़ीमूंछ वाली लड़की से

एक बार किसी हास्य कलाकार ने मंच पर कहा था कि दाढ़ीमूंछें मर्दों को नहीं, औरतों को ही होनी चाहिए थीं. क्योंकि उन में घंटों बैठ कर मेकअप करवाने की आदत जो होती है. उन के पास इतनी फुरसत होती है कि वे दाढ़ीमूंछें साफ करने के लिए पूरा समय दे सकती हैं.

यह मजाक की बात शरीर विज्ञान और प्रकृति के विपरीत जाने की है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि कई महिलाओं को दाढ़ीमूंछें होती हैं. ब्रिटेन की एक लड़की ऐसी है, जिस के चेहरे पर घनी काली दाढ़ी और पतली मूंछें देख कर कोई भी हैरत में पड़ जाएगा.

हरिनाम कौर नाम की इस लड़की का नाम दाढ़ी के कारण ही गिनीज बुक औफ वर्ल्ड रिकौर्ड में भी दर्ज है. सोशल मीडिया पर उन की तसवीरें खूब वायरल हो चुकी हैं. इस वजह से वह एक सफल सोशल मीडिया स्टार और मौडल बन चुकी हैं.

हालांकि वह एक मोटिवेशनल स्पीकर भी हैं. इस कारण उन का हर तरह के लोगों की सभाओं में आनाजाना होता रहता है और उन की तसवीरें प्रिंट या वेब मीडिया में प्रकाशित होती रहती हैं. लोग उन के साथ सेल्फी लेने के लिए भी आतुर रहते हैं.

अब हरिनाम कौर एक सफल शख्सियत हैं. एक समय था जब वह दाढ़ी के कारण काफी शर्मिंदगी महसूस करती थीं, काफी परेशान रहती थीं. लोग उन्हें हेयदृष्टि से देखा करते थे. दाढ़ी के कारण वह सार्वजनिक जगह पर जाने से कतराती थीं. आज उन की वही कमजोरी एक बड़ी ताकत बन चुकी है.

वह दाढ़ीमूंछों के उग आने पर परेशान रहने वाली लड़कियों के लिए प्रेरणा की स्रोत हैं. एक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार, दुनिया में 14 महिलाओं में से एक का शरीर पुरुषों की तरह होता है. हरिनाम कौर उन्हीं में से एक हैं.

जब वह 12 साल की थीं तभी उन्हें पौलिसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम नाम की एक बीमारी हो गई थी. इस के कारण शरीर के बाल अन्य लड़कियों के मुकाबले ज्यादा बढ़ने लगे. वह चेहरे पर दाढ़ी के कारण क्लास में लड़कियों का मजाक बनती रहीं. स्कूल के अलावा पड़ोसी, रिश्तेदार तक सभी हरिनाम का मजाक उड़ाते थे.

उन्होंने दाढ़ी रोकने के कई उपाय किए. कई तरह की क्रीम भी लगाईं, मगर कोई फायदा नहीं हुआ. अंत में हरिनाम ने दाढ़ी को काटना ही बंद कर दिया. उन्होंने अपनी जिंदगी को वैसा ही चुना जैसे वो थीं. आज हरिनाम एक फेमस सोशल मीडिया स्टार हैं. इन की पोस्ट वायरल होती रहती हैं. फैशन की दुनिया में भी इन का नाम बहुत आगे है. ●

मुंबई, महाराष्ट्र

आर्यन खान पर ड्रग्स का डंक

❑ भारत भूषण श्रीवास्तव

सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद बौलीवुड और ड्रग्स के संबंधों की जो लगातार परतें उघड़ रही हैं, उसे देख कर यही बात साबित होती है कि बौलीवुड स्टार्स और ड्रग्स का चोलीदामन का साथ है. जो लोग आर्यन खान पर की गई कारर्वाई को 'खान्स' के खिलाफ साजिश की बात कह रहे हैं, वे यह बताएं कि आर्यन खान बेकुसूर है तो आखिर वह वहां करने क्या गया था?

किंग खान के नाम से जाने जाने वाले शाहरुख खान के सुपुत्र आर्यन खान कार्डेलिया नाम के इसी क्रूज में चल रही ड्रग्स पार्टी से कुछ और लोगों के साथ एनसीबी द्वारा गिरफ्तार किए गए

2 अक्तूबर को देश भर में रस्मी तौर पर ही गांधी जयंती मनी थी. इस दिन लोगों को छुट्टी होने की खुशी ज्यादा रहती है, गांधी और उन के विचारों से कोई वास्ता नहीं रखता, जिन में से एक यह नसीहत भी है कि नशा खासतौर से युवाओं को बरबाद कर रहा है. इस दिन देश भर में ड्राई डे भी रहता है, इसलिए शराब की सभी दुकानें और ठेके बंद रहते हैं.

अगले दिन चूंकि इतवार था, इसलिए नशेड़ियों ने अपने कोटे का इंतजाम पहले से ही कर रखा था. इसी दिन देर रात मुंबई से गोवा के लिए कार्डेलिया नाम का क्रूज रवाना हुआ था जोकि एक रुटीन की बात थी.

वाटरवेज लीजर टूरिज्म प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के कर्मचारियों को उम्मीद रही होगी कि वीकेंड होने के चलते क्रूज पर रोज के मुकाबले भीड़भाड़ ज्यादा रहेगी, लेकिन लगभग 1300 पैसेंजर ही आए. जबकि क्रूज की क्षमता 1800 लोगों की है.

आजकल लोग क्रूज पर पार्टियां खूब करने लगे हैं. यह तेजी से पनपता नया फैशन है, इसलिए क्रूज जैसे ही मुंबई से कुछ किलोमीटर दूर पहुंचा तो पार्टियों का दौर शुरू हो गया. एक खास पार्टी सलीके से शुरू भी नहीं हो पाई थी कि क्रूज पर हड़कंप मच गया. हुआ यह था कि कुछ युवाओं ने ड्रग्स लेनी शुरू कर दी थी.

इन पर नशा भी सलीके से नहीं चढ़ा था कि एनसीबी यानी नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के कर्मचारियों, अधिकारियों ने इन की धरपकड़ शुरू कर दी.

दरअसल, यह एनसीबी की टीम की सुनियोजित मुहिम थी इसलिए टीम के सदस्य सिविल कपड़ों में साधारण यात्रियों की तरह तट से ही क्रूज पर सवार हुए थे. इस मुहिम की अगुवाई एनसीबी के जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े कर रहे थे, जो बौलीवुड के ड्रग्स कनेक्शन का भंडाफोड़ करने के लिए जाने जाते हैं. उन्हें लगातार मुखबिर खबर दे रहे थे कि इन दिनों नामी फिल्मी हस्तियां क्रूज पर रेव पार्टियां करने लगी हैं.

उन्होंने सारा प्लान बनाया और इस रात कार्डेलिया पर धावा बोल दिया. देखते ही देखते 8 नाजुक खूबसूरत युवा, जिन में एक

थोड़ी उम्रदराज सहित 3 युवतियां भी थीं, उन की गिरफ्त में थे, जिन का सारा नशा एनसीबी की टीम को देख छूमंतर हो गया था.

इन लोगों की जामातलाशी में 13 ग्राम कोकीन, 21 ग्राम चरस, 5 ग्राम एमडी और एमडीएमए की 22 गोलियां बरामद हुईं. यानी सूचना गलत नहीं थी. लेकिन पकड़े गए आरोपियों में कोई नामीगिरामी फिल्मी हस्ती नहीं थी. यह तो पूछताछ के बाद उजागर हुआ कि इन में से एक अभिनेता शाहरुख खान का बेटा आर्यन खान भी है.

क्रूज पर तलाशी में पकड़े न जाएं, इसलिए ये युवा नशीले पदार्थ जूतों और अंडरगारमेंट्स में छिपा कर ले गए थे. जबकि लड़कियों ने इन्हें अपने पर्स में रखा था. उम्रदराज महिला तो ड्रग्स को सेनेटरी पैड में छिपा कर क्रूज पर ले गई थी.

इस वक्त आधी रात बीत चुकी थी, लेकिन सुबह जैसे ही यह पता चला कि पकड़े गए युवाओं में से एक शाहरुख खान का बेटा आर्यन खान भी है तो मीडिया वाले एनसीबी के दफ्तर की तरफ दौड़ लगाते नजर आए और दोपहर तक मामले को इतना हाईप्रोफाइल बना दिया कि उस दिन की दूसरी तमाम अहम खबरें और घटनाएं इस के नीचे दब कर रह गईं.

जिन में से एक मामला उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र के बेटे आशीष मिश्र द्वारा 4 किसानों को कार से रौंदे जाने का भी था.

आर्यन की खबर ज्यादा बिकाऊ और चलताऊ थी, इसलिए उसे लगातार दिखाया गया और इतना भुनाया गया कि देखने वाले बिना कोई ड्रग लिए ही झूमने लगे.

ऐसा छापा कोई नई बात नहीं थी, लेकिन चूंकि इस में एक स्टार किड शामिल था इसलिए न्यूज चैनल्स को तिल का ताड़ बनाने का एक और मौका मिल गया. आर्यन के बारे में जानकारी छनछन कर बाहर आने लगी और उस के साथियों की भी जन्मकुंडली खंगाली जाने लगी.

शाहरुख खान के घर मन्नत के बाहर भी मीडियाकर्मियों का जमावड़ा लग गया. अब एनसीबी क्या कर रही है और आगे क्याक्या हो सकता है, ये बातें सड़कछाप ज्योतिषी के तोते की तरह बांची गईं.

इस वक्त तक उम्मीद की जा रही थी कि आर्यन को मामूली पूछताछ के बाद छोड़ दिया जाएगा, लेकिन जैसे ही अधिकारियों की टीम सवालजवाब के लिए अंदर गई तो समझने वाले समझ गए कि ड्रामा अभी और लंबा खिंचेगा.

कच्चे खिलाड़ियों की नशेड़ी टीम

आर्यन के साथ गिरफ्तार किए गए अरबाज मर्चेंट, मुनमुन धमेचा, नूपुर सारिका, इसमीत सिंह, मोहक जसवाल, विक्रांत छोकर और गोमित चोपड़ा बहुत जानेमाने नाम नहीं

> ऐसा छापा कोई नई बात नहीं थी, लेकिन चूंकि इस में एक स्टार किड शामिल था इसलिए न्यूज चैनल्स को तिल का ताड़ बनाने का एक और मौका मिल गया. आर्यन के बारे में जानकारी छनछन कर बाहर आने लगी और उस के साथियों की भी जन्मकुंडली खंगाली जाने लगी.

हैं. मुनमुन वही उम्रदराज महिला है, जिस ने सेनेटरी नैपकिन में ड्रग्स छिपाई थी.

फैशन इंडस्ट्री से जुड़ी यह खूबसूरत महिला कुछ साल पहले तक मध्य प्रदेश के सागर शहर के गोपालगंज मोहल्ले में रहा करती थी. अपनी स्कूली पढ़ाई उस ने यहीं से पूरी की थी. उस का परिवार बिजनैस से ताल्लुक रखता है. भाई प्रिंस धमेचा दिल्ली में कार्यरत है.

कुछ न होते हुए भी उस के फिल्म इंडस्ट्री में कई हस्तियों से अच्छे संबंध हैं. आर्यन कैसे उस के संपर्क में आया, यह पूरी जांच और मुकदमे के बाद साफ होगा.

पकड़ा गया दूसरा मुख्य आरोपी 25 वर्षीय अरबाज मर्चेंट मुंबई का जानामाना टिंबर कारोबारी है, जिस की 2 कंपनियां स्वदेश टिंबर और सिमला एजेंसीज हैं. यह उस का पुश्तैनी कारोबार है.

अरबाज ने बांद्रा के आर.डी. नैशनल कालेज से बैचलर इन मैनेजमेंट स्टडीज की पढ़ाई की थी. उस के पिता असलम मर्चेंट पेशे से वकील हैं. अरबाज और आर्यन की दोस्ती बहुत पुरानी है और दोनों ने देशविदेश की कई यात्राएं साथसाथ की हैं. दोनों पार्टियों में भी संग दिखते थे. मुनमुन कौन है, यह अरबाज भी नहीं जानता.

मोहक और नूपुर दोनों पेशे से फैशन डिजायनर हैं, जबकि गोमित हेयर स्टाइलिस्ट है. ये तीनों ही दिल्ली के रहने वाले हैं. नूपुर ने भी मुनमुन की तरह ड्रग्स सेनेटरी नेपकिन में छिपाई थी.

ये ड्रग्स उसे मोहक ने दी थीं, लेकिन मोहक के पास ड्रग्स कहां से आई, यह अभी पता नहीं चला है और यही सारे फसाद की जड़ है कि एनसीबी या दूसरी कोई एजेंसी ड्रग माफियाओं की जड़ तक कभी नहीं पहुंच पाती. हर बार वे फूलपत्तियां ही तोड़ती रही हैं.

इस मामले में भी छोटी मछलियां ही पकड़ाई हैं, मगरमच्छों के तो किसी को अतेपते नहीं.

जाहिर है कि ये सब के सब कच्चे और नए खिलाड़ी ड्रग्स के मायाजाल के थे, जो सिर्फ मौजमस्ती की गरज से गोवा जा रहे थे. एनसीबी के सामने इन की घिग्घी बंधी हुई थी क्योंकि हिरासत में लेते वक्त ही इन के मोबाइल फोन भी जब्त कर लिए गए थे, जिस से इन का संपर्क बाहरी दुनिया और खासतौर से उन पेरेंट्स से कट गया था, जिन के बारे में ये सोचते यह होंगे कि उन के मांबाप बहुत रईस और रसूख वाले हैं, लिहाजा इन का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता.

अब तक ऐशोआराम में पलेबढ़े इन रईसजादों को पहली बार यह समझ आया कि कानून के सामने कोई रसूख या शोहरत नहीं चलती, जिस के कि ये आदी बचपन से ही हो चुके थे.

लंबी पूछताछ में लगता नहीं कि ये नातजुर्बेकार युवा कोई झूठ बोल पाए होंगे. एनसीबी की टीम तो इन की मानसिकता समझ रही थी, लेकिन ये लोग नहीं समझ पा रहे थे कि इस चूहेदानी से निकलना अब आसान काम नहीं.

उस वक्त ये सभी यही दुआ मांग रहे होंगे कि एनसीबी वाले पूछताछ जल्द खत्म कर हमें छोड़ दें, जिस से वे घर जा कर आराम से

आर्यन खान की गिरफ्तारी के बाद शाहरुख से मिलने उन के बंगले 'मन्नत' पर पहुंचे सलमान खान

एयर कंडीशंड कमरों में सोएं और पार्टी की रात और बात को एक बुरे सपने की तरह भूल जाएं.

मुमकिन है इन नवोदित नशेड़ियों ने तभी कान पकड़ कर तौबा कर ली हो कि अब कभी क्रूज पार्टी तो दूर आम पार्टियों में भी ड्रग्स नहीं लेंगे.

डायरेक्टर बनाम लायर

लेकिन इन के हाथ में अब कुछ बचा नहीं था. अदालत ने पहले 3 दिनों का रिमांड दिया फिर उसे 14 दिनों तक और बढ़ा दिया तो और सनसनी और रोमांच मचने लगे. सीधेसीधे लोगों की नजरें समीर वानखेड़े और आर्यन के वकील सतीश मानशिंदे पर जा टिकीं कि इस बार कौन किस पर भारी पड़ता है.

वानखेड़े की मंशा आरोपियों को ज्यादा से ज्यादा दिन हिरासत में रखने की थी तो मानशिंदे की पूरी कोशिश अपने मुवक्किल आर्यन खान को जमानत दिलाने की थी.

समीर वानखेड़े एक सख्त और तेजतर्रार अफसर हैं जिन के खाते में कई बौलीवुड हस्तियों के खिलाफ कारर्वाई करने का रिकौर्ड, वह भी ड्रग्स के मामले में करने का, दर्ज है.

जब अभिनेता सुशांत सिंह की रहस्यमय मौत 14 जून, 2020 को हुई थी तभी से उन के निशाने पर फिल्म इंडस्ट्री के वे स्टार्स हैं, जो ड्रग्स का सेवन करते हैं.

सुशांत सिंह की मौत के बाद भी ड्रग माफिया की चर्चा हुई थी और हल्ला भी ज्यादा मचा था, क्योंकि सुशांत और उस के कुछ साथी भी ड्रग्स लेते थे. तब इस की जांच वानखेड़े ने ही की थी.

इस के बाद तो वह बौलीवुड के ड्रग कनेक्शन के पीछे पड़ गए. आर्यन का मामला उसी पीछे पड़ने की एक कड़ी है.

मुंबई हवाई अड्डे पर तैनाती के दौरान उन को कहासुनी आए दिन फिल्म स्टार्स से हुई. 2008 बैच के आईआरएस अधिकारी समीर वानखेड़े एनसीबी से पहले एनआईए यानी राष्ट्रीय जांच एजेंसी में रहते भी सुर्खियों में रहते थे.

हालिया मामले में भी उन्होंने कोई नरमी नहीं बरती और एक दूसरी सनसनी 11 अक्तूबर को यह कहते हुए मचाई कि इस मामले की जासूसी हो रही थी.

इस के पहले सुनवाई कर रही मुंबई की अदालत ने उन की इस मंशा पर पानी फेर दिया था कि आर्यन और दूसरे आरोपियों को एनसीबी की कस्टडी दी जाए, जिस से उन से ढंग से पूछताछ हो सके.

अदालत ने इस दलील से इत्तफाक नहीं रखा और आरोपियों को आर्थर रोड जेल भेज दिया. यहां भी मीडिया बदस्तूर अपना काम करता रहा, मसलन आर्यन फलां बैरक में रहेगा, उसे घर का खाना नहीं मिलेगा और जेल की दिनचर्या और सख्त नियमों का उसे पालन करना पड़ेगा. कपड़े जरूर उसे पसंद के मिल सकते हैं. नाश्ते और लंच डिनर का मेन्यू भी प्रसारित किया गया.

समीर वानखेड़े के साथसाथ चर्चे सतीश मानशिंदे के भी खूब हुए कि वह इस से पहले भी इस तरह के कई मुकदमों में पैरवी कर चुके हैं. सुनील दत्त के अभिनेता बेटे संजय दत्त को जमानत उन्होंने ही दिलवाई थी.

संजय दत्त कभी अव्वल दरजे के ड्रग एडिक्ट थे और मुंबई बम धमाकों में भी उन का नाम आया था. उन की जिंदगी पर फिल्म भी बनी और किताबें भी लिखी गईं.

सलमान खान को ड्रिंक एंड ड्राइव मामले के साथ काले हिरण के शिकार के चर्चित मामले में भी मानशिंदे ने जोरदार तरीके से पैरवी करते हुए उन्हें जमानत दिलवाई थी और फिर बाइज्जत बरी भी करवाने में कामयाबी हासिल की थी.

अपने दौर के दिग्गज और नामी वकील राम जेठमलानी के 10 साल जूनियर रहे इस धुरंधर वकील की एक पेशी की फीस ही 10 लाख रुपए हुआ करती है.

सुशांत सिंह की गर्लफ्रैंड रिया चक्रवर्ती को जमानत दिलवाने का श्रेय भी मानशिंदे के खाते में दर्ज है और अभिनेत्री राखी सावंत का एक मुकदमा भी वह लड़ चुके हैं. आर्यन के मामले में भी उन्होंने जमानत याचिकाएं दमदार दलीलों के जरिए दायर कीं लेकिन शुरुआती दौर में उन्हें कामयाबी नहीं मिली.

जब आर्यन की चर्चा जरूरत से ज्यादा हो चुकी तो लोगों की दिलचस्पी सतीश मानशिंदे और समीर वानखेड़े में बढ़ी कि देखें कौन किस पर भारी पड़ता है क्योंकि ये दोनों ही अपनेअपने फील्ड के महारथी हैं.

फिल्मों में नशा

फिल्म इंडस्ट्री का नशे से काफी गहरा नाता हमेशा से ही रहा है. शराब तो बेहद आम है जिसे लगभग सभी कलाकार पीते हैं. देखा जाए तो नशा इस इंडस्ट्री का पर्याय और

पहचान शुरू से ही है. लेकिन ड्रग्स की विधिवत शुरुआत हुई 70 के दशक से. तब ड्रग्स को आज जितनी मान्यता नहीं मिली थी और यह नशा भी सिर्फ अपराधियों और अभिजात्य वर्ग का नशा माना जाता था.

इसी दौर में देवानंद की फिल्म हरे राम हरे कृष्ण आई. हिप्पी कल्चर वाली इस फिल्म में जीनत अमान ने पेरेंट्स से उपेक्षित एक मध्यमवर्गीय नशेड़ी युवती का रोल इतनी शिद्दत से निभाया था कि दर्शक रातोंरात उन के मुरीद हो गए थे.

लेकिन दिक्कत तब खड़ी होने लगी, जब युवा जीनत के साथसाथ नशे के भी दीवाने होने लगे. तब नशे के लिए गांजा, चिलम, अफीम, चरस सहित एलएसडी जैसी घातक गोलियां इस्तेमाल की जाती थीं.

जीनत अमान पर फिल्माए गाने 'दम मारो दम मिट जाए गम...' का असर उलटा हुआ. युवाओं ने नशे के नुकसानों से कोई सबक नहीं सीखा.

नशे से आगाह करती एक और फिल्म एलएसडी पर आधारित भी इसी दौर में रिलीज हुई थी, पर वह ज्यादा चली नहीं थी.

आज के आर्यन नुमा युवाओं का इस गुजरे कल से गहरा ताल्लुक है. फिल्म इंडस्ट्री में बेशुमार पैसा है, जिस पर अंडरवर्ल्ड की नजर पड़ी तो देखते ही देखते उस का हुलिया बदल गया. अंडरवर्ल्ड के सरगना फिल्मकारों को फाइनेंस करने लगे और जुर्म की दुनिया इस सुनहरे परदे की जरूरत बन गई.

हर तीसरी फिल्म में दिखाया जाने लगा कि ड्रग्स के कारोबार में मुनाफा ही मुनाफा है. लेकिन इस से भी ज्यादा प्रचार इस बात का हुआ कि ड्रग्स के सेवन से आप एक ऐसी दुनिया में पहुंच जाते हैं, जहां कोई गम या दुख नहीं होता. आप ध्यान और समाधि की सी अवस्था में होते हैं.

देखते ही देखते हर कोई इस ध्यान में डूबने लगा. ड्रग्स का नशा स्टेटस सिंबल बन गया और यह कारोबार इतनी तेजी से फैला कि आज झुग्गीझोपड़ी वाले युवा भी इस की गिरफ्त में हैं.

एनसीबी की समस्या यही है कि वह इस कारोबार की जड़ तक नहीं पहुंच पाती. कुछ नशेड़ियों को यहांवहां से गिरफ्तार कर मान लिया जाता है कि अब समस्या हल हो गई.

> सुबह जैसे ही यह पता चला कि पकड़े गए युवाओं में से एक शाहरुख खान का बेटा आर्यन खान भी है तो मीडिया वाले एनसीबी के दफ्तर की तरफ दौड़ लगाते नजर आए और दोपहर तक मामले को इतना हाईप्रोफाइल बना दिया कि उस दिन की दूसरी तमाम अहम खबरें और घटनाएं इस के नीचे दब कर रह गईं.

तालिबानी सत्ता के बाद भारत में बढ़ गई ड्रग तस्करी

हाल ही में अफगानिस्तान पर तालिबानों के कब्जे से नशे के कारोबार पर पड़े फर्क का ही नतीजा है कि ड्रग्स सप्लाई एकाएक ही तेजी से बढ़ी. तय है इसलिए कि तालिबानी सरकार का मूड और नीतियां ड्रग्स के कारोबारी समझ नहीं पा रहे लिहाजा क्लीयरेंस सेल की तरह उन्होंने अपना स्टौक खाली करना और औनेपौने में यहांवहां माल खपाना शुरू कर दिया.

आर्यन खान कांड के चंद दिनों पहले ही गुजरात के कच्छ जिले के मुंद्रा बंदरगाह से 21 हजार करोड़ रुपए की हेरोइन जब्त हुई थी. इस जब्ती के कारोबारी और सियासी मायने और अटकलें अलग हैं, लेकिन यह तय है कि अगर यह खेप न पकड़ी जाती तो अब तक देश के कोनेकोने में फैल चुकी होती.

हल्ला इस बात पर ज्यादा मचा कि यह खेप अडानी समूह द्वारा संचालित बंदरगाह पर उतरी. आर्यन की गिरफ्तारी के बाद यह सवाल भी उठा कि कहीं यह नया ड्रामा मुंद्रा बंदरगाह पर से ध्यान हटाने के लिए तो नहीं रचा गया, क्योंकि अडानी समूह के मौजूदा हुक्मरानों से अंतरंग संबंध हैं और आम लोग भी इस बाबत सवाल पूछने लगे थे.

इस और ऐसे कई अनसुलझे सवालों का जवाब आधाअधूरा ही सही, हिंदी फिल्मों से मिलता रहा है. 70-80 के दशक की हर तीसरी फिल्म में पुलिस कमिश्नर बने चरित्र अभिनेता इफ्तिखार नए भरती हुए इंसपेक्टर रवि या विजय को एक महत्त्वपूर्ण फाइल सौंपते गंभीरता से यह कहते नजर आते थे कि यह रही ड्रग्स के उन तस्करों और कारोबारियों की जन्मकुंडली, जो हमारे देश की युवा पीढ़ी को खोखला करते, उन्हें नशे के नर्क में धकेलने का संगीन गुनाह कर रहे हैं.

इंसपेक्टर बने अमिताभ बच्चन या शशि कपूर अपनी एड़ियों को घुमा कर एक जोरदार सैल्यूट ठोकते थे और उन की जीप सीधे विलेन के अड्डे पर जा पहुंचती थी.

लंबीचौड़ी मारधाड़ और गोलीबारी के बाद प्रेमनाथ, अजीत और अमजद खान जैसे ड्रग स्मगलर हेलीकाप्टर में चढ़ने से पहले ही धर लिए जाते थे. उन के साथ टाम अल्टर या बौब क्रिस्टो, जो मूलतः अंगरेज हैं, को भी

ड्रग्स मामले में 20 अक्तूबर को सेशंस कोर्ट ने आर्यन खान की जमानत याचिका खारिज कर दी

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

NO. 1 BRAND INDIA 2014

1 ज्योतिष्मती तेल
जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

2 गन्धपुरा तेल
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

3 निर्गुण्डी तेल
नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

4 तारपीन तेल
जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

5 पुदीना तेल
पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

6 कपूर तेल
विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

7 अलसी तेल
जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

8 तिल तेल
मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

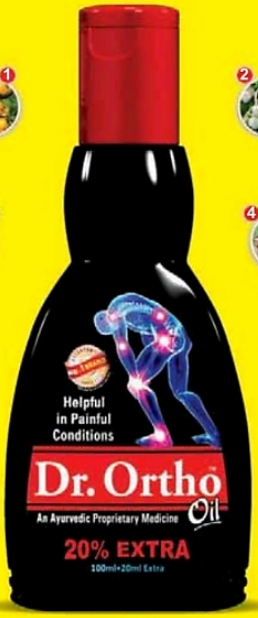

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

दिखा दिया जाता था जिस से सिद्ध हो जाता था कि ड्रग्स तसकरी बगैर विदेशी स्मगलरों के मुमकिन नहीं.

ड्रग्स की तिलिस्मी दुनिया का शिकार बन रहे हैं युवा

पिछले 2 दशक में नशे और खासतौर से ड्रग्स पर जो फिल्में बनीं वे कोई समाधान नहीं देतीं, बल्कि यह बताती हैं कि युवा नशा क्यों करते हैं और नशा होने के बाद कैसा लगता है.

आर्यन खान संभव है यही अनुभव लेने गया हो कि भविष्य में कभी ड्रग एडिक्ट युवा का रोल करना पड़ा तो उस में बिना नशे को समझे वास्तविकता कैसे आएगी.

गोवा नशेड़ियों की जन्नत है, इस हकीकत को साल 2013 में प्रदर्शित फिल्म 'गो गोवा गान' में दिखाया गया था. 3 दोस्त एक रेव पार्टी में गोवा जाते हैं और गलत ड्रग्स लेने पर जांबी बन जाते हैं. हालांकि फिल्म का उत्तरार्द्ध पौराणिक किस्से कहानियों और कौमिक्स जैसा था, लेकिन पूर्वार्द्ध में मुद्दे की बात आ गई थी.

प्रियंका चोपड़ा और कंगना रनौत अभिनीत मधुर भंडारकर निर्देशित 'फैशन' फिल्म साल 2008 में आई थी, जिस में कस्बाई युवतियों की मानसिकता को खूबी से उकेरा गया था कि वे मुंबई आ कर कैसे ड्रग्स की मायावी और तिलिस्मी दुनिया का शिकार हो जाती हैं.

ये युवतियां कामयाब तो अपनी प्रतिभा के दम पर होती हैं लेकिन ड्रग्स सेवन को फैशन मानते बरबाद हो जाती हैं और फिर कभी मीना कुमारी, नरगिस, हेमामालिनी, श्रीदेवी, रेखा या माधुरी दीक्षित नहीं बन पातीं यानी ड्रग्स का कारोबार कस्बाई प्रतिभाओं को कामयाब होने से रोकने की भी एक साजिश के तौर पर देखा जा सकता है.

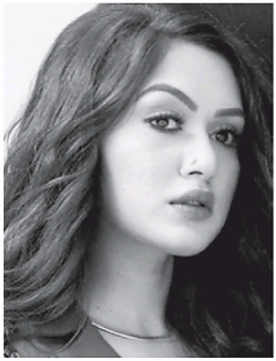

आर्यन के साथ गिरफ्तार किए गए अरबाज मर्चेंट, मुनमुन धमेचा

यहां गौर करने वाली बात यह भी है कि कभी बड़े नामी सितारे ड्रग्स लेते नहीं पकड़े जाते. अपवाद स्वरूप ही संजय दत्त रोशनी में आए थे, वह भी इसलिए कि वह नशे के इतने आदी हो चुके थे कि सुबह उठ कर ब्रश बाद में करते थे, ड्रग्स पहले लेते थे.

2009 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'देव डी' भी ड्रग्स प्रधान थी, लेकिन यह भी मकसद से भटकी हुई फिल्म थी. धर्मेंद्र के एक बड़े भाई हैं अजीत सिंह देओल, जो फिल्म निर्माता और निर्देशक हैं. इन्हीं के बेटे हैं अभय देओल. अभय देओल ने ही इस फिल्म में कामचलाऊ एक्टिंग की थी जो नशे में डूबे नाकाम आशिक के किरदार में थे.

फिर इस के 2 साल बाद आई अभिषेक बच्चन अभिनीत 'दम मारो दम' फिल्म, जिस में एक भूमिका राजबब्बर और स्मिता पाटिल के अभिनेता बेटे प्रतीक बब्बर की भी थी.

प्रतीक बब्बर रियल लाइफ में भी आला दरजे के नशेड़ी रह चुके हैं, जिन्हें इलाज के लिए कई बार नशा मुक्ति केंद्र में भरती होना पड़ा था. हालांकि एक्टिंग के मामले में वह संजय दत्त पर बनी बायोपिक 'संजू' में संजय दत्त का रोल अदा कर रहे रणबीर कपूर के सामने उन्नीस ही रहे थे.

'दम मारो दम' में निर्देशक रोहन सिप्पी ने कोशिश जरूर की थी कि ड्रग्स स्मगलिंग और रैकेट्स का खुलासा करें लेकिन वह भी सिमट कर रह गए थे.

इस फिल्म की शूटिंग भी ड्रग्स का स्वर्ग कहे जाने वाले शहर गोवा में हुई थी. इस से कुछकुछ हकीकत का एहसास तो हुआ था पर यह सब पुरानी हिंदी फिल्मों की कौपी थी, जिन में पुलिस और तस्कर ढाई घंटे तक चोर पुलिस का खेल खेला करते हैं.

इस फिल्म की इकलौती खूबी यह बताना थी कि हरेक किरदार के तार ड्रग माफियाओं से जुड़े हुए दिखाए गए हैं. लेकिन वे ठीक वैसे ही हैं जैसे आर्यन खान के हैं जिस से यह उम्मीद

मुंबई स्थित नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो का औफिस

करना बेवकूफी की बात है कि वह सीधा इस धंधे के बौस से ड्रग ले कर आया हो.

2016 में आई 'उड़ता पंजाब' फिल्म अपने शीर्षक के चलते काफी चर्चित रही थी, क्योंकि पंजाब में ड्रग्स की दखल तब तक अहम बहस का विषय बन चुकी थी. ड्रग्स पर बनी यह इकलौती फिल्म थी, जिस में यह बताया गया था कि फैक्ट्रियों में ड्रग्स कैसे बनती हैं.

निर्देशक अभिषेक चौबे यह बताने में भी कामयाब रहे थे कि इस में राजनेता भी लिप्त रहते हैं. शाहिद कपूर, करीना कपूर और आलिया भट्ट जैसे सितारों से सजी यह फिल्म विवादों से भी घिरी थी.

ड्रग्स कितनी आसानी से उपलब्ध हो जाती है और इस के दुष्प्रभाव कैसे होते हैं, यह असरदार तरीके से दिखाना भी फिल्म की खूबी थी.

आर्यन कोई नादान बच्चा नहीं

ड्रग्स अकेले पंजाब या मुंबई में ही नहीं बल्कि पूरे देश में सहजता से मिल जाती हैं जिस के लिए इकलौती खूबी या जरूरत तलब लगना है.

यह तलब जब लगती है तो लोग मल खाने तक को भी तैयार हो जाते हैं, लड़कियां देह व्यापार करने को मजबूर हो जाती हैं, युवा अपनी गैरत और करिअर भूल जाते हैं. इस से ज्यादा ड्रग्स की लत के बारे में ज्यादा कुछ और कहा भी नहीं जा सकता.

इस में भी कोई शक नहीं कि फिल्म इंडस्ट्री के कई कलाकार इस लत के शिकार हैं, जिन

सिमी ग्रेवाल का वह शो जिस में शाहरुख खान ने कहा था कि वह चाहते हैं कि उन का बेटा ड्रग्स ट्राई करे

के नाम वक्तवक्त पर उजागर होते भी रहे हैं. लेकिन न पकड़े गए फिल्मकारों की लिस्ट उन से कई गुना ज्यादा लंबी है.

आर्यन के बहाने एक बार फिर यह सच उजागर हुआ कि कुछ भी मुमकिन है, क्योंकि एक 24 साल के नौजवान को इतना भोला भी नहीं कहा और माना जा सकता कि वह यह न जानता हो कि ड्रग्स सेहत के लिए तो नुकसानदायक हैं ही, साथ ही इन का सेवन व खरीदफरोख्त यहां तक कि इन्हें अपने पास रखना भी गैरकानूनी है.

आर्यन से पहले जो फिल्मकार ड्रग्स के मामले में पकड़े गए हैं, उन में छोटे परदे की टुनटुन कही जाने वाली कामेडियन भारती सिंह, सुशांत सिंह की प्रेमिका रही रिया चक्रवर्ती, आज की कामयाब अभिनेत्री दीपिका पादुकोण और बी ग्रेड की ऐक्ट्रेस रकुलप्रीत सिंह के नाम प्रमुखता से शामिल हैं. फरदीन खान और ममता कुलकर्णी भी इस लिस्ट की शोभा बढ़ा चुके हैं.

आर्यन का क्या होगा, इस पर हर किसी की निगाह है क्योंकि वह कोई आम लड़का नहीं बल्कि शाहरुख खान का बेटा है. अगर उस पर आरोप साबित हुए तो उसे कम से कम एक साल की सजा होनी तय है.

हालफिलहाल तो वह आर्थर रोड नाम की जेल में है जिस में संजय दत्त सहित जुर्म की दुनिया के कई दिग्गजों ने अपने दुर्दिन गुजारे थे.

सच यह भी है कि आर्यन को इतनी शोहरत फिल्मों में काम करने से पहले ही मिल चुकी है कि कोई भी निर्माता उस पर अरबों का दांव खेलने का जोखिम उठा सकता है.

एक बहस पेरेंट्स की भूमिका की भी हुई कि क्यों न उन्हें भी बच्चों की ड्रग की लत का जिम्मेदार ठहराया जाए.

आर्यन के गिरफ्तार होते ही शाहरुख खान का एक वीडियो तेजी से वायरल हुआ था, जिस में अभिनेत्री सिम्मी ग्रेवाल को दिए इंटरव्यू में वह यह कहते नजर आ रहे थे कि वह चाहते हैं कि उन का बेटा भी ड्रग्स ट्राई करे और जब आर्यन ने उन की बात मान ही ली तो एक आम पिता की तरह रोतेझींकते और बेटे के लिए तड़पते नजर आए.

यह सोचना भी बेमानी है कि आर्यन के पकड़े जाने से ड्रग्स की समस्या खत्म हो गई है. उलटे यह गिरफ्तारी और उस के बाद का ड्रामा यह सोचने को जरूर मजबूर करता है कि यह समस्या कितनी विकराल हो गई है.●

किरण गोसावी की आर्यन खान के साथ ली गई यह सैल्फी सोशल मीडिया पर जम कर वायरल हुई. अब किरण गोसावी और एनसीबी कनैक्शन को ले कर सवाल उठ रहे हैं.

मुंबई का असली सिंघम समीर वानखेडे

❑ वीरेंद्र बहादुर सिंह

आज बौलीवुड के फिल्म स्टार्स की लेट नाइट पार्टी को युवाओं की पार्टी कहा जाने लगा है. इस की वजह यह है कि आजकल जो पार्टियां हो रही हैं, वे हौट सैक्स, शराब और ड्रग के साथ होती हैं. इन में नई उम्र के फिल्म स्टार्स, प्रोड्यूसर्स, फाइनेंसर और मुंबई, दिल्ली, दुबई के संपन्न घरों के 20-22 साल के टीनएजर होते हैं. पार्टी में आने वाले ये टीनएजर लास वेगास, पेरिस और लंदन की सैक्स पार्टी की नईनई स्टाइल अपनाते हैं. इस में 'गे' और 'लेस्बियन' भी शामिल होते हैं.

पार्टी में आने वाली फिल्म कलाकारों की बेटियां तो नाममात्र के ही कपड़े पहने होती हैं. मजे की बात यह है कि पहले इन पार्टियों के बारे में सुना जाता था या कभीकभार किसी अखबार में पढ़ने को मिल जाता था.

पर अब तो इन पार्टियों के तमाम वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होते मिल जाते हैं, जिन में हाथों में टकीला, रम और दुनिया की प्रसिद्ध शराबों की प्यालियां थामे एकदूसरे से बेशरमी से चिपके खड़े युवकयुवतियों के मदहोश स्थिति में ग्रुप फोटो देते दिखाई देते हैं.

ऐसी पार्टियों में जिन्हें ड्रिंक्स, ड्रग्स और सैक्स में अधिक रुचि होती है, वे यह पहले से ही तय कर के आते हैं. कुछ लोग तो जब पार्टी में भाग ले कर घर चले जाते हैं, तब आधी रात को 2 बजे के बाद सैक्स और

शराब की रेलमपेल के साथ असली पार्टी जमती है, जो सुबह तक चलती है.

बड़े स्टार, राजनेता, अधिकारी, कारपोरेट हस्तियां या कुख्यात डौन की संतानें इस तरह की पार्टियों में होते हैं. इसलिए अधिकतर इस तरह की पार्टियों पर पुलिस छापा नहीं मारती.

इस की वजह यह होती है कि छोटेमोटे पुलिस अधिकारियों की हिम्मत ही नहीं होती वहां जाने की. पर बौलीवुड में इधर कुछ सालों से हलचल मची है, इस का एकमात्र कारण हैं मुंबई नारकोटिक्स विभाग के जोनल डायरेक्टर 'सिंघम' के रूप में माने जाने वाले तेजतर्रार अधिकारी समीर वानखेडे.

फिल्मी डौन (शाहरुख खान) को पकड़ना भले ही 11 मुल्कों की पुलिस के लिए असंभव रहा हो, पर फिल्मी दुनिया के बादशाह, बाजीगर और किंग माने जाने वाले शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को पकड़ने का काम भले ही कोई पुलिस वाला नहीं कर सका, पर एनसीबी के मुंबई के जोनल डायरेक्टर समीर वानखेडे ने उसे पकड़ कर दिखाया ही नहीं, बल्कि जेल तक पहुंचा दिया.

एनसीबी के जोनल डायरेक्टर समीर वानखेडे ही एक ऐसे अधिकारी हैं, जिन्होंने न सिर्फ शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को गिरफ्तार कर जेल भेजा बल्कि दीपिका पादुकोण, श्रद्धा कपूर और सारा अली खान को ड्रग के सेवन और वे यह ड्रग वे कहां से लेती हैं, इस बारे में पूछताछ के लिए अपने औफिस में बुलाने की हिम्मत दिखाई थी.

उन की छवि एक सख्त अधिकारी की है. उन के सामने कितना भी बड़ा सेलिब्रिटी क्यों न हो, बिना किसी दबाव के वह अपना काम करते हैं. उन्हीं के नेतृत्व में एनसीबी ने बौलीवुड की सेलिब्रिटीज पर कारवाई की है.

सुशांत सिंह राजपूत केस और अब बौलीवुड के किंग खान यानी शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान केस में चर्चा में रहने वाले एनसीबी के जोनल डायरेक्टर इंडियन रेवेन्यू सर्विस (आईआरएस) के 2008 बैच के अधिकारी समीर वानखेडे का जन्म सन 1984 में मायानगरी मुंबई में हुआ था. उन के पिता भी एक पुलिस अधिकारी थे.

स्कूली शिक्षा के बाद उन्होंने सिविल सर्विस परीक्षा पास की और आईआरएस अधिकारी बन गए. बौलीवुड के गोरखधंधों, घोटालों और दंभ पर उन्हें खासी नाराजगी है.

इस के पहले उन की पोस्टिंग मुंबई के छत्रपति शिवाजी इंटरनैशनल एयरपोर्ट पर डिप्टी कस्टम कमिश्नर के रूप में हुई थी. यहां उन्होंने बेहतरीन काम किया और नियमों को सख्ती से लागू किया.

मुंबई का छत्रपति शिवाजी इंटरनैशनल एक ऐसा एयरपोर्ट है, जहां लगातार सेलिब्रिटीज का आनाजाना लगा रहता है. लेकिन कभी उन पर यह फर्क नहीं पड़ा कि सामने कौन है.

उन्होंने विदेश से आनेजाने वाले बौलीवुड सेलिब्रिटीज के कस्टम चुकाए बिना कीमती सामानों, करेंसी, सोना, ज्वैलरी और गहनों को पकड़ कर दंड के साथ रकम वसूली थी.

तुनकमिजाज और पौवर का रौब दिखाते हुए ऊपर से कराए गए फोन पर वानखेडे ने कभी ध्यान नहीं दिया. पौप गायक मिका सिंह को विदेशी मुद्रा के साथ उन्होंने ही गिरफ्तार किया था.

नारकोटिक्स विभाग में पोस्टिंग होने के

मुंबई नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जोनल डायरेक्टर समीर वानखेडे ने पिछले 2 सालों में करीब 17 हजार करोड़ रुपए की ड्रग्स बरामद कर ड्रग पैडलरों की नींद हराम कर दी. किसी के दबाव में न आने वाले मुंबई के इस असली सिंघम ने ड्रग्स के संबंध में बौलीवुड के अनेक कलाकारों से भी पूछताछ की. लेकिन उन्होंने सुपरस्टार शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को गिरफ्तार कर जता दिया कि...

बाद पिछले साल नवंबर में जब वह अपने 5 अफसरों के साथ देर रात गोरेगांव में केरी मेंडिस नामक ड्रग पैडलर को पकड़ने जा रहे थे, तब उन पर लगभग 60 ड्रग पैडलरों ने जानलेवा हमला किया था.

यह भी माना जाता है कि फिल्मी दुनिया को ड्रग सप्लाई करने का मुख्य चेन यही गैंग है. मुंबई पुलिस को साथ ले कर बाद में उन्होंने केरी मेंडिस को गिरफ्तार किया था.

41 वर्षीय समीर वानखेडे फिल्म और क्रिकेट के बेहद शौकीन हैं. पर इस क्षेत्र में जो गंदगी घुसी है, उस के खतरनाक सूत्रधारों से उन्हें बेहद नफरत है.

एयरपोर्ट पर भी नहीं बख्शा किसी को

मुंबई एयरपोर्ट पर जब वह डिप्टी कमिश्नर बन कर आए तो उन्होंने अपने साथ काम करने वाले छोटे से छोटे कर्मचारी से कह दिया था कि एयरपोर्ट पर कोई भी सेलिब्रेटी आए तो उस का आटोग्राफ या उस के साथ सेल्फी कतई नहीं लेना है.

उस से प्रभावित हुए बिना सामान्य यात्री की अपेक्षा अधिक शक की नजरों से उन के सामान को, उन के पहने हुए गहनों को, एसेसरीज को चैक करना है.

बिल मांगने और शंका होने पर जरा भी दबाव में आए बगैर उन्हें अलग केबिन में ले जा कर पूछताछ करनी है. अगर कस्टम ड्यूटी भरने की बात आए तो दंड के साथ वसूल करनी है.

एयरपोर्ट पर नियम है कि हर यात्री को अपना सामान खुद ही ट्रौली में रख कर एयरपोर्ट से बाहर निकलना होता है. सेलिब्रिटी या रौबदार यात्री अपना सामान अपने साथ यात्रा करने वाले अपने व्यक्तिगत स्टाफ को सौंप कर बाहर निकलते हैं.

समीर वानखेडे ने सेलिब्रिटीज के लिए भी नियम बना दिया कि सेलिब्रिटी भी अपना सामान अपने साथ ले कर एयरपोर्ट के हर एग्जिट पौइंट से निकलेंगे.

कभीकभी यह होता था कि सेलिब्रिटी अपने असिस्टैंट के नाम पर शंकास्पद सामान, यह कह कर खुद को निर्दोष साबित करने की चालाकी करते थे कि यह असिस्टैंट का बैग है. समीर वानखेडे ने इस पर रोक लगा दी थी.

एक बार एक बड़े क्रिकेटर और उस की पत्नी तथा एक फिल्म स्टार ने एयरपोर्ट पर पूछताछ के दौरान वानखेडे से अपमानजनक भाषा में बात करते हुए बहस करने के साथ धमकी दी थी कि उन के सीनियर को फोन कर के उन की नौकरी खतरे में डाल देंगे.

तब समीर वानखेडे ने उन से सख्त शब्दों में कहा था कि इस समय एयरपोर्ट पर सब से सीनियर अधिकारी वह खुद ही हैं. अगर आप ने सहयोग नहीं किया तो मैं तत्काल आप को गिरफ्तार कर सकता हूं. वानखेडे के इतना कहने के बाद सारे सेलिब्रिटी बकरी बन कर उन का सहयोग करने लगे थे.

एक्शन में समीर वानखेडे की टीम

एक बार ऐसा हुआ था कि साउथ अफ्रीका से एक क्रिकेटर भारत खेलने आया था. रात 3 बजे उस की फ्लाइट मुंबई एयरपोर्ट पर उतरी. सामान क्लीयरेंस काउंटर पर साउथ अफ्रीका के उस क्रिकेटर ने समीर वानखेडे को फोन देते हुए कहा था कि 'भारत की टीम का बहुत ही सीनियर क्रिकेटर इस पर लाइन पर है और आप से बात करना चाहता है.'

फिल्म अभिनेत्री से की शादी

भारत के उस क्रिकेटर, जिस के देश में करोड़ों प्रशंसक हैं और समीर वानखेडे खुद भी उस के प्रशंसक हैं, उस ने फोन पर कहा था कि 'साउथ अफ्रीका से आया क्रिकेटर मेरा दोस्त है. वह वाइन की 18 बोतलें ले कर आया है. इसे ड्यूटी के झंझट से मुक्त कर के एयरपोर्ट के बाहर जाने दीजिए.'

तब समीर वानखेडे ने कुछ कहे बगैर फोन रख दिया था. वाइन की 18 बोतलों में से नियम के अनुसार वाइन की 2 बोतलों की ड्यूटी छोड़ कर बाकी की 16 बोतलों पर ड्यूटी वसूल की थी. साउथ अफ्रीका के क्रिकेटर को झेंपते हुए वह ड्यूटी उसी समय भरनी पड़ी थी.

समीर वानखेडे के अनुसार अजय देवगन एक मात्र ऐसे अभिनेता हैं, जो सचमुच प्रामाणिक आदमी हैं. कभी टैक्स न भरने की वजह नहीं बताते और न ही धौंस जमाते हैं. वह सचमुच सिंघम जैसे ही वास्तविक जीवन में भी हैं. उसी तरह मराठी अभिनेत्री क्रांति रेडकर की भी इमेज थी.

एयरपोर्ट पर आनेजाने के दौरान ही अभिनेत्री क्रांति रेडकर उन के दिल को भा गई थीं और ऐसी ही लड़की से उन्हें विवाह करने की इच्छा हुई थी. उन्होंने क्रांति से दोस्ती की और उस से विवाह की बात की तो क्रांति सहर्ष तैयार हो गई. सन 2017 में दोनों ने विवाह कर लिया.

क्रांति भी मुंबई में ही पैदा हुई हैं. इस बात की कम ही लोगों को जानकारी है कि समीर की पत्नी क्रांति रेडकर एक मशहूर अभिनेत्री हैं.

पत्नी क्रांति रेडकर के साथ समीर वानखेडे

क्रांति ने अजय देवगन के साथ फिल्म 'गंगाजल' में काम किया था. इस के अलावा वह कई टीवी सीरियलों में भी काम कर चुकी हैं. क्रांति ने हिंदी फिल्मों की अपेक्षा मराठी फिल्मों और सीरियलों में ज्यादा काम किया है. इस के अलावा उन्होंने अंगरेजी फिल्मों में काम करने के साथसाथ निर्देशन की भी कोशिश की है.

मुंबई एयरपोर्ट के बाद समीर वानखेडे की पोस्टिंग महाराष्ट्र सर्विस टैक्स डिपार्टमेंट में हुई थी. उस समय महाराष्ट्र राज्य के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ था कि कर चोरी में 200 सेलिब्रिटीज सहित 2500 बड़े लोगों के खिलाफ जांच शुरू हुई थी.

एनआईए में भी किए ये अच्छे काम

2 सालों में उन्होंने सर्विस टैक्स की चोरी के 87 करोड़ रुपए अकेले मुंबई से वसूल किए थे. उन के कामों को ही देखते हुए ही पहले उन्हें आंध्र प्रदेश फिर दिल्ली भेजा गया था.

नैशनल इनवैस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) में भी उन की पोस्टिंग हुई थी. आतंकवादी हमले की योजना का खुलासा करने वाली जानकारी उन्होंने एंटी टेरर विभाग को देनी थी. इस दौरान उन्होंने कई जानकारियां किस तरह दीं, यह गुप्त रखा गया है.

इस के बाद समीर वानखेडे को बौलीवुड में ड्रग रैकेट खत्म करने की जिम्मेदारी के साथ नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जोनल डायरेक्टर के रूप में पोस्टिंग दी गई.

सुशांत सिंह राजपूत की रहस्यमय मौत में ड्रग एंगल उन्हें दिखाई दिया तो उन्होंने रिया चक्रवर्ती, दीपिका पादुकोण, सारा अली, रकुल प्रीत सिंह सहित कई अभिनेत्रियों को पूछताछ के लिए अपने औफिस में बुलाया.

इस के बाद बौलीवुड में तहलका मच गया. 100 से अधिक ड्रग पैडलरों को उन्होंने जेल में डाला है. 25 से अधिक हस्तियां जमानत पर हैं.

वह देश के करोड़ों लोगों को यह संदेश देने में कामयाब हुए हैं कि आप जिन्हें पूजते हैं, वे स्टार्स, सेलिब्रिटी कितने दंभी, देशद्रोही और आपराधिक चेहरे वाले हैं.

ड्रग का रैकेट चलाने वाले भारत के ही दुश्मन देशों या गैंगस्टरों से जुड़े हुए हैं और उन से तमाम स्टार्स जुड़े हैं.

समीर ने अपनी पत्नी या परिवार के हर सदस्य से कह रखा है कि उन के नाम से आने वाली कोई भी पार्सल उन की गैरमौजूदगी में न लिया जाए. क्योंकि उन्हें घूस लेने के आरोप में फंसाने का षडयंत्र उन के दुश्मन कभी भी रच सकते हैं.

समीर और उन की पत्नी क्रांति को जिया और ज्यादा नाम की 2 जुड़वां बेटियां हैं.

कौमेडी कलाकार भारती के घर से भी की थी ड्रग बरामद

ऐसा नहीं है कि समीर वानखेडे सनसनी फैलाने वाले मेगा स्टार्स को ही पकड़ कर हीरो बनना चाहते हैं. उन्होंने टीवी कौमेडी शो की कलाकार भारती सिंह के घर छापा मार कर ड्रग बरामद किया था. भारती सिंह और उस का पति इस समय जमानत पर हैं.

समीर का काम देर रात के बाद का ही है, इसलिए वह मात्र 2 घंटे ही सो पाते हैं. कभी भी उन पर जानलेवा हमला हो सकता है, फिर भी वह अपने फर्ज में पीछे नहीं हटते. नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जोनल डायरेक्टर के रूप में उन की पोस्टिंग को 2 साल से अधिक हो गए हैं. इस दौरान उन्होंने 17 हजार करोड़ का ड्रग पकड़ा है.

पिछले एक साल में उन्होंने 105 से अधिक मुकदमे दर्ज करा कर 300 से अधिक गिरफ्तारियां की हैं. जिन में से गिनती के 4-5 मामले ही बौलीवुड के हैं. इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि वह मात्र बौलीवुड को ही टारगेट करते हैं. पर मात्र बौलीवुड के मामले ही पब्लिसिटी पाते हैं.

आर्यन की गिरफ्तारी के 2 दिन पहले ही उन के विभाग ने 5 करोड़ की ड्रग के साथ कुछ लोगों को पकड़ा था, तब मीडिया का ध्यान उन की ओर नहीं गया. अब तक उन की टीम के द्वारा करीब एक दरजन गैंगों को पकड़ा गया है.

समीर वानखेडे तो अपना काम पूरी ईमानदारी, हिम्मत और प्राथमिकता से कर रहे हैं. कोर्ट में केस किस तरह कमजोर हो जाता है, इस की हताशा उन्होंने कभी अपने काम पर नहीं आने दी है. वह तो अपने लक्ष्य पर लगे रहते हैं. ●

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

शादी के जोड़े में अनीश चौधरी और दीप्ति मिश्र: अंतरजातीय विवाह करने की मिली सजा

मोहब्बत के दुश्मन

हमारा समाज चाहे कितना भी विकसित हो गया हो लेकिन अधिकांश लोगों की सोच अभी भी संकुचित है. जब ग्राम पंचायत अधिकारी दीप्ति ने अपने ही समकक्ष अधिकारी अनीश से अंतरजातीय विवाह कर लिया तो उस के घर वाले मोहब्बत के ऐसे दुश्मन बन गए कि...

❑ शाहनवाज

'प्यार की कोई उम्र नहीं होती, कोई मजहब नहीं होता, कोई जात नहीं होती. प्यार तो प्यार होता है, बस हो जाता है.' इस तरह की बातें आप ने भी फिल्मों में खूब सुनी होंगी या हो सकता है ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भी किया हो. लेकिन क्या हमारे समाज में इन बातों की वास्तविकता पर यकीन किया जा सकता है या फिर ये केवल फिल्मों तक ही सीमित हैं?

आज भी हमारे समाज में ऐसे क्रूर लोग मौजूद हैं जिन्हें 'प्रेम' शब्द से चिढ़ है. प्यार करने पर समाज के कुछ लोग धर्म, जात, वर्ग इत्यादि चीजों को ध्यान में रख कर प्यार करने वालों को अलग करने के लिए हर हद पार कर देते हैं.

यहां तक कि जिन बच्चों को वह जीवन भर प्यार करते हैं, जिन की खुशी के लिए परिवार वाले कुछ भी कर सकते हैं, उन्हें ही अपना पार्टनर चुनने की इतनी भयानक सजा दे देते हैं, जिसे सुन कर रूह कांप जाती है. ऐसी ही एक घटना उत्तर प्रदेश के गोरखपुर की है.

यह साल था 2015 का जब गोरखपुर के उनौली गांव के रहने वाले अनीश चौधरी (34) का उरूवा ब्लौक औफिस में ग्राम पंचायत अधिकारी के पद पर चयन हुआ था.

गोरखपुर के दीन दयाल उपाध्याय यूनिवर्सिटी में प्राचीन इतिहास में पोस्ट ग्रैजुएशन की पढ़ाई कर चुके अनीश बहुत मेहनती था. वह खुद के दम पर कुछ बनना चाहता था और उसी के लिए वह दिनरात मेहनत करता था.

तरहतरह की सरकारी नौकरियों के फौर्म भरना, एग्जाम देना, इंटरव्यू की तैयारी करना, उस के हर दिन के जीवन का हिस्सा थी जोकि ग्राम पंचायत अधिकारी बनने के बाद उन का यह सपना पूरा हो गया था.

अनीश के गांव में दलितों की आबादी बहुसंख्यक थी. वह

छायांकनः मौडलिंग

खुद भी दलित समुदाय से था. लेकिन अनीश की माली हालत गांव में अन्य दलितों से काफी बेहतर थी.

अनीश बना ग्राम पंचायत अधिकारी

अनीश संपन्न परिवार का हिस्सा थे. उस के पिता और चाचा बैंकाक और मलेशिया में रह कर काम करते थे. साल-2 साल में अनीश के पिता कुछ दिनों के लिए घर आते थे और फिर काम से चले जाते थे. उन्होंने अनीश के लिए किसी तरह की कोई कमी नहीं रखी थी. अनीश के बड़े भाई, अनिल चौधरी भी उरूवा ब्लौक औफिस में कर्मचारी थे.

ग्राम पंचायत अधिकारी के पद पर चयन होने के बाद अनीश की खुशी का ठिकाना नहीं था. जब अनीश ने यह बात अपने पिता को फोन कर बताई तो उस के पिता बेहद खुश हुए और अनीश को जल्द ही घर वापस आने का भरोसा दिलाया. अनीश के अधिकारी बनने की खुशी पूरे गांव को थी.

अनीश ने अपनी खुशी का खुल कर इजहार भी किया. वह अपने गांववासियों के लिए बहुत कुछ करना चाहता था और जल्द ही उन की सेवा में व्यस्त हो जाना चाहता था. चयन के बाद अनीश अब प्रशासन से काल लैटर का इंतजार करने लगा, जिसे घर आने में ज्यादा समय नहीं लगा.

चयन किए जाने के अगले ही महीने अनीश और अन्य चुने हुए अधिकारियों को ट्रेनिंग के लिए ब्लौक औफिस में बुलाया गया. ट्रेनिंग के पहले दिन अनीश सुबह के 8 बजे तैयार हो कर ब्लौक औफिस पहुंचा. उस समय तक कुछ और लोग औफिस के मुख्य हाल में इकट्ठे हुए थे.

रिपोर्टिंग का टाइम सुबह साढ़े 8 बजे था तो अनीश को वक्त बरबाद करना ठीक नहीं लगा. अनीश ने हाल में मौजूद हर किसी से हाथ मिलाया और जानपहचान बढ़ाने के लिए उन से बातचीत की.

करीब 10 मिनट के बाद हाल के गेट से एक महिला अधिकारी अंदर आई. वह भी हाल में मौजूद अन्य अधिकारियों की तरह ही थी. उस का भी चयन हुआ था.

> अस्पताल से फारिग होते ही पुलिस गोपलापुर चौराहा पर उस जगह पहुंची, जहां घटना घटी थी. पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया. मौके पर फैला खून जम चुका था, जिस पर ढेर सारी मक्खियां भिनभिना रही थीं.

उस का नाम दीप्ति मिश्र (24) था. दीप्ति गोरखपुर में देवकली धर्मसेन गांव की रहने वाली थी. समाजशास्त्र से एमए की पढ़ाई कर चुकी दीप्ति का सिलेक्शन कौड़ीराम ब्लौक औफिस में ग्राम पंचायत अधिकारी के तौर पर हुआ था. यही नहीं, दीप्ति ने भी दीन दयाल उपाध्याय यूनिवर्सिटी से अपनी एमए की पढ़ाई की थी.

अनीश ने दीप्ति को देखा तो वह उसे पहचान गया था. कालेज के कैंपस में अकसर अनीश ने दीप्ति को घूमते हुए देखा था, कभी कैंटीन में तो कभी क्लास करते हुए. लेकिन कालेज के दिनों में उस ने कभी दीप्ति से मुलाकात या बातचीत नहीं की थी. उस की एक वजह यह थी कि अनीश का विषय कुछ और था और दीप्ति का कुछ और.

दीप्ति जब गेट से अंदर आ रही थी तो अनीश की नजर उस पर पड़ी. अनीश को दीप्ति का चेहरा जानापहचाना लगा. अनीश ने अपने दाएं हाथ में पकड़े प्लास्टिक के पानी के गिलास को टेबल पर रखा और घूम कर कमरे के अंदर प्रवेश करती हुई दीप्ति की ओर आगे बढ़ा.

काफी देर तक सोचने के बाद अनीश को याद आ गया था और वह दीप्ति को पहचान गया. दीप्ति कमरे में मौजूद पीछे की एक खाली कुरसी पर जा कर बैठी थी तो अनीश भी उस के पास गया और एक कुरसी छोड़ उस के बगल में जा कर बैठ गया और बोला, ''हैलो.''

अनीश की बात का जवाब देते हुए दीप्ति ने उस की ओर देखा और बोली, ''हाय.''

अनीश का चेहरा देखते ही दीप्ति को भी अचानक से याद आ गया था कि हैलो बोल रहा यह शख्स कौन है. इस से पहले कि अनीश आगे कुछ कहता, दीप्ति ने उस से सवाल कर लिया, ''अरे, आप तो शायद दीन दयाल उपाध्याय कालेज में थे न?''

अनीश ने दीप्ति के सवाल का जवाब देते हुए कहा, ''जी, आप ने बिलकुल सही पहचाना. मैं ने भी उसी कालेज से पढ़ाई की थी. आप जब हाल में एंटर हुईं, तभी से ही मैं सोच में पड़ गया था कि आप को कहां देखा है. और देखिए आप ही ने मुझे भी पहचान लिया.''

यह सुन कर दीप्ति हंस पड़ी और दीप्ति

सड़क पर फैले खून के निशान, जो कई दिनों तक साफ दिखाई देते रहे.

अनीश की फोटो लिए उस की यादों में खोई दीप्ति

को हंसता हुआ देख अनीश भी मुसकरा दिया. ऐसे ही करिअर, पढ़ाई इत्यादि की बातें करतेकरते कब साढ़े 8 बज गए, दोनों को पता ही नहीं चला.

कमरे में सूट पहन कर कुछ उच्च अधिकारी आए और अपने रुटीन कामों की तरह वह सब के नाम परिचय इत्यादि लेने लगे. इस तरह से अनीश और दीप्ति की जानपहचान हुई.

अब क्योंकि अनीश और दीप्ति दोनों ही ब्लौक औफिस में ग्राम पंचायत अधिकारी थे तो उन का साथ में उठनाबैठना सामान्य हो गया था. पूरी ट्रेनिंग के दौरान अनीश और दीप्ति एकदूसरे के साथ ही रहे. ट्रेनिंग के बाद जब दोनों आधिकारिक रूप से अपनेअपने ब्लौक में काम करने लगे तो भी दोनों का साथ उठनाबैठना होने लगा था.

अनीश के उरूवा ब्लौक औफिस से दीप्ति के कौड़ीराम ब्लौक औफिस के बीच मात्र एक घंटे की ही दूरी थी. अनीश और दीप्ति दोनों की जानपहचान कुछ ही समय में दोस्ती में बदल गई थी. दोनों साथ में औफिस आनेजाने लगे. दोनों ही घंटों फोन पर बातचीत करने लगे.

देखते ही देखते उन के बीच की नजदीकियां भी बढ़ने लगी. वे दोनों अकसर औफिस के अलावा भी एकदूसरे से मिलते थे. अनीश और दीप्ति दोनों ही एकदूसरे को करीब से जानना चाहते थे.

दोनों अधिकारी दिलोदिमाग से चाहने लगे एकदूसरे को

ब्लौक औफिस से छुट्टी के समय दोनों यूं ही घूमने के लिए निकल जाया करते. छुट्टी वाले दिन भी दोनों घर पर नहीं बैठते थे बल्कि अपने गांव से दूर घूमने निकल जाते और साथ वक्त गुजारते थे. उन की दोस्ती वक्त के साथ प्यार में बदलने लगी थी.

लेकिन ऐसे ही एक दिन जब अनीश और दीप्ति औफिस से शाम को छुट्टी के बाद साथसाथ घर जा रहे थे तो दीप्ति के एक रिश्तेदार ने दोनों को देख लिया और दीप्ति की शिकायत उस के घर पर कर दी.

शुरुआत में तो दीप्ति के घरवालों ने उसे रोकाटोका नहीं, लेकिन अंदर ही अंदर वे अनीश के बारे में पता लगाने लगे. दीप्ति अपने घर में सब से छोटी बेटी थी.

दीप्ति का बड़ा भाई अभिनव यूपी पुलिस में कांस्टेबल था. जब अभिनव को दीप्ति के किसी से संबंध होने की जानकारी घरवालों से मिली तो उस ने अपने सूत्रों के जरिए अनीश के बारे में पता लगवाया.

अभिनव को जब यह पता चला कि उस की बहन दीप्ति का संबंध किसी दलित जाति के लड़के से है तो उस ने यह बात अपने घरवालों को बताई. उस दिन मिश्र परिवार में इस बात को ले कर खूब झगड़ा भी हुआ.

परिवार वालों ने दीप्ति का फोन उस से छीन लिया, उस के आनेजाने पर लगातार नजर रखने लगे. यहां तक कि दीप्ति जब औफिस जाती तो उस के पिता नलिन कुमार मिश्र, उस के साथ जाने लगे और घर वापस आते समय दीप्ति को साथ घर ले कर आने लगे.

दीप्ति पर उस के घरवाले इस तरह से निगरानी रखने लगे जैसे कि उस ने प्यार कर के बहुत बड़ा गुनाह कर दिया हो.

इस बात की जानकारी अनीश को लग चुकी थी कि दीप्ति को किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है. उन के बीच बातचीत अचानक से खत्म हो गई थी. दीप्ति जब अपने कौड़ीराम ब्लौक औफिस पहुंचती तो वहां मौजूद अन्य कर्मचारियों के फोन से अनीश को फोन करती और उसे अपने साथ हो रहे जुल्मोसितम के बारे में बताती.

शुरुआत में तो अनीश ने दीप्ति को धैर्य रख कर काम करने के लिए कहा, लेकिन कुछ दिनों के बाद जब दीप्ति को अनीश से दूरी बरदाश्त नहीं हुई तो उस ने अनीश को उस से शादी कर लेने के लिए कहा.

घर वालों की मरजी के बिना कर ली शादी

एक दिन फोन पर बात करते हुए दीप्ति ने अनीश से कहा, ''देखो अनीश, मुझे पता है कि मेरे घरवाले हम दोनों के इस रिश्ते से खुश नहीं हैं, लेकिन मुझे यह जरूर पता है कि वह अपनी मुझ से बहुत प्यार करते हैं. हो सकता है कि ये कुछ समय की नाराजगी हो लेकिन ये नाराजगी जल्द ही खत्म हो जाएगी.''

अनीश ने दीप्ति की बातों को बड़े ध्यान से सुना और कहा, ''तुम कह तो ठीक रही हो लेकिन अगर तुम्हारे घरवालों ने हमारी शादी के बाद हमारे रिश्ते को नहीं माना तो बड़ी मुसीबत हो जाएगी.''

''नहीं ऐसा नहीं होगा. एक बार हम ने शादी कर ली तो थोड़ी देर ही सही लेकिन वो

HEMODEX®

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्वीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उस से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®
STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे ऊकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, ऑव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर-एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD. • CALL : 9431237784, 8987383154

हमारे इस रिश्ते को मंजूरी दे ही देंगे. और इस के अलावा हमारी शादी हो गई तो कानूनी तरीके से मेरे घरवाले मेरी कहीं और शादी नहीं कर सकते.'' दीप्ति ने जवाब दिया.

यह सुन कर अनीश को दीप्ति की बातों में दम नजर आया. उस ने कुछ देर सोचा और दीप्ति की शादी की बात को मंजूरी दे दी. इस के कुछ दिनों बाद दीप्ति ने योजना के मुताबिक अपने घरवालों को चकमा दे कर 12 मई, 2019 को अनीश से कोर्टमैरिज कर ली.

कोर्ट मैरिज के बाद दोनों ने चैन की सांस तो ली. लेकिन उन्हें नहीं पता था कि उन का सुखचैन शादी के बाद छिनने वाला है. 9 दिसंबर, 2019 को अदालत ने दीप्ति और अनीश की शादी को मंजूरी दे दी.

अनीश के चाचा देवीदयाल जो भतीजे को बचाने में घायल हो गए

इस का मतलब यह था कि अब दीप्ति और अनीश कानूनी तरीके से एकदूसरे से पतिपत्नी के बंधन में बंध चुके थे.

अदालत की मंजूरी के बाद दीप्ति के घर वालों को उन की शादी के कुछ दिनों के बाद ही उन की कोर्ट मैरिज का पता लग गया था. जिस के बाद उस के घरवालों ने दीप्ति को मानसिक रूप से प्रताड़ित करना शुरू कर दिया.

शादी के बाद मिश्र परिवार ने दीप्ति को अनीश की जान की धमकियां देने लगे थे. वह दीप्ति से कहते, ''तूने जो गलती कर ली सो कर ली, अभी भी समय है उसे तलाक दे और इस रिश्ते से छुटकारा पा ले, वरना हम ही तुझे इस रिश्ते से छुटकारा दिला देंगे.''

यह सुन कर दीप्ति खौफ के साए में अपनी जिंदगी गुजारने को मजबूर हो गई थी. हालांकि वह हर दिन औफिस जाती लेकिन उस के मन में अनीश को ले कर डर हमेशा रहने लगा था.

दीप्ति के घर वालों ने दी धमकी

अनीश भी दीप्ति को ले कर हर समय चिंता करने लगा था. अनीश को इस बात का डर सताने लगा था कि दीप्ति के घर वाले उस

भतीजे अनीश पर हमला होते देख चाचा देवी दयाल हमलावरों से भिड़ गए. अपनी जान की परवाह किए बिना उन्होंने भतीजे पर हमला करने वाले एक नकाबपोश को धर दबोचा. यह देख कर नकाबपोश हड़बड़ा गया और उन से छूटने के लिए देवी दयाल के सीने पर प्रहार कर दिया.

के साथ कुछ गलत न कर दें. वे दोनों एकदूसरे की चिंता में खोने लगे थे, जिस का असर उन के काम पर भी पड़ने लगा था. वे हर समय एकदूसरे के बारे में सोचते और एकदूसरे के करीब आना चाहते थे.

शादी का पता लगने के बाद दीप्ति को उस के घरवालों द्वारा काफी प्रताड़ित किया जाने लगा. ये प्रताड़ना अकसर मानसिक हुआ करती थी. कभी उस की मां जानकी देवी बीमार होने का नाटक करती तो कभी उस के पिता. उस के पिता अकसर उस के सामने दिल का अटैक आने की नाटकं करते और अनीश से तलाक ले लेने को कहते थे. जब दीप्ति अपने घरवालों की बात नहीं मानती तो वे अनीश को जान से मार देने की धमकियां देते थे. दीप्ति के घर वाले उसे दलित समुदाय के लड़के से शादी करने के चलते दीप्ति को कलंक समझते थे.

अनीश का भाई अनिल चौधरी

वह दीप्ति को अकसर कहते थे, ''तूने हमारे परिवार की, खानदान की, ब्राह्मणों की नाक कटा दी है. तुझ जैसी कलंक का पहले पता होता तो तुझे हम ने कोख में ही मार दिया होता.''

इसी बीच फरवरी, 2021 की शुरुआत में नलिन मिश्र ने अनीश पर अपनी बेटी के बलात्कार करने का आरोप लगाया. यह जान कर दीप्ति को इतना आश्चर्य हुआ कि उस के पिता अपनी बेटी के साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं. लेकिन उन दिनों दीप्ति के घरवालों ने उस को इतना प्रताड़ित किया, उस पर इतना दबाव बनाया कि दीप्ति को अनीश के खिलाफ बयान देना पड़ा.

फिर दीप्ति चली गई अनीश के घर

लेकिन जब अनीश की गिरफ्तारी की नौबत आई तो 20 फरवरी, 2021 को दीप्ति एक बार फिर से अपने घर वालों को चकमा दे कर अनीश के साथ रहने के लिए उस के घर आ गई. दीप्ति के घरवालों ने फिर भी हार नहीं मानी.

उन्होंने स्थानीय पुलिस को अनीश के खिलाफ दीप्ति का अपहरण करने की रिपोर्ट दर्ज करवाई. जिस के बाद अनीश और दीप्ति दोनों ने मिल कर सोशल मीडिया पर एक वीडियो बना कर पोस्ट भी किया, जो वायरल हो गया.

उस वीडियो में दीप्ति ने बताया कि उस का अपहरण नहीं हुआ है और वह अपनी मरजी से अनीश के साथ रह रही है और दोनों ने शादी कर ली है.

कुछ महीनों तक दोनों ने जिंदगी साथ में गुजारी. साथ में काम पर जाते, साथ में काम से वापस आते. लेकिन दोनों के मन से डर का

साया कम नहीं हुआ था. इस को ध्यान में रखते हुए अनीश के पिता ने दोनों को सार्वजनिक रूप से शादी करने का उपाय बताया.

उन्होंने उन से कहा कि अगर वे सार्वजनिक तरीके से शादी कर लेंगे तो हो सकता है कि वो लोग उन की शादी को स्वीकार कर लें. उन की बातों का सम्मान करते हुए दोनों ने 28 मई, 2021 के दिन गोरखपुर के महादेव झारखंडी मंदिर में शादी कर ली.

मंदिर में शादी करने के बाद अनीश के घरवालों ने दोनों के लिए गोरखपुर में अवंतिका होटल में एक बड़ा रिसैप्शन भी रखा. इस रिसैप्शन में सिर्फ अनीश के घरवाले और रिश्तेदार ही मौजूद थे. दीप्ति के घर से न तो मंदिर में शादी के समय कोई आया और न ही रिसैप्शन में कोई आया.

शादी और रिसैप्शन के बाद कुछ दिन ऐसे ही गुजर गए. दीप्ति के घरवालों की तरफ से अब न तो धमकी भरे फोन आते थे और न ही वे दीप्ति को परेशान करते थे.

लेकिन यह बड़ा तूफान आने से पहले की शांति थी. शादी के बाद अनीश के दिलोदिमाग से डर धीरेधीरे कम होने लगा. अनीश पहले के मुकाबले लापरवाह हो गया और बेफिक्री के साथ घूमनेफिरने लगा.

इस चीज को ले कर दीप्ति ने अनीश को कई बार आगाह भी किया था लेकिन अनीश पर उस की इन बातों का असर नहीं होता था. अनीश को लगता था कि यह अपना ही इलाका है तो यहां कोई खतरा नहीं है, लेकिन यह लापरवाही भारी पड़ी.

अनीश पर किया हमला

24 जुलाई, 2021 के दिन अनीश और उस के चाचा देवी दयाल, जोकि उरूवा ब्लौक में ही तैनात ग्राम विकास अधिकारी थे, दोनों दोपहर को गोला थाना क्षेत्र के गोपलापुर चौराहा स्थित पंकज ट्रेडर्स हार्डवेयर की दुकान पर हिसाब करने निकले थे.

दरअसल, अनीश पर दुकान का कुछ उधार बकाया था. वही उधार चुकता करने हार्डवेयर की दुकान पर दोनों आए थे. दुकान मालिक

घटना की सूचना गोला थाने के थानेदार सुबोध कुमार को मिली तो वह फोर्स सहित अस्पताल पहुंच गए

हिसाब अभी तैयार कर ही रहा था तभी अनीश के मोबाइल पर एक काल आ गई.

काल रिसीव करते हुए अनीश चाचा को इशारे से हिसाब देखने को कहते हुए दुकान से बाहर निकल गया और सड़क के एक किनारे बात करने में मशगूल हो गया. तभी साए की तरह उस के पीछे पीछे चाचा देवी दयाल भी बाहर निकल आए और कुछ दूरी पर खड़े भतीजे की निगरानी करने लगे.

उसी समय दूसरी तरफ से तेजी से 2 बाइक आ कर अनीश के पीछे रुकीं. दोनों बाइक पर 2-2 नकाबपोश युवक सवार थे. एक बाइक पर पीछे बैठे नकाबपोश ने अपने कमर में पीछे खोंस रखा धारदार दतिया निकाला और फिल्मी स्टाइल में अचानक अनीश के सिर, गले और सीने पर ताबड़तोड़ कई वार कर दिए.

भतीजे अनीश पर हमला होते देख चाचा देवी दयाल हमलावरों से भिड़ गए. अपनी जान की परवाह किए बिना उन्होंने भतीजे पर हमला करने वाले एक नकाबपोश को धर दबोचा.

यह देख कर नकाबपोश हड़बड़ा गया और उन से छूटने के लिए देवी दयाल के सीने पर प्रहार कर दिया. अचानक हुए हमले से देवी दयाल पल भर के लिए गश खा कर जमीन पर गिर गए. कुछ पलों बाद जब उठे तो नकाबपोश ने उन पर फिर से पलटवार किया. तब तक चीखपुकार तेज हो गई थी.

देवी दयाल की चीख सुन कर पासपड़ोस के दुकानदार शोर मचाते हुए बाहर निकले. पब्लिक को बदमाशों ने अपनी ओर आते हुए देखा तो चौंकने हो गए और जिधर से आए थे, मौके पर हथियार फेंक कर उसी दिशा में फरार हो गए.

> पुलिस ने 4 आरोपियों मणिकांत मिश्र, विवेक तिवारी, अभिषेक तिवारी और सन्नी सिंह को गिरफ्तार कर लिया. एएसपी (साउथ) अरुण कुमार सिंह ने एक प्रैसवार्ता आयोजित कर 4 आरोपियों को गिरफ्तार करने की जानकारी दी और कहा कि जल्द ही बाकी के आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा.

दीप्ति ने अपने ही घर वालों के खिलाफ लिखाई रिपोर्ट

इधर अचानक हुए हमले से अनीश डर गया था. गंभीर रूप से घायल वह हवा में लहराते हुए किसी कटे पेड़ की तरह जमीन पर धड़ाम से गिरा.

आननफानन में लोगों ने अनीश और देवी दयाल को टैंपो में लाद कर गोला स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, जहां

आरोपियों मणिकांत मिश्र, विवेक तिवारी, अभिषेक तिवारी और सन्नी सिंह की गिरफ्तारी के बाद प्रैस कौन्फ्रेंस करते एएसपी (साउथ) अरुण कुमार सिंह

डाक्टरों ने अनीश को देखते ही मृत घोषित कर दिया.

भतीजे की मौत की खबर सुनते ही देवी दयाल की हालत और बिगड़ गई. घबराहट के मारे उन की सांसों की रफ्तार और तेज हो गई. यह देख डाक्टर भी घबरा गए और उन्हें बाबा राघवदास (बीआरडी) मैडिकल कालेज, गुलरिहा रेफर कर दिया.

अनीश की हत्या की खबर मिलते ही इलाके में सनसनी फैल गई थी. जैसेजैसे उस के शुभचिंतकों को जानकारी हुई, वैसेवैसे कुछ घटनास्थल तो कुछ अस्पताल पर जुटते गए. उधर दिल दहला देने वाली घटना की सूचना गोला थाने के थानेदार सुबोध कुमार को मिल चुकी थी. घटना की सूचना मिलते ही वह फोर्स सहित अस्पताल पहुंच गए और अस्पताल को पुलिस छावनी में बदल दिया ताकि कोई अप्रिय घटना न घट सके.

सूचना पा कर थोड़ी ही देर में वहां तत्कालीन एसएसपी दिनेश कुमार प्रभु, एसपी (दक्षिणी) अरुण कुमार सिंह और सीओ गोला अंजनि कुमार पांडेय भी पहुंच गए थे. पुलिस अधिकारियों ने शव का निरीक्षण किया. सिर, गले और सीने पर किसी धारदार हथियार से ताबड़तोड़ हमला किया गया था. ज्यादा खून बहने से अनीश की मौत हुई थी.

पुलिस ने शव को अपने कब्जे में ले लिया और उसे पोस्टमार्टम के लिए बीआरडी मैडिकल कालेज, गुलरिहा भिजवा दिया. उस के बाद इंसपेक्टर सुबोध कुमार को कागजी कारवाई पूरी करतेकरते दोपहर के 2 बज गए थे.

अस्पताल से फारिग होते ही पुलिस गोपलापुर चौराहा पर उस जगह पहुंची, जहां घटना घटी थी. पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया. मौके पर फैला खून जम चुका था, जिस पर ढेर सारी मक्खियां भिनभिना रही थीं.

मौके से कुछ दूरी पर खून से सना एक धारदार हथियार गिरा पड़ा था, पुलिस ने उसे बतौर सबूत अपने कब्जे में लिया. मौके पर पहुंची फोरैंसिक टीम अपनी जांच में जुट गई.

दीप्ति की मां जानकी मिश्र

पुलिस ने अनीश की पत्नी दीप्ति चौधरी की तहरीर पर आईपीसी की धारा 302, 307, 506, 120बी एवं एससी/एसटी की धारा 3(2)(वी) के तहत मायके के 17 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया.

जिन में नलिन मिश्र (पिता), मणिकांत मिश्र (बड़े पापा यानी ताऊ), अभिनव मिश्र (भाई), अनुपम मिश्र (भाई), विनय, उपेंद्र, अजय, प्रियंकर, अतुल्य, प्रियांशु, राजेश, राकेश, त्रियोगी, नारायण, संजीव, विवेक तिवारी और सन्नी सिंह सहित 4 अज्ञात शामिल थे. घटना की जांच की जिम्मेदारी गोला के सीओ अंजनि कुमार पांडेय को सौंपी गई थी.

इस मामले में पुलिस ने 4 आरोपियों मणिकांत मिश्र, विवेक तिवारी, अभिषेक तिवारी और सन्नी सिंह को गिरफ्तार कर लिया. उन्हें गोला के दीडीहा क्षेत्र से गिरफ्तार किया था. इन चारों से पूछताछ की गई तो उन्होंने अपराध स्वीकार करते हुए अन्य आरोपियों के नाम भी बता दिए. पुलिस ने इन्हें अदालत में पेश कर जिला जेल भेज दिया.

28 जुलाई, 2021 को एएसपी (साउथ) अरुण कुमार सिंह ने एक प्रैसवार्ता आयोजित कर 4 आरोपियों को गिरफ्तार करने की जानकारी दी और कहा कि जल्द ही बाकी के आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा. कथा लिखने तक अन्य आरोपी गिरफ्तार नहीं हो सके थे. पुलिस उन्हें तलाश रही थी. ●

कानपुर, उत्तर प्रदेश

सिंदूर की आड़ में इश्क की उड़ान

❑ सुरेशचंद्र मिश्र
सहयोगी : जय कुमार मिश्र

छायांकन: मॉडलिंग

रीता यादव

बड़े भाई की दुर्घटना में हुई मौत के बाद शिवगोविंद ने 10 साल बड़ी भाभी रीता से शादी कर ली. अब रीता को अपनी घरगृहस्थी पर ध्यान देना चाहिए था, लेकिन उस ने पति के दोस्त दीपक के साथ इश्क की ऐसी उड़ान भरी कि...

ममता ने एक सरसरी नजर देवरानी के चेहरे पर डाली फिर उत्सुकता से पूछा, ''रीता, कई दिनों से देवरजी नहीं दिख रहे हैं, क्या वह कहीं बाहर गए हैं?''

''हां दीदी, वह शायद दिल्ली गए हैं काम की तलाश में.'' रीता ने जवाब दिया.

''तुम ने परिवार में किसी को बताया क्यों नहीं कि शिवगोविंद दिल्ली गया है?''

''दीदी वह मुझ से लड़झगड़ कर कर गए हैं. जेवरजट्टा भी साथ ले गए हैं. गुस्से में मैं ने किसी को कुछ नहीं बताया. लेकिन दीदी, मुझे उन की चिंता सता रही है.''

''तुम्हारी शिवगोविंद से फोन पर बात हुई?'' ममता ने पूछा.

''नहीं दीदी, उन से फोन पर बात तो नहीं हुई?'' रीता नजरें चुरा कर बोली.

''तुम अपना फोन मुझे दो. मैं अभी शिवगोविंद से बात करती हूं.'' ममता झुंझला कर बोली.

''दीदी मेरा फोन पानी में गिर गया था, जिस से वह बंद हो गया है.'' रीता ने जवाब दिया.

ममता पढ़ीलिखी सभ्य महिला थी. वह समझ गई कि रीता बात न कराने के लिए बहाने पर बहाने बना रही है. वह यह भी जान गई कि शिवगोविंद के गायब होने का रहस्य रीता के पेट में छिपा है, लेकिन वह बाहर नहीं लाना चाहती है.

अब ममता के मन में अनेक आशंकाएं उमड़नेघुमड़ने लगीं. वह सोचने लगी, 'कहीं रीता ने देवर के साथ कोई षडयंत्र तो नहीं रच डाला.'

ममता ने अपनी आशंकाओं से पति बालगोविंद को अवगत कराया तो उन का कलेजा कांप उठा. बालगोविंद ने भाई की खोज हर संभावित स्थान पर की, लेकिन उस

का कहीं कुछ पता नहीं चल पा रहा था. फोन भी उस का बंद था. उस के यारदोस्त भी कुछ नहीं बता पा रहे थे.

ममता व उस के पति बालगोविंद की समझ में नहीं आ रहा था कि शिवगोविंद को जमीन निगल गई या आसमान.

आखिरकार जब शिवगोविंद का कुछ भी पता नहीं चला तो उस ने 10 जून, 2021 की सुबह 9 बजे गुमशुदगी दर्ज कराने अकबरपुर कोतवाली जा पहुंचा.

थानाप्रभारी तुलसीराम पांडेय उस समय थाने पर मौजूद थे. बालगोविंद ने उन्हें अपना परिचय दिया, ''सर, मेरा नाम बालगोविंद यादव है. मैं बलिहारा गांव में रहता हूं. मेरा छोटा भाई शिवगोविंद 6 जून से घर से लापता है. मैं ने उस की खोज हर जगह की. लेकिन कुछ भी पता नहीं चल पा रहा है. आप गुमशुदगी दर्ज कर भाई की खोज में मदद करें.''

कोतवाल तुलसीराम पांडेय ने बालगोविंद की बात को गौर से सुना और फिर गुमशुदगी दर्ज कर ली. इस के बाद उन्होंने पूछा, ''तुम्हारे भाई शिवगोविंद की गांव में किसी से रंजिश या लेनदेन का झगड़ा तो नहीं था.''

''सर, शिवगोविंद सीधासादा इंसान है. उस की गांव में किसी से रंजिश नहीं है और न ही किसी से लेनदेन का कोई झगड़ा है.'' बालगोविंद ने जवाब दिया.

''तुम्हें किसी पर शक है?'' थानाप्रभारी तुलसीराम पांडेय ने पूछा.

''हां सर, रीता पर शक है.'' बालगोविंद ने बताया.

''ये रीता कौन है?'' थानाप्रभारी बोले.

''सर, रीता शिवगोविंद की ही पत्नी है. वह रंगीनमिजाज औरत है. मुझे शक है कि भाई के लापता होने का रहस्य उसी के पेट में छिपा है.''

तुलसीराम पांडेय समझ गए कि मामला अवैध संबंधों का है और ऐसे रिश्तों में कुछ भी घटित हो सकता है. उन्होंने इस मामले को बेहद गंभीरता से लिया और सच्चाई जानने के लिए खास खबरियों को लगा दिया.

दूसरे दिन ही एक खबरी ने उन्हें बताया कि रीता रंगीनमिजाज औरत है. उस का चालचलन ठीक नहीं है. गांव के दीपक उर्फ लल्ला का उस के घर आनाजाना है. दोनों के बीच नाजायज रिश्ता है.

> पुलिस ने खुदाई के लिए जेसीबी भी मंगवा ली. इस के बाद अमन व दीपक की निशानदेही पर खुदाई की गई तो गहरे गड्ढे से शिवगोविंद का सड़ागला शव बरामद हो गया, जिस से तेज दुर्गंध आ रही थी. शिवगोविंद की लाश बरामद होने की सूचना बलिहारा गांव पहुंची तो पूरे गांव में सनसनी फैल गई.

इस रिश्ते का रीता का पति शिवगोविंद विरोध करता था. शिवगोविंद के लापता होने का रहस्य इन्हीं दोनों से पता चल सकता है.

यह पता चलते ही कोतवाल तुलसीराम पांडेय ने आवश्यक पुलिस बल साथ लिया और बलिहारा गांव पहुंच कर रीता यादव को उस के घर से हिरासत में ले लिया. उसे थाने लाया गया. महिला पुलिस की मौजूदगी में रीता से पूछताछ शुरू की गई.

थानाप्रभारी ने उस से पूछा, ''रीता सचसच बताओ, शिवगोविंद कहां है?''

''सर, मुझे पता नहीं, वह कहां हैं. वह मुझ से लड़झगड़ कर साथ में जेवर ले कर घर से दिल्ली जाने को निकले थे.'' रीता ने जवाब दिया.

''देखो, मुझे गुमराह करने की कोशिश मत करो. वरना सच्चाई उगलवाना मुझे आता है.''

''सर, मैं सच ही कह रही हूं.'' वह बोली.

''फिर झूठ लगता है, तुम सीधी तरह मुंह नहीं खोलोगी.'' थानाप्रभारी ने धमकाया.

इसी के साथ उन्होंने एक महिला कांस्टेबल को इशारा किया. इशारा पाते ही महिला पुलिस ने रीता से सख्ती की तो उसे मुंह खोलते ज्यादा वक्त नहीं लगा.

रीता ने कुबूला जुर्म

रीता ने मुंह खोला तो थानाप्रभारी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा. रीता ने बताया, ''सर, शिवगोविंद अब इस दुनिया में नहीं है. दीपक उर्फ लल्ला और उस के दोस्त अमन व निखिल ने मेरे कहने पर उस की हत्या कर दी है.''

इस के बाद ताबड़तोड़ छापा मार कर तुलसीराम पांडेय ने 12 जून की सुबह दीपक उर्फ लल्ला तथा उस के साथी अमन को भी बाराजोड़ से गिरफ्तार कर लिया. उन्हें कोतवाली अकबरपुर लाया गया. वहां दोनों का सामना रीता से हुआ तो वे समझ गए कि हत्या का परदाफाश हो गया है. अतः उन दोनों ने सहज ही जुर्म कुबूल कर लिया. निखिल फरार हो गया.

शिवगोविंद की लाश बरामद होने की सूचना मिलते ही गांव के लोग घटनास्थल पर उमड़ पड़े

रीता का पति शिवगोविंद

थानाप्रभारी तुलसीराम पांडेय ने इस सनसनीखेज मामले की जानकारी पुलिस अधिकारियों को दी. फिर शिवगोविंद का शव बरामद करने बलिहारा गांव के पास नोन नदी के किनारे पहुंचे.

उन्होंने खुदाई के लिए जेसीबी भी मंगवा ली. इस के बाद अमन व दीपक की निशानदेही पर खुदाई की गई तो गहरे गड्ढे से शिवगोविंद का सड़ागला शव बरामद हो गया, जिस से तेज दुर्गंध आ रही थी.

शिवगोविंद की लाश बरामद होने की सूचना बलिहारा गांव पहुंची तो पूरे गांव में सनसनी फैल गई. बालगोविंद, उस की पत्नी ममता व परिवार के अन्य लोग घटनास्थल पहुंचे और शव देख कर फफक पड़े.

इसी बीच खबर पा कर एसपी केशव कुमार चौधरी, एएसपी घनश्याम तथा डीएसपी (अकबरपुर) अरुण कुमार सिंह घटनास्थल आ गए. उन्होंने शव का निरीक्षण किया तथा मृतक के घर वालों से पूछताछ की. पुलिस अधिकारियों ने आरोपी अमन व दीपक से भी विस्तृत पूछताछ की.

पूछताछ के बाद आरोपियों ने हत्या में प्रयुक्त आलाकत्ल साबड़ तथा फावड़ा भी बरामद करा दिया, जिसे उन्होंने छिपा दिया था. पूछताछ के बाद अधिकारियों ने शिवगोविंद के शव को माती स्थित पोस्टमार्टम हाउस भिजवा दिया.

चूंकि आरोपियों ने जुर्म कुबूल कर लिया था और आलाकत्ल भी बरामद करा दिया था, अतः थानाप्रभारी तुलसीराम पांडेय ने मृतक के भाई बालगोविंद की तरफ से भादंवि की धारा 302, 201, 120बी तथा 34 के तहत रीता, दीपक उर्फ लल्ला, अमन तथा निखिल के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली और रीता, अमन व दीपक को न्यायसम्मत गिरफ्तार कर लिया.

पुलिस जांच में एक ऐसी औरत की कहानी प्रकाश में आई, जिस ने स्वयं ही अपना सिंदूर मिटा दिया.

शिवगोविंद की लाश बरामद होने पर दुखी उस के घर वाले

कानपुर (देहात) जनपद के अकबरपुर थाना क्षेत्र में एक गांव है बलिहारा. रामसिंह यादव अपने परिवार के साथ इसी गांव में रहता था. उस के परिवार में पत्नी के अलावा 3 बेटे थे— हरगोविंद, बालगोविंद तथा शिवगोविंद. रामसिंह किसान था. खेती की आय से ही घरपरिवार चलाता था. उस की आर्थिक स्थिति तो मजबूत नहीं थी, लेकिन बिरादरी में मानसम्मान था.

भाइयों में हरगोविंद सब से बड़ा था. उस का विवाह रीता से हुआ था. खूबसूरत रीता को पत्नी के रूप में पा कर हरगोविंद बहुत खुश था. लेकिन आर्थिक अभाव उस की चाहत के बीच दीवार बने हुए थे.

पति की मौत के बाद रीता देवर के साथ रहने लगी थी

हरगोविंद पिता के साथ खेती में हाथ बंटाता था. वह इतना नहीं कमा पाता था कि मौजमजे से गुजर होती रहती. फिर भी हालात से उबरने की जद्दोजहद चलती रही.

समय के साथ जब हालात नहीं सुधरे, तब रीता ने पति को कोई और काम करने की सलाह दी. लेकिन हरगोविंद तो अपनी खेतीकिसानी में ही खुश था.

आखिर पति की खुशी को रीता ने भी स्वीकार कर लिया. वह पति की सीमित आमदनी में ही खुश रहने लगी. लेकिन यह खुशी शायद ज्यादा दिनों तक कायम न रह सकी. रीता पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा.

हुआ यह कि एक दिन किसी काम से हरगोविंद अकबरपुर कस्बा गया. शाम को लौटते समय बाराजोड़ के पास उस का एक्सीडेंट हो गया.

गंभीर चोट लगने से उस की मौके पर ही मौत हो गई. उस की मौत की खबर घर पहुंची तो घर में कोहराम मच गया. रीता बिलखबिलख कर रोने लगी. घर वालों ने उसे किसी तरह संभाला. यह बात वर्ष 2012 की है.

समय बीतते जब दुख के बादल छंटने लगे तो रीता को अपने भविष्य की चिंता सताने लगी. वह सोचने लगी कि आखिर वह पहाड़

सी जिंदगी पुरुष के सहारे के बिना कैसे गुजारेगी. मायके में रह कर वह विधवा का जीवन नहीं बिताना चाहती थी. रीता की चिंता से घर वाले भी परेशान थे. लेकिन उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था.

रीता के देवर का नाम शिवगोविंद था. रीता और शिवगोविंद की उम्र में लगभग 10 साल का अंतर था. रीता जब से ब्याह कर ससुराल आई थी, शिवगोविंद से उस की खूब पटरी खाती थी.

पति की मौत का जहां रीता को गम था, वहीं शिवगोविंद भी बड़े भाई की मौत पर दुखी था. अब शिवगोविंद ही रीता की देखभाल करता था और उस के गमों को बांटता था.

शिवगोविंद की हत्या का आरोपी दीपक उर्फ लल्ला और अमन

रीता को भी मिल गया सहारा

30 वर्षीय रीता विधवा जरूर हो गई थी, लेकिन खूबसूरत व जवान थी. शिवगोविंद भी 20 वर्षीय गबरू जवान था. धीरेधीरे दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ने लगीं और दिलों में चाहत जाग उठी.

शिवगोविंद ने अपनी चाहत को एक दिन उजागर भी कर दिया, ''रीता भाभी, मैं तुम से प्यार करता हूं और तुम्हें अपना जीवनसाथी बनाना चाहता हूं.''

''सोच लो देवरजी. मैं विधवा हूं और विधवा से ब्याह रचाना तो दूर, उस से हंसनाबोलना भी यह समाज गुनाह मानता है.'' रीता ने शंका प्रकट की.

''भाभी, मुझे समाज की नहीं, तुम्हारी चिंता है. मैं तुम्हारी मांग में सिंदूर भर कर विधवा होने का कलंक मिटाना चाहता हूं.'' शिवगोविंद ने अपनी मंशा जाहिर की.

''तुम्हें मेरी चिंता है तो मैं साथ देने को तैयार हूं.'' रीता ने रजामंदी दे दी.

रीता राजी हो गई तो इस बाबत शिवगोविंद ने अपने मंझले भाई बालगोविंद तथा भाभी ममता से बातचीत की. पहले तो दोनों चौंके, फिर आमनेसामने बिठा कर रीता तथा शिवगोविंद से बात की.

उस के बाद उन्होंने उन दोनों को शादी करने की इजाजत दे दी. गांव में भी चर्चा आम हो गई कि शिव अपनी विधवा भाभी से ब्याह रचा रहा है.

घर वालों की रजामंदी हुई तो एक दिन शिवगोविंद व रीता मंदिर पहुंचे, वहां शिवगोविंद ने रीता की मांग में सिंदूर भर कर उसे विधवा से सुहागिन बना दिया. इस के बाद रीता, शिवगोविंद की पत्नी बन कर उस के साथ रहने लगी.

शिवगोविंद का प्यार मिला तो रीता पहले पति की यादें भुला बैठी. हंसीखुशी से 4 साल बीत गए. इस बीच रीता एक बेटी राधा की मां बन गई. राधा के जन्म से घर की खुशियां और बढ़ गईं.

लगभग 5 साल तक रीता और शिवगोविंद का जीवन आनंदपूर्वक बीता. उस के बाद उन के बीच विवाद शुरू हो गया. विवाद की कोई बड़ी वजह नहीं थी.

शिवगोविंद रनिया स्थित एक फैक्ट्री में काम करता था. फैक्ट्री में उसे कभी काम मिलता तो कभी नहीं मिलता. रीता खर्चीली थी. कंजूसी उस का मिजाज न था. जरूरत और शौक के आगे उस के लिए पैसे का महत्त्व न था. यही कारण था कि वह शिवगोविंद से पैसे की मांग करती रहती.

पत्नी की मांग सुन कर शिवगोविंद झुंझला उठता, ''रीता मेरा वेतन ज्यादा नहीं है, इसलिए तुम अपने खर्चों पर कंट्रोल करो. मुझे किसी के आगे हाथ फैलाने को मजबूर मत करो.''

''जितना कर सकती थी कर लिया, अब और कंट्रोल नहीं,'' रीता भी झुंझला कर जवाब देती, ''पत्नी के खर्चे पति नहीं पूरे करेगा तो क्या पड़ोसी करेंगे ?''

''रीता, मेरी कमाई उतनी नहीं है कि मैं तुम्हारे महंगे शौक पूरे कर सकूं.''

''पहले आमदनी बढ़ाते, फिर मेरी मांग में सिंदूर भरते,'' रीता का जवाब पैना तथा द्विअर्थी होता, ''हर रात तुम्हें मुझ से तो अपनी खुशी चाहिए, मेरे खर्च उठाने की तुम्हें परवाह नहीं. तुम्हारा शौक मैं पूरा करती हूं तो तुम्हें भी मेरे शौक पूरे करने होंगे.''

''तुम्हें खर्च में कटौती भी करनी पड़ेगी और हालात से समझौता भी करना होगा.''

''हरगिज नहीं करूंगी,'' रीता ने झुंझला कर जवाब दिया.

बस इसी मुद्दे पर विवाद बढ़ता गया. शिवगोविंद महसूस करने लगा कि उस ने रीता की मांग सिंदूर से सजा कर जबरदस्त गलती

> बातचीत के बीच में ही अमन और निखिल ने शिवगोविंद को दबोच लिया और दीपक ने साबड़ का प्रहार शिवगोविंद के सिर पर कर दिया. साबड़ के प्रहार से शिवगोविंद का सिर फट गया. इस के बाद अमन व निखिल ने फावड़े से प्रहार कर शिवगोविंद को मौत के घाट उतार दिया.

की है, तो रीता महसूस करने लगी कि शिव से प्रेम विवाह कर के उस ने स्वयं अपना मुकद्दर फोड़ लिया है.

दिलों की बढ़ गईं दूरियां

दिल में गांठ पड़ जाए तो वह कम नहीं होती, निरंतर बढ़ती जाती है. रीता व शिव भी एकदूसरे को अपने जीवन की गलती मान कर धीरेधीरे एकदूजे से दूरियां बढ़ाने लगे.

शिवगोविंद सुबह काम पर चला जाता, देर रात को घर आता. काम से इतना थका

लाश बरामद होने वाली जगह पर जांच करते पुलिस अधिकारी

होता कि अकसर खाना खाते ही सो जाता. रीता की हसरतें प्यासी ही रह जातीं.

रीता अकेलापन महसूस करने लगी तो उस का मन बहकने लगा. मन बहका तो वह पति से विश्वासघात करने पर उतारू हो गई.

वह भूल गई कि जिस इंसान ने उसे विधवा से सुहागन बनाया, मांग में सिंदूर भर कर समाज में सम्मान दिलाया, उसी के साथ वह विश्वासघात करने का मंसूबा पाल रही है. मांग का सिंदूर भी उसे बेमानी लगने लगा.

रीता ने इधरउधर नजर दौड़ाई तो उस की नजर दीपक उर्फ लल्ला पर टिक गई. दीपक उस के पति शिवगोविंद का दोस्त था और पड़ोस में ही रहता था.

उस का आनाजाना घर में लगा रहता था. खासकर उस रोज जब शिवगोविंद घर पर रहता था. दोनों में खूब गपशप होती तथा खानेपीने का दौर चलता था.

रीता के मन में पाप समाया तो उस ने दीपक को खुली छूट दे दी. उन दोनों के बीच हंसीठिठोली भी होने लगी. रीता जहां गबरू जवान दीपक पर फिदा हो गई थी, वहीं दीपक उर्फ लल्ला भी मतवाली भाभी रीता का दीवाना बन गया था.

दोनों के दिल एकदूसरे के लिए धड़के तो नजदीकियां खुदबखुद बन गईं. इस के बाद दीपक शिवगोविंद की गैरमौजूदगी में रीता से मिलने आने लगा. रीता को उस का आना और उस के साथ लच्छेदार बातें करना अच्छा लगता था. जल्द ही वे एकदूसरे से खुल गए और हंसीमजाक होने लगा.

एक रोज दोपहर में दीपक आया. रीता ने उकसाया तो उस दिन दोनों के बीच की हर दीवार टूट गई और अवैध संबंधों का रिश्ता बन गया.

पति का दोस्त बन गया मीत

उस दिन के बाद रीता और दीपक अकसर देहसुख प्राप्त करने लगे. दीपक ऐसे समय आता, जब शिवगोविंद घर पर नहीं होता. सूने घर में दोनों खूब रंगरलियां मनाते. कभीकभी तो रीता स्वयं ही फोन कर लल्ला को बुला लेती. फिर दो शरीर एक हो जाते.

लेकिन ऐसे संबंध छिपाए नहीं छिपते. धीरेधीरे गांव में रीता और दीपक के संबंधों की चर्चा होने लगी.

रीता के पति शिवगोविंद यादव को जब रीता और दीपक के संबंधों के बारे में पता चला तो उस के पैरों तले से जमीन खिसक गई. उस ने इस बारे में पत्नी व दोस्त से बात की तो दोनों ने साफ कह दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है.

लेकिन एक रोज जब उस ने अचानक दोनों को हंसीठिठोली करते देख लिया, तो उस ने रीता की पिटाई की तथा दीपक उर्फ लल्ला को भी फटकारा. पर उन दोनों पर इस का कोई असर नहीं हुआ. दोनों पहले की तरह मौजमस्ती करते रहे.

इस के बाद तो यह रवैया ही बन गया. जिस दिन शिवगोविंद को पता चलता कि दीपक उर्फ लल्ला उस के घर आया था, उस दिन वह रीता से मारपीट करता.

शिवगोविंद का परिवार और गांव वाले इस बात को जान गए थे कि दोनों के बीच तनाव रीता और दीपक के नाजायज रिश्तों को ले कर है.

पत्नी की बेवफाई से तंग आ कर एक दिन शिवगोविंद अपनी भाभी ममता के सामने फूटफूट कर रोने लगा, ''भाभी, कल जिस औरत की मांग में सिंदूर सजा कर मैं ने विधवा होने का कलंक मिटाया तथा समाज में सम्मान दिलाया, आज उस औरत ने समाज में मेरा सिर नीचा कर दिया. जी करता है कि या तो उस नागिन का फन कुचल दूं या फिर खुद जान दे दूं.''

ममता ने शिवगोविंद को समझाया कि वह सब्र से काम ले. वह रीता को समझाएगी, उसे सही रास्ते पर लाने का प्रयास करेगी. लेकिन ऐसा हो न सका. ममता व उस के पति बालगोविंद ने रीता को समझाया, मानमर्यादा में रहने का पाठ पढ़ाया. लेकिन रीता पर कोई असर नहीं पड़ा.

5 जून, 2021 की शाम शिवगोविंद का दोस्त सतीश उस के घर आया. चायपानी के दौरान दोनों में गपशप होने लगी. सतीश ने रीता की तारीफ की तो शिवगोविंद ने मन की भड़ास निकालनी शुरू कर दी.

सतीश के सामने उस ने रीता की पोल

खोल कर रख दी. उस ने कुछ ऐसी भी बातें कह दीं, जो रीता के दिल को चुभ गईं.

पति बना इश्क में रोड़ा

पति की बात दिल में चुभी तो रीता ने पति को मिटाने का निश्चय कर लिया. उस ने प्रेमी दीपक उर्फ लल्ला को घर बुला लिया और घड़ियाली आंसू बहाते हुए बोली, ''तुम्हारी वजह से मेरा पति मुझे मारतापीटता है, दूसरों के सामने जलील करता है और तुम दुम दबा कर भाग जाते हो. आखिर तुम कुछ करते क्यों नहीं ?''

''घर का मामला है भाभी, मैं कर ही क्या सकता हूं?'' दीपक ने मजबूरी जाहिर की.

''विरोध तो कर सकते हो, मुझ पर उठने वाला उस का हाथ मरोड़ तो सकते हो. फिर भी न माने तो...'' रीता बोली.

''तो क्या भाभी.. ?'' दीपक ने आश्चर्य से पूछा.

रीता गुस्से में बोली, ''उस का गला घोट दो, मार डालो उसे, ताकि मैं चैन से रह सकूं.''

एसपी केशव कुमार चौधरी

''ठीक है जैसा तुम चाहती हो वैसा ही होगा.'' इस के बाद रीता और दीपक ने मिल कर शिवगोविंद की हत्या की योजना बनाई. इस योजना में दीपक ने अपने दोस्त अमन व निखिल को भी पैसों का लालच दे कर शामिल कर लिया.

योजना के तहत दीपक उर्फ लल्ला ने 6 जून, 2021 की शाम 5 बजे अमन व निखिल को साबड़ व फावड़े के साथ नोन नदी किनारे खेत पर भेज दिया. फिर वह शिवगोविंद के घर पहुंचा. शिवगोविंद घर पर ही था.

दीपक ने शिवगोविंद से कहा, ''शौचालय

दीपक और अमन की गिरफ्तारी के बाद मामले का खुलासा करते थानाप्रभारी तुलसीराम

पाटने के लिए लकड़ी चाहिए हो तो मेरे साथ खेत पर चलो. वहां यूकेलिप्टस की लकड़ी दिलवा दूंगा. कीमत भी नहीं चुकानी पड़ेगी.''

शिवगोविंद ने अंधेरा घिर आने का बहाना बनाया. लेकिन रीता ने उस की बात खारिज

एएसपी घनश्याम

कर दी और जबरदस्ती दीपक के साथ भेज दिया. शिवगोविंद नोन नदी के किनारे खेत पर पहुंचा तो वहां अमन और निखिल भी मौजूद थे. उन सब में आपस में बातें होने लगीं.

बातचीत के बीच में ही अमन और निखिल ने शिवगोविंद को दबोच लिया और दीपक ने साबड़ का प्रहार शिवगोविंद के सिर पर कर दिया. साबड़ के प्रहार से शिवगोविंद का सिर फट गया. इस के बाद अमन व निखिल ने फावड़े से प्रहार कर शिवगोविंद को मौत के घाट उतार दिया.

हत्या करने के बाद अमन, निखिल व दीपक शव को उठा कर नदी के किनारे लाए. नोन नदी सूखी थी. वहां तीनों ने मिल कर फावड़े से गहरा गड्ढा खोदा और शिवगोविंद की लाश गड्ढे में दफन कर दी. उन्होंने आलाकत्ल फावड़ा व साबड़ झाड़ियों में छिपा दिए. फिर वापस अपने अपने घर आ गए.

दीपक ने रीता को फोन कर के बता दिया कि उस के सुहाग को मिटा दिया गया है और शव को नोन नदी में दफना दिया है.

इधर जब कई दिनों से शिवगोविंद दिखाई नहीं दिया, तो ममता ने रीता से सवालजवाब किया. शक होने पर उस ने सारी बात पति बालगोविंद को बताई. बालगोविंद ने तब थाना अकबरपुर में भाई की गुमशुदगी दर्ज कराई और शक उस की पत्नी रीता पर किया.

शक होने पर थानाप्रभारी तुलसीराम पांडेय ने रीता को गिरफ्तार किया. उस से सख्ती से पूछताछ की गई तो शिवगोविंद की हत्या का परदाफाश हो गया और कातिल पकड़े गए.

13 जून, 2021 को थाना अकबरपुर पुलिस ने आरोपी दीपक उर्फ लल्ला, अमन तथा रीता को कानपुर देहात की माती अदालत में पेश किया, जहां से उन को जिला जेल भेज दिया गया. कथा लिखने तक निखिल फरार था. पुलिस उसे गिरफ्तार करने का प्रयास कर रही थी. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

11 हजार हत्याओं की आरोपी 96 साल की महिला फरार

मौत के मुहाने पर बैठी 96 साल की एक महिला को मृत्यु का इंतजार है, जबकि अदालत उस के कठघरे में हाजिर होने का इंतजार कर रही है. क्योंकि उस फरार महिला पर 11 हजार लोगों की हत्या का आरोप है. तो है न ये हैरान करने वाली बात. कोई एक दो या फिर ज्यादा से ज्यादा 10-11 हत्याएं कर सकता है, लेकिन इस महिला पर न केवल नाजियों के कब्जे वाले पोलैंड में एसएस कमांडर सेक्रेटरी थी और उस समय उस पर 11 हजार लोगों की हत्या में मदद करने का आरोप है. इस आरोप के तहत ही महिला पर कोर्ट में केस भी चल रहा है.

इर्मगार्ड फुरचनर नाम की यह महिला ट्रायल के लिए कोर्ट आने से लंबे समय तक बचती रही. इस के लिए उस के वकील ने तरहतरह की तिकड़में लगाई हैं. विगत दशकों से उस की उम्र का हवाला भी दिया जा रहा है. हालांकि कोर्ट ने महिला के खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी कर दिया है.

बताते हैं कि वारंट जारी होने के बाद वह कोर्ट आने के बजाय पुलिस को चकमा दे कर टैक्सी पकड़ कर भाग गई थी. उस की इस हिम्मत के बावजूद वह कुछ घंटे बाद ही पकड़ ली गई.

इस पर जेरूशलम में साइमन विसेंथल सेंटर के कार्यालय में नाजी हंटर चीफ एफ्रैम जुरौफ ने कहा कि यदि वह भागने के लिए स्वस्थ है तो वह कैद होने के लिए भी स्वस्थ है.

मामला दूसरे विश्वयुद्ध के दौर 1939 से 1945 का है. उस दौरान नाजियों के कैंप में हजारों लोग मारे गए थे. तब इर्मगार्ड महज 18 साल की थी. उसे ऐसे ही एक कैंप की सेक्रेटरी बनाया गया था. लिहाजा उन पर जुवेनाइल कोर्ट में मामला चलाया जाना था.

उस के बाद से वह हर बार कुछ न कुछ तरीके अपना कर कानूनी गिरफ्त से बचती रही.

पिछले दिनों मैट्रो यूके की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक बचावपक्ष के वकील ने तब कहा था कि मुकदमा इस बात पर केंद्रित होगा कि 96 वर्षीय महिला को उस समय शिविर में हुए अत्याचारों की जानकारी थी भी या नहीं. ●

11,000 कत्ल का इलजाम लगा है, बल्कि गिरफ्तारी से बचने के लिए यह लगातार कोर्ट को भी चकमा देती आ रही है.

उत्तरी जर्मनी में इस 96 साल की महिला पर कोर्ट में केस चल रहा है. वह चलफिर नहीं सकती. इस वजह से उस के वकील ने कोर्ट में प्रार्थनापत्र दे कर हाजिरी माफी की फरियाद की है.

उस के ऊपर हजारों लोगों की हत्या का आरोप आरोप लगना किसी के गले नहीं उतर रहा है, लेकिन हम आप को बताना चाहते हैं कि वह महिला अपनी जवानी में पोलैंड की सेना से जुड़ी हुई थी.

इर्मगार्ड फुरचनर नाम की यह महिला

रसूखदार के प्यार का वार

❑ नितिन कुमार शर्मा

छायांकन : मॉडलिंग

पत्नी खुशबू के साथ
डा. राजीव सिंह

26 वर्षीय विक्रम सिंह राजपूत बिहार की राजधानी पटना के लोहानीपुर गौरेया इलाके में रहता था. उस के घर में मातापिता के अलावा एक भाई सचिन था. विक्रम पटना मार्केट में स्थित एक जिम में बतौर ट्रेनर काम करता था. इस के अलावा वह मौडलिंग और भोजपुरी फिल्मों में भी काम करता था. 2015 में एक कांटेस्ट 'देव एंड दिवा' का विनर भी रहा था. इस के साथ ही उस के गानों के कई अलबम भी आए थे.

18 सितंबर को सुबह 6 बजे का समय था. पटना की सड़कों पर चहलपहल शुरू हो गई थी. कोई मौर्निंग वाक के लिए निकला था तो कोई काम पर जाने के लिए.

विक्रम का भी रोज यही समय होता था, जिम जाने का. वह अपनी स्कूटी से जिम जाने के लिए निकला. वह लोहा मंडी गली तक पहुंचा ही था कि वहां खड़े 2 बदमाशों ने उस पर ताबड़तोड़ फायरिंग करनी शुरू कर दी, जिस से वह गंभीर रूप से घायल हो गया.

विक्रम को गोलियां मारने के बाद वे दोनों बदमाश वहां से निकल गए. विक्रम को 5 गोलियां लगीं. उस ने मदद के लिए आसपास मौजूद लोगों को आवाज दी, लेकिन किसी ने उस की मदद नहीं की.

विक्रम ने हिम्मत नहीं हारी. वह खुद स्कूटी चला कर एक निजी अस्पताल पहुंचा. लेकिन पुलिस केस होने की वजह से वहां के डाक्टरों ने उसे भरती करने से मना कर दिया गया.

इस के बाद वह घटनास्थल से लगभग ढाई किलोमीटर की दूरी पर स्थित पीएमसीएच पहुंच गया. वहां उसे डाक्टरों ने भरती कर लिया और औपरेशन कर के उस के शरीर से पांचों गोलियां निकाल दीं. जिस से उस की जान को कोई खतरा नहीं रहा.

पुलिस को सूचना दी जा चुकी थी. पुलिस अधिकारी घटनास्थल गए, वहां का निरीक्षण किया. आसपास के लोगों से पूछताछ की,

विक्रम सिंह राजपूत: खुशबू की बात न मानने की मिली सजा

पटना के एक मशहूर डाक्टर और जनता दल यूनाइटेड पार्टी के पदाधिकारी डा. राजीव सिंह की जिद्दी पत्नी खुशबू का मध्यमवर्गीय परिवार के जिम ट्रेनर विक्रम सिंह पर दिल आ गया तो उन के बीच की सारी दूरियां सिमट गईं. उस के बाद खुशबू इन संबंधों को नया नाम देने की जिद करने लगी, तब...

उस के बाद पीएमसीएच पहुंच गए. डाक्टरों ने जब घायल विक्रम को खतरे से बाहर बताया तो पुलिस अधिकारियों ने राहत की सांस ली.

पुलिस अधिकारियों ने विक्रम के बयान लिए. विक्रम ने अपने बयान में पटना शहर के मशहूर फिजियोथैरेपिस्ट और जेडीयू नेता राजीव सिंह और उन की पत्नी खुशबू सिंह पर आरोप लगाया कि उन दोनों ने ही बदमाशों के जरिए उस पर जानलेवा हमला करवाया है.

वजह यह बताई कि उस का खुशबू सिंह से पैसों के लेनदेन का विवाद था. जो पैसे उस ने खुशबू सिंह से उधार लिए थे, वह सब उन को वापस कर चुका था. उस के बावजूद खुशबू उस की जान लेने पर आमादा थी. इस से पहले भी खुशबू ने उस पर ब्लेड से हमला किया था, जिस के कारण उसे 14 टांके लगे थे. चूंकि मामला हाईप्रोफाइल था. इसलिए पुलिस अधिकारियों ने उस के बयान का वीडियो बना लिया.

इसी बयान के आधार पर कदमकुआं थाने में डा. राजीव सिंह, उस की पत्नी खुशबू सिंह और अज्ञात के विरुद्ध भादंवि की धारा 307, 120बी, 34 और आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया.

डाक्टर दंपति से हुई पूछताछ

देर शाम पुलिस ने डाक्टर दंपति को पूछताछ के लिए थाने बुलाया. थाने आ कर डा. राजीव सिंह बड़ी ठसक के साथ कुरसी पर बैठ कर मोबाइल पर अपनी पार्टी के करीबी नेताओं से बात करते रहे और अपनी पैरवी करने के लिए कहते रहे. कुछ नेताओं ने उन की इस मामले में पैरवी भी की, लेकिन वह पैरवी किसी काम न आई.

पुलिस अधिकारियों ने डा. राजीव और खुशबू से पूछताछ की. राजीव सिंह ने बताया कि फरवरी 2020 में विक्रम उन के संपर्क में आया था. उन्होंने विक्रम को बच्चों को डांस की ट्रेनिंग देने के लिए रख लिया. लौकडाउन में वह घर पर आ कर बच्चों को ट्रेनिंग देने लगा.

समय के साथ उस से रिश्ता सा जुड़ गया था. उस ने खुशबू से कुछ पैसे उधार लिए थे. उन पैसों को ले कर उन के बीच विवाद तो

अगले दिन 19 सितंबर को पुलिस की 2 टीमें बनाई गईं. एक तो डाक्टर दंपति से संबंधित जानकारियां जुटाने में लगाई गई तो दूसरी टीम शूटर्स तक पहुंचने के लिए सीसीटीवी फुटेज खंगालने में लगाई गई.

था, लेकिन उन्होंने विक्रम को जान से मारने की कोशिश नहीं की. चूंकि पुलिस के पास उस समय उन के खिलाफ कोई सबूत नहीं थे, इसलिए पूछताछ के बाद उन दोनों को घर भेज दिया.

अगले दिन 19 सितंबर को पुलिस की 2 टीमें बनाई गईं. एक तो डाक्टर दंपति से संबंधित जानकारियां जुटाने में लगाई गई तो दूसरी टीम शूटर्स तक पहुंचने के लिए सीसीटीवी फुटेज खंगालने में लगाई गई.

डा. राजीव की पत्नी खुशबू की काल डिटेल्स में विक्रम से घटना से पहले 120 दिनों तक 1100 बार बात करने का पता चला. पिछले साल एक सितंबर से मई 2021 तक दोनों के बीच 1875 बार बात हुई. इन काल्स की कुल अवधि 5.50 लाख सैकेंड थी.

इसी बीच सोशल मीडिया पर विक्रम और खुशबू के एक साथ घूमने और प्रेम दर्शाते फोटो वायरल हो गए. इस से काल डिटेल्स और दोनों के एक साथ फोटो देखने के बाद इस बात की पुष्टि हो गई कि मामला पैसों के लेनदेन का न हो कर प्रेम प्रसंग का है.

एक औडियो भी वायरल हुआ, जिस में एक महिला विक्रम की मां को विक्रम को जान से मारने की धमकी दे रही थी. जो महिला धमकी दे रही थी, वह डा. राजीव सिंह की पत्नी खुशबू बताई जा रही थी.

पुलिस की दूसरी टीम सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही थी. घटनास्थल की सीसीटीवी फुटेज में बदमाशों के फोटो देखने के बाद इलाके के सभी कैमरों की सीसीटीवी फुटेज की जांच करते हुए पुलिस अगमकुआं थाना क्षेत्र के भागवत नगर इलाके तक पहुंच गई.

सीसीटीवी फुटेज से मिले सुराग

वहां एक मकान की सीसीटीवी फुटेज में दोनों बदमाश अपने एक साथी के साथ निकलते देखे गए. तीनों बदमाश उसी मकान में किराए पर रह रहे थे, जिस मकान की सीसीटीवी फुटेज में तीनों कैद हुए थे. पुलिस ने 22 सितंबर, 2021 को तीनों शूटर्स को गिरफ्तार कर लिया. उन से पूछताछ के बाद डाक्टर दंपति को गिरफ्तार कर लिया गया.

शूटर्स को पैसा देने वाला मिहिर सिंह था, जोकि खुशबू का पुराना बौयफ्रैंड था. पूरे मामले की मास्टरमाइंड खुशबू थी. मिहिर घर से भाग कर दिल्ली चला गया था. पुलिस ने परिवार पर दबाव डाला तो मिहिर दिल्ली से फ्लाइट से वापस आ गया. 23 सितंबर की

घटनास्थल पर पहुंच कर जांच करती पुलिस टीम

थाने में अपना बयान दर्ज कराती खुशबू

शाम 5 बज कर 20 मिनट पर फ्लाइट से पटना में उतरते ही पुलिस ने मिहिर को गिरफ्तार कर लिया.

23 सितंबर की ही शाम साढ़े 6 बजे एसएसपी उपेंद्र कुमार शर्मा ने प्रैस कौन्फ्रैंस कर के पूरे मामले का खुलासा किया.

राजधानी पटना की पाटलिपुत्र कालोनी में रहते थे राजधानी के मशहूर फिजियोथैरेपिस्ट डा. राजीव सिंह और उन की पत्नी खुशबू. उन के 2 छोटे बच्चे थे. डा. राजीव सिंह साईंकेयर सेंटर नाम से अपना क्लिनिक चलाते थे. वह पेज थ्री की जमात में शामिल थे. हर रोज वह अखबार की सुर्खियों में बने रहते थे.

उन का रसूखदार नेताओं, अधिकारियों के साथ उठनाबैठना होता था. वह जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) के डाक्टर्स विंग के प्रदेश उपाध्यक्ष बना दिए गए. चिकित्सा के क्षेत्र में होने के कारण पैसों की कमी तो थी नहीं, अब राजनीतिक पार्टी के नेता बन गए तो पावर भी आ गई.

फरवरी, 2020 में राजीव के संपर्क में विक्रम आया. विक्रम से संपर्क बना, उस के काम के बारे में जाना तो डा. राजीव ने विक्रम को बच्चों की डांस की ट्रेनिंग के लिए लगा लिया. इसी बीच कोरोना के चलते लौकडाउन लग गया तो विक्रम राजीव के घर जा कर बच्चों को डांस सिखाने लगा.

डा. राजीव काफी व्यस्त रहते थे. घर पर कम ही रह पाते थे. बच्चों के अलावा उन की पत्नी खुशबू ही घर पर होती थी. बच्चों को डांस सिखाते विक्रम पर खूबसूरत खुशबू की निगाहें ठहरने लगीं.

खुशबू हाई सोसायटी के लोगों में से थी, जो शादी के बाद भी पराए मर्दों से अफेयर करने को बुरा नहीं मानते. यह एक तरह से इस सोसायटी का चलन होता है. खुशबू भी इस से अछूती नहीं थी.

उस के 5 साल से मिहिर सिंह नाम के युवक से प्रेम संबंध थे. हाल में ही मिहिर के साथ उस का ब्रेकअप हुआ था.

खुशबू घर में हो या बाहर, सिर्फ अपनी ही चलाना चाहती थी. वह अपनी जिंदगी के फैसले हो किसी दूसरे के, खुद ही लेना पसंद करती थी. वह काफी जिद्दी थी. इसलिए खुशबू की अपने पति राजीव से भी पटरी नहीं खाती थी. उस से जबतब झगड़ा होता रहता था.

इस बार खुशबू और राजीव में इतनी अनबन हो गई कि मामला थाने तक पहुंच गया. खुशबू ने बुद्धा कालोनी थाने में शिकायत कर दी थी. पुलिस ने बड़ी मशक्कत के बाद दोनों के बीच सुलह कराई थी.

विक्रम काफी खूबसूरत था और मौडलिंग और अभिनय के क्षेत्र में नाम कमा रहा था. वह और भी कई विधाओं में पारंगत था. सब से बड़ी बात कुंवारा था. खुशबू की नजर में वह चढ़ गया. वह जब भी घर पर आता तो खुशबू उस पर ही निगाहें गड़ाए रखती. उस के करीब आने के लिए खुशबू को ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी.

विक्रम जिम ट्रेनर था. इसलिए खुशबू ने उस से जिम की ट्रेनिंग घर पर लेने की सोच ली. विक्रम से उस ने कहा तो विक्रम ने सहमति दे दी. लौकडाउन के कारण जिम बंद चल रहे थे, इसलिए विक्रम ने मना नहीं किया.

व्यायाम के दौरान खुशबू स्किन टाइट शार्ट्स पहनती थी. उस में उस के शरीर के हर अंग का आकार साफ नजर आता था. विक्रम उसे देखता जरूर लेकिन कुछ कहता नहीं था.

व्यायाम के दौरान शार्ट्स ही पहने जाते हैं, इसलिए अपनी तरफ से उस ने टोकना मुनासिब नहीं समझा. वजन उठाने के दौरान विक्रम को खुशबू के पीछे बहुत नजदीक खड़ा होना पड़ता था, जिस से वजन उठाने में खुशबू को कोई परेशानी हो तो वह वजन को पकड़ ले, अन्यथा खुशबू को चोट भी लग सकती थी.

खुशबू मर मिटी जिम ट्रेनर विक्रम पर

खुशबू इस का भरपूर फायदा उठाती थी. वजन उठाने के दौरान उठतेबैठते समय अपना शरीर जानबूझ कर विक्रम से सटा देती, जिस से विक्रम के कुंवारे शरीर में करंट सा दौड़ने लगता. लेकिन अगले ही पल उसे खूबसूरत धोखा मान कर भुला देता.

लेकिन बारबार खुशबू के द्वारा ऐसा किया जाने लगा तो विक्रम को खुशबू की मंशा समझते देर नहीं लगी. पहले उस ने सोचा कि खुशबू 2 बच्चों की मां है और धनाढ्य परिवार से है, वह अपनी अच्छी बसीबसाई गृहस्थी में आग क्यों लगाएगी, वह भी उस जैसे मिडिल क्लास लड़के के लिए.

लेकिन खुशबू की हरकतें उस की इस सोच को गलत साबित कर रही थीं. उस ने सुन रखा था कि हाईसोसायटी की महिलाएं रंगीनमिजाज होती हैं. पति के अलावा भी वह दूसरों से संबंध रखती हैं. खुशबू भी उन्हीं महिलाओं की तरह है.

यह सोच कर वह भी खुशबू में इंटरेस्ट

लेने लगा. वह भी उस से प्यार भरी बातें करता और उस के बदन से चिपकने लगा. खुशबू को भी समझ में आ गया कि विक्रम भी उस की चाहत में बहक गया है.

एक दिन दोनों के तन सटे तो दोनों ने एकदूसरे को बांहों में भर लिया और अपने प्यार का इजहार कर दिया. दोनों के संबंधों का सिलसिला अनवरत चलने लगा.

खुशबू विक्रम के प्यार में ऐसी पड़ी कि हमेशा के लिए उस के साथ रहने के बारे में सोचने लगी. उस ने विक्रम से बात की, ''विक्रम, मैं अब तुम्हारे बिना नहीं रह सकती. हमें अब हमेशा के लिए एक हो जाना चाहिए. साथ रहेंगे तो और भी प्यार बढ़ेगा.''

विक्रम यह सुन कर सन्न रह गया, ''बोलने से पहले आप एक बार सोच लेती कि क्या कहने जा रही हो. तुम शादीशुदा हो और 2 बच्चों की मां हो और एक प्रतिष्ठित परिवार से हो. ऐसा करने पर तुम्हारा परिवार तो बरबाद होगा ही, मैं भी कहीं का नहीं रहूंगा. राजीव सर भी मुझे नहीं छोड़ेंगे, जान से मार देंगे.''

''मैं ने सब सोच लिया है, अब मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगी. चाहे कुछ हो जाए. तुम को मेरी बात माननी ही पड़ेगी. एक बात ध्यान रखो कि मैं जो चाहती हूं, वह पा कर रहती हूं, नहीं तो मैं सामने वाले को बरबाद कर देती हूं. अब तुम सोच लो, क्या करना है.'' कह कर खुशबू वहां से चली गई.

खुशबू हमेशा के लिए अपना बनाना चाहती थी जिम ट्रेनर को

विक्रम तो सिर्फ खुशबू से संबंध बनाने के लिए जुड़ा था, लेकिन अब वह उस के लिए गले की हड्डी बन रही थी. ऐसे में विक्रम ने उस से दूरी बनानी शुरू कर दी. खुशबू को यह बात समझते देर नहीं लगी.

वह विक्रम के जिम जाने लगी, वहां रोज वह घंटों बैठी रहती. वह विक्रम का पीछा छोड़ने को बिलकुल तैयार ही नहीं थी. दोनों में अब प्यार के बजाय झगड़े होने लगे.

खुशबू अपनी जिद पूरी न होती देख कर बौखला सी गई. उस ने विक्रम के साथ रहने के लिए विक्रम को हर तरह से मना कर देख लिया था, लेकिन विक्रम मानने को तैयार ही नहीं था. खुशबू का दीवानापन या कहें पागलपन अपनी सीमाएं लांघने लगा था.

विक्रम के न मानने पर वह उसे सबक सिखाने पर आमादा हो गई. वह विक्रम के घर जा कर विक्रम और उस के परिवार को धमकाने लगी कि विक्रम अगर उस की बात नहीं मानता तो वह उसे जान से मार देगी. एक बार तो उस ने विक्रम पर सर्जिकल ब्लेड से हमला भी कर दिया, जिस में विक्रम को 14 टांके लगे थे.

सोशल मीडिया पर वायरल खुशबू और विक्रम की तसवीर

खुशबू गुस्से में बिफरी नागिन की तरह विक्रम को डंसने को आतुर थी. विक्रम को जान से मारने के लिए उस ने अपने पूर्व प्रेमी मिहिर सिंह से संपर्क किया. मिहिर दानापुर के नासरीगंज के यदुवंशी नगर में रहता था. पिछले 5 सालों से उस के खुशबू से प्रेम संबंध थे.

घटना से डेढ़दो साल पहले ही उन का ब्रेकअप हुआ था. अब खुशबू ने उस से प्रेम संबंध बनाए रखने के लिए अपने दूसरे प्रेमी विक्रम की जान का सौदा करवाने के लिए कहा. मिहिर उस का काम करवाने के लिए तैयार हो गया.

मिहिर 2 लोगों की मदद से शूटर अमन तक पहुंचा. अमन समस्तीपुर के किशनपुर बैकुंठ में रहता था. वह पत्राचार से एमबीए कर रहा था, साथ ही डिलीवरी बौय का भी काम करता था. अमन विक्रम की सुपारी लेने को तैयार हो गया. अमन ने अपने साथ आर्यन और शमशाद को मिला लिया.

आर्यन उर्फ रोहित सिंह सारण के सोनपुर के जहांगीरपुर का रहने वाला था. जबकि शमशाद बेगूसराय के चेरिया बरियापुर का रहने वाला था. वह गोवा में रह कर राजमिस्त्री का काम करता था. 5 महीने पहले ही वह वापस आया था.

मिहिर ने तीनों से बात कर के पूरा प्लान बनाया. सुपारी की रकम ढाई लाख रुपए तय हुई, जिस में एक लाख 85 हजार रुपए खुशबू ने 2-3 बार में दिए.

2 महीने पहले ही योजना बन गई थी. तीनों शूटर भागवतनगर इलाके में 14 हजार रुपए महीने के किराए के मकान में आ कर

डाक्टर दंपति, मिहिर सिंह और तीनों शूटर्स की गिरफ्तारी के बाद प्रैस कौन्फ्रैंस करते पुलिस अधिकारी

रहने लगे थे. 2 महीने पहले ही रुपए दिए जाने के बावजूद भी शूटर्स ने अपना काम नहीं किया तो मिहिर रुपए वापस ले कर खुशबू को दे कर इस झंझट से बाहर निकलना चाहता था.

मगर ऐसा हुआ नहीं, दबाव बढ़ा तो शूटर जल्द ही काम को अंजाम तक पहुंचाने को तैयार हो गए. शूटर्स ने कुछ दिन विक्रम की रेकी की, फिर 18 सितंबर, 2021 की सुबह एक चोरी की बाइक से कदमकुआं थाना क्षेत्र के लोहा मंडी इलाके में पहुंच गए. अमन और आर्यन रास्ते में निश्चित स्थान पर खड़े हो गए, शमशाद कुछ दूरी पर बाइक ले कर खड़ा हो गया.

जैसे ही विक्रम स्कूटी से उस रास्ते से उन के पास से गुजरने लगा तो अमन और आर्यन ने उस पर ताबड़तोड़ फायरिंग करनी शुरू कर दी. गोलियां मारने के बाद तीनों शूटर भागवतनगर के किराए के मकान पर वापस आ गए. अंततः पकड़े गए.

पुलिस ने उन के पास से 2 पिस्टल, मैगजीन और गोलियां बरामद कीं. पुलिस ने डाक्टर दंपति, मिहिर सिंह और तीनों शूटर्स को न्यायालय में पेश करने के बाद जेल भेज दिया. कथा लिखने तक 2 आरोपी गिरफ्तार नहीं हो सके थे.

खुशबू अपनी जिद और प्यार के पागलपन में इतनी अंधी हो गई कि उस ने अपना बसाबसाया घर तक बरबाद कर लिया. अच्छीखासी घरगृहस्थी और जिंदगी को छोड़ कर अब खुशबू बेउर जेल की बैरक में तन्हा जिंदगी गुजार रही है.

साजिश का पता होते हुए भी पति राजीव ने साथ दिया, वह भी अलग बैरक में बड़ी मुश्किलों में रह रहा है.

यह कहानी उन लोगों के लिए सबक है जो अपनी जिद, चाहत और पागलपन में सब कुछ बरबाद कर देते हैं. समय रहते अपने को संभाल लें तो उन की और उन के अपनों की जिंदगी बरबाद होने से बच सकती है. ●

—कथा पुलिस सूत्रों व मीडिया रिपोर्टों पर आधारित

नहीं रहा करोड़ों का सुलतान

खबर

हरियाणा के बहुचर्चित भैंसे सुलतान की अचानक मौत हो गई. वह न केवल अपने मालिक, बल्कि पूरे प्रदेशवासियों का प्यारादुलारा था. वह अपने मालिक को लाखों रुपए कमा कर देता था. यह अलग बात थी कि बदले में वह 20 किलो गाजर, 10 किलो अनाज, 10 किलो दूध, 15 किलो सेब और 10 किलो हरे पत्ते हर रोज खाता था. इतना ही नहीं, उसे व्हिस्की भी पिलानी पड़ती थी.

उस की 14 साल की उम्र में हार्ट अटैक से हुई मौत से उस के मालिक को काफी सदमा लगा. काफी दिनों तक वह उसे भूल नहीं पाए. उस की याद में आंसू बहाते रहे.

दरअसल, हरियाणा के कैथल में बूढ़ाखेड़ा गांव में सुलतान नाम का वह भैंसा करीब 21 करोड़ रुपए का था. उसे नरेश बेनीवाल ने पालापोसा था और अपने बच्चे की तरह देखभाल करते थे. उसे अपने परिवार का हिस्सा मानते थे. सुलतान की बदौलत बेनीवाल के परिवार को हर साल करीब 10 लाख रुपए की कमाई होती थी.

बेनीवाल के अनुसार हरियाणा के साथसाथ पूरे देश में सुलतान के 'सीमन' की डिमांड थी. सुलतान के सीमन से हर साल उन्हें लाखों रुपयों की कमाई होती थी. उस के सीमन की एक डोज की कीमत 306 रुपए थी. ऐसे में वह हर साल करीब 30 हजार सीमन की डोज देता था.

यहां तक कि हिसार रिसर्च सेंटर में आने वाले किसान भी सुलतान के सीमन की डिमांड करते थे, जिस से वह फिर से सुलतान जैसा ही भैंसा पैदा कर सकें.

सुलतान न सिर्फ हरियाणा और पंजाब बल्कि देशभर के पशु मेले में भी सुर्खियों में रहता था. उस की खूबसूरती की भी बेहद चर्चा होती थी. साल 2013 में राष्ट्रीय पशु सुंदर प्रतियोगिता में अवार्ड भी हासिल कर चुका था. जबकि वह झज्जर, हिसार और करनाल से खिताब जीत चुका था.

राजस्थान के पुष्कर पशु मेले में उस की कीमत करीब 21 करोड़ से भी अधिक आंकी गई थी. ●

कहने को तो पुलिस जनता की सुरक्षा और कानून का पालन कराने के लिए होती है, लेकिन वास्तविकता यह है कि एक सिपाही से ले कर अधिकारी तक को पद और वरदी का इतना घमंड होता है कि वे मौका मिलने पर इस का प्रदर्शन आम इंसान पर करते रहते हैं. बेकुसूर कारोबारी मनीष गुप्ता की हत्या कर थानाप्रभारी जगत नारायण ने भी यही जताने की कोशिश की कि...

मनीष गुप्ता केस
जब रक्षक बन गए भक्षक

❑ शाहनवाज

गोरखपुर के होटल में पुलिस वालों की बर्बरता का शिकार बने कानपुर के व्यापारी मनीष गुप्ता

26 सितंबर, 2021 को सुबह के करीब 8 बज रहे थे. बर्रा, कानपुर के रहने वाले 35 वर्षीय मनीष गुप्ता गहरी नींद से अभी सो कर उठे ही थे कि उन के फोन की घंटी बजी. उन के फोन पर गुड़गांव के रहने वाले उन के दोस्त और बिजनैस पार्टनर प्रदीप सिंह की काल आई थी.

उन्होंने बिस्तर में लेटे हुए ही नींद से भरी आंखें खोलते हुए फोन रिसीव किया और खंखारते हुए बोले, ''हैलो.''

दूसरी तरफ से प्रदीप बोले, ''हां भाईसाहब, अभी तक सो कर उठे नहीं क्या ?''

यह सुन कर मनीष की आधी खुली आंखें पूरी खुल गईं और उन्होंने अपने कानों से फोन हटा कर मोबाइल की स्क्रीन पर नजर डाली, यह देखने के लिए कि फोन किस ने किया है.

उन्होंने स्क्रीन पर नाम देखा व तुरंत दोबारा कानों पर फोन लगा कर बोले, ''अरे प्रदीप तू है. कहां तक पहुंचे तुम लोग ? कानपुर पहुंचने में टाइम लगेगा क्या ?''

प्रदीप ने मनीष के सवाल का जवाब देते हुए कहा, ''अरे हम लोग पहुंचने वाले हैं. 2 घंटे और लग जाएंगे. तू हमें कहां मिलेगा ये बता ?'' मनीष ने जवाब दिया.

''मैं रेलवे स्टेशन पर आ जाऊंगा तुम्हें पिक करने के लिए,'' कहते हुए मनीष ने फोन काटा और बिस्तर से उठ कर अपने दैनिक क्रियाकलाप में लग गए.

समय होने पर मनीष ने बिना देरी किए उन के आने के ठीक आधे घंटे पहले रेलवे स्टेशन जाने के लिए अपने घर से निकल गए.

मनीष गुप्ता कानपुर में अपने इलाके में प्रौपर्टी डीलिंग का काम किया करते थे. हालांकि वह शुरू से प्रौपर्टी डीलर नहीं थे. पिछले साल जब देश भर में कोरोना की वजह से लौकडाउन लगाया गया, उस दौरान मनीष अपने परिवार के साथ नोएडा में रहते थे और वहां पर एक प्राइवेट बैंक के कर्मचारी थे.

लौकडाउन में जब छूट मिली तो वह अपने परिवार, जिस में उन की पत्नी मीनाक्षी गुप्ता और उन का 5 साल का बेटा था, के साथ अपने होमटाउन कानपुर में शिफ्ट हो गए थे और यहां उन्होंने प्रौपर्टी डीलिंग का काम शुरू किया.

प्रौपर्टी डीलिंग का काम करते हुए उन की जानपहचान सैकड़ों लोगों से हुई, लेकिन उन में से मनीष के कुछ खास दोस्त भी बने, जिस में से एक प्रदीप भी थे.

प्रदीप भी मनीष की तरह ही गुड़गांव में प्रौपर्टी डीलिंग का काम करते थे और मनीष के जोर देने पर वह अपने एक और दोस्त हरवीर सिंह के साथ उन से मिलने और घूमनेफिरने के लिए कानपुर आ रहे थे.

प्रदीप और मनीष का प्लान सिर्फ कानपुर में घूमनेफिरने का नहीं था, बल्कि वे तीनों गोरखपुर भी जाने वाले थे.

गोरखपुर में मनीष और प्रदीप का एक और दोस्त चंदन पांडेय था. चंदन पिछले कई दिनों से प्रदीप को गोरखपुर आने का न्यौता दे रहा था. चंदन मनीष को पिछले 4-5 सालों से जानता था और प्रदीप से उस की मुलाकात मनीष ने ही करवाई थी, जिस के बाद वे काफी अच्छे दोस्त बन गए थे.

चंदन ने गोरखपुर की काफी तारीफ की थी और कहा था कि योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद यहां बहुत विकास

मनीष गुप्ता हत्याकांड की न्यायिक जांच की मांग करती विपक्षी पार्टियां

हुआ है. मनीष, प्रदीप, हरवीर का इरादा गोरखपुर में 2-3 दिन रहने, चंदन से मिलने और घूमनेफिरने का था.

26 सितंबर के दिन प्रदीप और हरवीर के कानपुर आने के बाद मनीष ने उन्हें कानपुर का टूर करवाया. मनीष दिन भर अपने दोनों दोस्तों के साथ कानपुर की मशहूर जगहों पर घूमे. उन्होंने साथ में अच्छे रेस्टोरेंट में खाना खाया, घूमेफिरे और खूब मस्ती की.

रात होने पर मनीष ने कानपुर में एक अच्छे पारिवारिक होटल में प्रदीप और हरवीर के लिए कमरा बुक किया, उन्हें होटल के कमरे तक ले गया, कुछ देर बातचीत की और अगले दिन आने का वादा कर के मनीष वहां से अपने घर जाने के लिए निकल गए.

अगले दिन वे सुबह ही गोरखपुर के लिए निकलने वाले थे. इसलिए मनीष अगले दिन सुबह के 9 बजे ही होटल में पहुंच गए. प्रदीप और हरवीर दोनों ने रात को अच्छीखासी नींद ली, उन्होंने रेस्ट कर के दिन भर की अपनी थकान मिटाई और नहाधो कर तैयार हो लिए.

सुबह करीब 10 बजे वे गोरखपुर जाने के लिए होटल से निकल गए. कानपुर से गोरखपुर का रास्ता करीब 8 घंटों का था.

27 सितंबर की शाम 6 बजे तक तीनों गोरखपुर पहुंच गए. उन्होंने चंदन को इस बात की सूचना पहले ही दे दी थी. तीनों दोस्त थकेहारे गोरखपुर पहुंचे थे तो चंदन ने उन्हें और परेशान नहीं किया.

चंदन ने अपने इलाके में गोरखपुर के तारामंडल में स्थित होटल कृष्णा पैलेस में तीनों के रुकने का इंतजाम करा दिया. तीनों एक ही साथ होटल के एक ही कमरे में ठहरे.

गोरखपुर में तारामंडल का यह इलाका आसपास के इलाकों में सब से पौश इलाकों में एक माना जाता है. चारों ने मिल कर होटल में ठहरने से पहले बाहर खाना खाया. रात को साढ़े 11 बजे चंदन उन्हें होटल में ड्रौप कर सुबह जल्दी आने का वादा कर के अपने घर के लिए निकल गया.

चंदन अभी अपने घर के रास्ते में ही था कि उसे स्थानीय पुलिस रामगढ़ताल से फोन आया. उस ने अपनी बाइक रोड के किनारे रोकी और फोन उठा कर बोला, ''हैलो.''

होटल के कमरे में मनीष गुप्ता और उन के साथियों के कागजात चैक करते थानाप्रभारी व अन्य पुलिसकर्मी

दूसरी तरफ से आवाज आई, ''हां भई, तेरे साथ के 3 दोस्त अभी कहां हैं?'' यह सुन कर चंदन डर गया, उस ने फोन करने वाले इंसान की पहचान पूछी तो उसे पता चला कि ये थाने से फोन था.

होटल में की मनीष गुप्ता की जम कर पिटाई

दूसरी तरफ बात करने वाली पुलिस ने चंदन को हड़काते हुए, तीनों जिस होटल में जिस कमरे में रुके थे, उस की जानकारी ले ली. यह सब जानने के बाद चंदन ने अभी फोन डिसकनेक्ट किया भी नहीं था कि दूसरी तरफ से उसे गालियां देने की आवाज आई.

यह सुन कर चंदन डरते हुए अपने घर की ओर चल पड़ा. लेकिन घर पहुंच कर उसे दाल में कुछ काला होने की भनक लगी. चंदन ने अपने मन का डर खत्म करते हुए बाइक घुमाई

मनीष गुप्ता का शव कानपुर लाए जाने के बाद शोकाकुल मीनाक्षी गुप्ता और उन के नजदीकी

और सीधा होटल की ओर चल पड़ा, जहां पर उस के तीनों दोस्त ठहरे हुए थे.

उधर रात के करीब 12 बजे होटल कृष्णा पैलेस का रूम नंबर 512 खटखटाया गया. मनीष, प्रदीप और हरवीर तीनों नहाधो कर सो चुके थे. मनीष तो बेहद गहरी नींद में थे. लेकिन खटखटाहट की आवाज सुन कर हरवीर और प्रदीप जाग गए.

प्रदीप ने लेटे हुए ही हरवीर से कहा, ''अरे यार, इतनी रात को भला कौन परेशान करने आ गया. देख जरा हरवीर कौन है?''

दरवाजे की खटखटाहट अब तेज होने लगी थी. हरवीर अपना थकान भरा शरीर ले कर उठा और उस ने गेट खोला. हरवीर ने देखा कि गेट पर कुछ पुलिस वाले आए हुए थे.

इस से पहले कि हरवीर उन से कुछ कहता, थानाप्रभारी जगत नारायण सिंह और उस के साथ कुछ और पुलिसकर्मी हरवीर को अंदर की ओर धकेलते हुए खुद कमरे के अंदर आ घुसे और कमरे की लाइट जलाई.

कमरे में उजाला फैला तो जगे हुए प्रदीप ने कमरे में पुलिस वालों को देखा और उठ कर पलंग पर बैठ गया. लेकिन मनीष गहरी नींद में ही था.

थानाप्रभारी जगत नारायण सिंह ने उन्हें हड़काने वाले अंदाज में कहा, ''ये एक रुटीन चैकिंग है. जल्दी से अपनी आईडी निकालो.''

कमरे में मौजूद बाकी पुलिसकर्मी पूरे कमरे में फैल कर रखे सामान को अस्तव्यस्त करते हुए चैक करने लगे. प्रदीप और हरवीर ने पुलिसवालों से उलझना ठीक नहीं समझा. उन्होंने चुपचाप अपनेअपने बैग से अपनी आईडी निकाली और थानाप्रभारी के हाथों में सौंप दी.

दोनों की आईडी देख लेने के बाद थानाप्रभारी ने पलंग पर एक ओर सो रहे मनीष पर नजर डाली और काफी देर तक गुस्से से घूरते रहे. घूरते हुए जगत नारायण सोते हुए मनीष के पास पहुंचे और उसे उठाने के लिए हाथ मारा. 2-3 हाथ मारने के बाद मनीष उठा और उस ने देखा की पुलिसकर्मी उस के सामने हैं.

मनीष ने बेखौफ जगत नारायण के सामने कहा, ''ये कोई समय नहीं है किसी को जगाने का. किस काम के लिए आए हैं आप लोग?''

मनीष की बात पर थानाप्रभारी भड़क उठा, लेकिन उस ने फिर भी मनीष को जवाब दिया, ''ये रुटीन चैकिंग है. अपनी आईडी निकाल जल्दी से.''

मनीष ने थानाप्रभारी की बात सुन कर कहा, ''हमारे दस्तावेज होटल रिसैप्शन पर जमा हैं, आप वहां से भी देख सकते थे. और वैसे भी हम कोई आतंकवादी तो हैं नहीं जो इस तरह से हमारी चैकिंग की जा रही है.''

मनीष की इस बात से जगत नारायण सिंह का खून उबल पड़ा. उस ने अपने दांत पीसते हुए मनीष के बाल पकड़ते हुए कहा, ''तू पुलिस को उस का काम सिखाएगा?''

यह कहते हुए थानाप्रभारी ने मनीष के गाल पर जोर का एक चांटा मारा. उस चांटे से मनीष उबर पाता कि उस पर बाकी पुलिस वालों ने एकएक कर घूंसा जमाने शुरू कर दिए.

दूसरी ओर दरवाजे के पास खड़े एक पुलिसकर्मी ने अंदर से गेट बंद कर दिया. अंदर सभी पुलिस वाले एकएक कर के मनीष को पीटते ही चले जा रहे थे. दोनों दोस्त डर की वजह से कुछ भी न कह सके.

करीब 20-25 मिनट तक उन की जी भर के पिटाई करने के बाद जब जगत नारायण ने देखा कि मनीष के शरीर में कोई हलचल नहीं हो रही तो उस ने अपना होश संभाला.

उस ने मनीष का हाथ उठा कर उस की नब्ज चैक किया कि वह जिंदा है या नहीं. उस की नब्ज धीमी पड़ने लगी थी. एसएचओ ने अपने साथी पुलिस वालों को इशारा कर के मनीष को अस्पताल ले जाने के लिए कहा.

मीनाक्षी गुप्ता ने 11 अक्तूबर को कानपुर विकास प्राधिकरण में ओएसडी का पदभार संभाल लिया

मनीष गुप्ता को कर दिया मृत घोषित

इधर पुलिसकर्मी अस्पताल पहुंचे और उधर चंदन भी होटल पहुंचा. उस ने कमरे में पहुंच कर बाकियों से बात की और उसे पता चला कि मनीष को बीआरडी अस्पताल ले जाया गया है.

सुबह जब तक उस के परिवार वालों तक यह बात पहुंचती, उस से काफी पहले ही मनीष इस दुनिया को छोड़ कर जा चुके थे.

मनीष की मौत की जानकारी परिवार वालों को लगी तो मनीष की पत्नी मीनाक्षी गोरखपुर गई. पुलिस वालों के खिलाफ हत्या की एफआईआर लिखवाई. कारवाई के लिए थाने के बाहर धरना दिया. लेकिन पुलिस के

बड़े अधिकारियों ने कारर्वाई करने के बजाय मामले में लीपापोती की कोशिश की.

एक वीडियो भी सामने आया, जिस में एसएसपी और डीएम परिवार को केस दर्ज नहीं कराने के लिए मना रहे थे. डीएम विजय किरण आनंद कह रहे थे कि वो बड़े भाई के नाते समझा रहे हैं कि सुलह कर ली जाए.

गोरखपुर के एसएसपी ने शुरुआती जांच में इसे बिस्तर से गिर कर हुई मौत का मामला बताया था. जब मनीष गुप्ता की पत्नी कारर्वाई पर अड़ी रहीं और इस मामले को ले कर विवाद गहराया, तब कहीं जा कर 6 पुलिसकर्मियों के खिलाफ धारा 302 के तहत एफआईआर दर्ज की गई.

एफआईआर में 3 लोग नामजद और 3 अज्ञात थे. रामगढ़ताल थानाप्रभारी जगत नारायण सिंह, एसआई अक्षय मिश्रा और एसआई विजय यादव का नाम लिखा गया है. बाकी 3 आरोपी, एसआई राहुल दुबे, हैडकांस्टेबल कमलेश यादव और कांस्टेबल प्रशांत कुमार हैं. ये सभी 6 आरोपी पुलिस वाले सस्पेंड कर दिए गए.

पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद भी पुलिस की तरफ से गिरने से चोट लगने वाली थ्योरी दी जा रही थी. एडीजी प्रशांत कुमार ने कहा कि भगदड़ में गिरने से चोट लगने की जानकारी मिली है.

उधर मनीष की पोस्टमार्टम रिपोर्ट आई तो उस में मनीष के शरीर पर 4 गंभीर चोटों

पुलिस वालों की बर्बरता की कहानी बयां करते मनीष के दोस्त प्रदीप कुमार और हरवीर सिंह

की जानकारी मिली. उन के सिर में 5 सेंटीमीटर×4 सेंटीमीटर का घाव मिला. इस के अलावा दाहिने हाथ पर डंडा मारने के निशान, बाईं आंख और कई जगह पर हलके चोट के निशान मिले थे.

विपक्षी दलों ने किया प्रदर्शन

विपक्षी पार्टियों की तरफ से इस मुद्दे को ले कर सरकार पर सवाल उठाए गए. 30 सितंबर को पूर्व मुख्यमंत्री और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने परिवार से मुलाकात की थी और न्यायिक जांच की मांग की. सीएम योगी आदित्यनाथ ने भी मृतक के परिवार से मुलाकात की और उन से इस मामले को सीबीआई से जांच की सिफारिश की. साथ ही आरोपी पुलिसकर्मियों की गिरफ्तारी पर ईनाम भी घोषित कर दिया.

इस मामले में मुख्य आरोपी थानाप्रभारी जगत नारायण सिंह और अक्षय मिश्रा को 10 अक्टूबर को रामगढ़ताल एरिया से पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है. अक्षय मिश्रा की गिरफ्तारी के बाद एक बड़ा खुलासा हुआ है.

वारदात की रात जब मनीष की सांसें थम गई थीं और पुलिसकर्मियों को एहसास हो गया था कि उन की मौत हो गई है, तब आरोपी शव ठिकाने लगाने के प्रयास में जुटे थे. आखिर में जब उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझा, तब वे बीआरडी मैडिकल कालेज पहुंचे थे. इसलिए उन को निजी अस्पताल से मैडिकल कालेज पहुंचने में करीब 2 घंटे का समय लगा. एसआईटी ने इस तथ्य को अपनी जांच में भी शामिल किया है.

एसआईटी की जांच में यह तथ्य पाया गया कि बेजान मनीष को सब से पहले आरोपी पुलिस वाले जीप से ले कर पास के मानसी अस्पताल ले कर पहुंचे थे. वहां डाक्टर ने बताया कि मनीष की नब्ज नहीं मिल रही है, तत्काल इन को ले कर बीआरडी मैडिकल ले जाओ. अस्पताल प्रशासन ने मनीष को वहां से रेफर कर दिया था.

एसआईटी की जांच में सामने आया कि जब यहां से पुलिसकर्मी मनीष को ले कर

मीनाक्षी और मनीष गुप्ता
(फाइल फोटो)

रवाना हुए तो उन को यकीन हो गया था कि मनीष की मौत हो चुकी है. वे तकरीबन 2 घंटे बाद बीआरडी मैडिकल कालेज पहुंचे थे. जहां डाक्टरों ने मनीष को मृत घोषित कर दिया.

लाश ठिकाने लगाना चाहते थे पुलिस वाले

एसआईटी ने जब यह पता करना शुरू किया कि जिस दूरी को 10 मिनट में कवर करना था, उस में पुलिसकर्मियों को 2 घंटे क्यों लगे. तब सीसीटीवी फुटेज व अन्य तथ्यों से स्पष्ट हुआ कि आरोपी पुलिसकर्मी पहले थाने गए थे और उन्होंने गाड़ी भी बदली थी. इस पूरे समय में वे घूमते रहे थे. कुछ जगहों पर वे रुके भी थे.

इस दौरान मनीष के शव को ठिकाने लगाने के प्रयास में जुटे थे. उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करें. अंत तक जब समझ नहीं सके कि शव का क्या जाए तो वे सीधे मैडिकल कालेज पहुंचे.

सूत्रों के मुताबिक एसआईटी की जांच में सामने आया कि जब गाड़ी में बेजान मनीष को ले कर पुलिसकर्मी घूम रहे थे तो एक पुलिसकर्मी ने इंसपेक्टर जगत नारायण सिंह से कहा कि शव को कहीं ऐसे ही फेंक देते हैं. बाद में लावारिस में बरामद होगा. आगे की जांच होती रहेगी.

इस पर जगत नारायण ने कहा कि ऐसा

एडीजी प्रशांत कुमार

आरोपी पुलिसकर्मी :
1. थानाप्रभारी जगत नारायण
2. एसआई अक्षय मिश्रा
3. एसआई विजय यादव
4. एसआई राहुल दुबे
5. हैडकांस्टेबल कमलेश यादव
6. कांस्टेबल प्रशांत

करने से और फंस जाओगे. होटल से जब मनीष को ले कर चले थे तब उस के दोस्त व होटल प्रशासन मौजूद था. मानसी अस्पताल प्रशासन भी इस का गवाह है.

बाकी तमाम फुटेज में भी हम लोग कैद हुए हैं. लिहाजा मैडिकल कालेज चलने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है.

मामले के मुख्य आरोपी जगत नारायण सिंह और अक्षय मिश्रा की गिरफ्तारी के ठीक 2 दिनों बाद 12 अक्तूबर के दिन 2 अन्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है. एसआई राहुल दुबे और सिपाही प्रशांत कुमार को मंगलवार की दोपहर गोरखपुर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था.

दोनों कोर्ट में हाजिर होने की फिराक में गोरखपुर आए थे. पुलिस ने आजाद चौक इलाके से दोनों को गिरफ्तार कर एसआईटी कानपुर के सुपुर्द कर दिया था. दोनों पर कानपुर पुलिस की ओर से एकएक लाख रुपए का ईनाम घोषित कर दिया गया था.

जानकारी के मुताबिक कारोबारी मनीष गुप्ता की हत्या में नामजद आरोपी राहुल दुबे और सिपाही प्रशांत कोर्ट में हाजिर होने के लिए गोरखपुर आए थे. इस की भनक गोरखपुर पुलिस को लग गई थी. लिहाजा एसएसपी डा. विपिन ताडा ने घेराबंदी कराई और अलगअलग टीमें लगा दीं.

इसी बीच कैंट इंसपेक्टर सुधीर कुमार सिंह को मुखबिर से सूचना मिली कि आरोपी एसआई और सिपाही आजाद चौक चौकी के पास मौजूद हैं. दोनों वाहन पकड़ कर कचहरी जाने की फिराक में थे. सूचना मिलने के साथ ही कैंट इंसपेक्टर सुधीर सिंह, रामगढ़ताल इंसपेक्टर सुशील कुमार शुक्ला व फलमंडी चौकी इंचार्ज शेष कुमार शुक्ला पहुंच गए और दोनों आरोपियों को पकड़ लिया.

गिरफ्तार राहुल दुबे मिर्जापुर के कोतवाली देहात के मिश्र पचेर गांव का रहने वाला है, जबकि प्रशांत कुमार गाजीपुर के सैदपुर थानाक्षेत्र के भटौला गांव का रहने वाला है.

इस कांड के 4 आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी थी, जबकि 2 अभी भी फरार चल रहे थे.

उधर उत्तर प्रदेश सरकार ने मृतक की पत्नी मीनाक्षी गुप्ता को 10 लाख रुपए की आर्थिक सहायता और कानपुर विकास प्राधिकरण में ओएसडी की नौकरी दे कर उन के दुखों पर मरहम लगाने की कोशिश की है.

इस के अलावा सपा नेता अखिलेश यादव ने भी उन्हें 20 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी.

बहरहार, मीनाक्षी गुप्ता ने 11 अक्तूबर को कानपुर विकास प्राधिकरण में ओएसडी पद पर नौकरी जौइन कर ली. उन का कहना है कि आरोपी पुलिसकर्मियों को फांसी दिलाने तक वह अपना संघर्ष जारी रखेंगी. ●

चित्तौड़गढ़ की रानी पद्मिनी खूबसूरती की एक मिसाल थीं. तभी तो उस समय दिल्ली की गद्दी पर विराजमान अलाउद्दीन खिलजी ने रानी पद्मिनी को पाने की ठान ली. इस के लिए खिलजी और रावल रत्न सिंह की सेना के बीच 6 महीने से ज्यादा युद्ध चला. युद्ध जीतने के बाद भी उसे रानी पद्मिनी नहीं हासिल हो सकीं, क्योंकि...

बलिदान

❑ कस्तूर सिंह भाटी

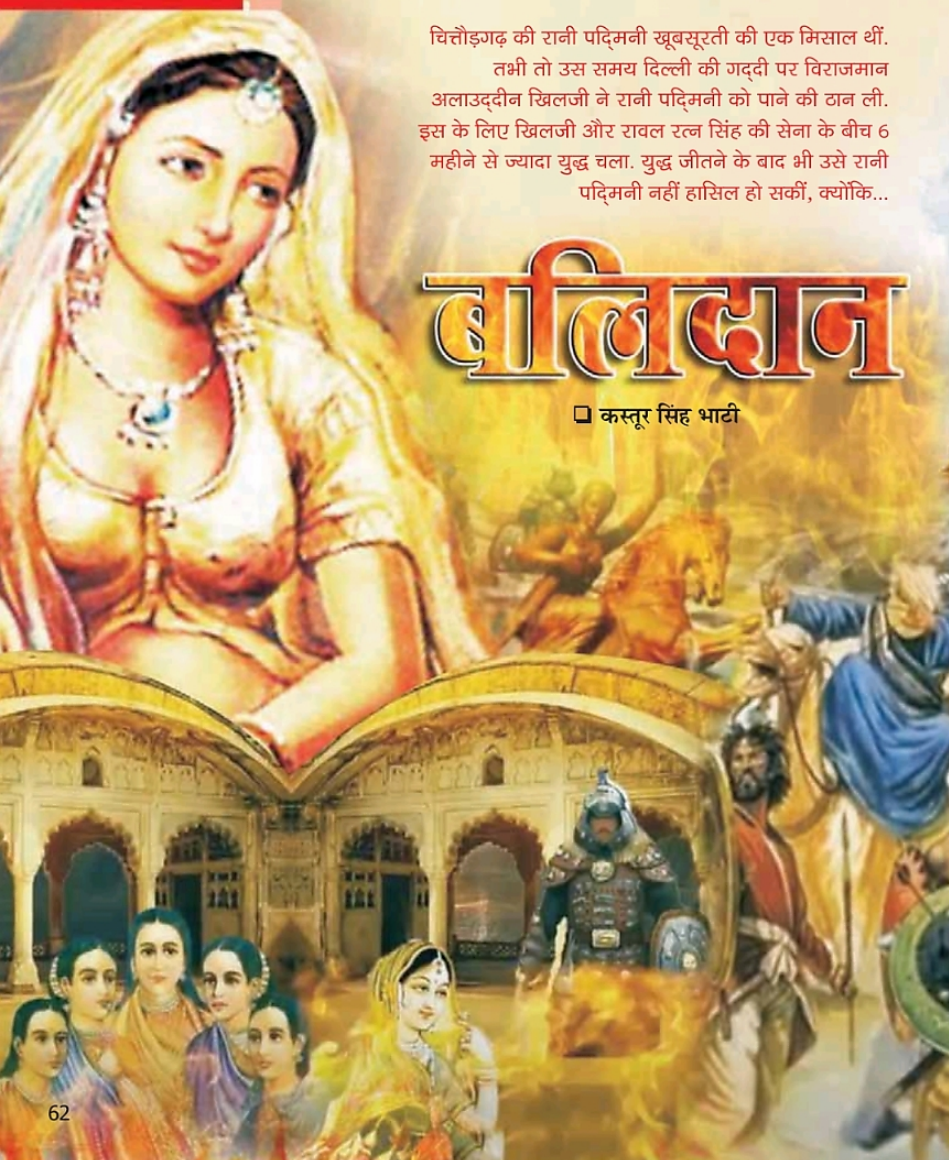

इतिहास के पन्नों में बलिदान के अनगिनत किस्सेकहानियां दर्ज हैं. उन में कई कहानियां वैसी स्त्रियों के बलिदान की हैं, जिन्होंने राष्ट्र, मातृभूमि या फिर स्त्री जाति की अस्मिता की रक्षा के लिए अपनी जान तक की कुरबानी दे दी. वैसी ही एक दास्तान चित्तौड़गढ़ की इस ऐतिहासिक कहानी में है. मुसलिम शासन के दौर में रानी पद्मिनी ने जो कुछ किया, वह अविस्मरणीय मिसाल बन गया.

बला की खूबसूरत रानी पद्मिनी की सुंदरता के किस्से दूरदूर तक फैल चुके थे. वह कितनी सुंदर थी ? कैसी दिखती थी ? चेहरा कितना चमकतादमकता था ? नाकनक्श कैसे थे ? होंठों, आंखों, गालों या बालों की सुंदरता में कितना अंतर था ? कैसा तालमेल था ? कैसे इतनी सुंदर दिखती थी ? सुंदर काया की देखभाल के लिए कैसा सौंदर्य प्रसाधन इस्तेमाल करती थी ? आदिआदि....

इन सवालों के जवाब लोगों ने तरहतरह के सुन रखे थे. उस समय भी कोई कहता कि रानी दिखने में बहुत ही गोरी हैं. उन का चेहरा दूधिया रोशनी की तरह चमकता रहता है... वह दूध और गुलाब जल से नहाती हैं... दुर्लभ जड़ीबूटियों का उबटन लगाती हैं... बेशकीमती सौंदर्य प्रसाधन के सामान, काजल, इत्र आदि सुदूर देशों से मंगवाए जाते हैं. काले बालों को संवारने के लिए अलग से दासियां रखी गई हैं... उन्हें सजनेसंवरने में काफी वक्त लगता है... महंगा पारंपरिक परिधान पहनती हैं... उन में सोने के महीन तारों की नक्काशी की होती है.

अधिकांश लोग यह भी चर्चा करते कि सजीधजी रानी हमेशा परदे में रहती हैं. चेहरा एक झीने परदे से ढंका रहता है. उन्हें सिर्फ राजा ही देख सकता है... उसे कोई और देखे यह राजा को कतई स्वीकार नहीं. यही कारण था कि राजमहल में आईना केवल 2 जगह ही लगे थे. एक राजा के शयन कक्ष में तो दूसरा रानी के निजी कक्ष में.

भले ही लोग चर्चा चाहे जैसी भी करते थे, लेकिन एक सच्चाई यही थी कि महल में पूरी तरह से पाबंदी लगी हुई थी कि उन पर राजा के सिवाय किसी की नजर नहीं पड़े. किसी की परछाईं तो बहुत दूर की बात है. उन के कहीं भी आनेजाने से पहले कुछ दासियां महल के दूसरे दासदासियों और दूसरे कर्मचारियों को सतर्क कर देती थीं. तब सैनिक अपना मुंह दीवार की ओर फेर लेते थे.'

ऐसे कई किस्सेकहानियां किंवदंतियों की तरह चित्तौड़गढ़ की पूरी सियासत में फैली हुई थीं. चित्तौड़गढ़ भी हिंदुस्तान का किसी साधारण राज्य मेवाड़ का एक महत्त्वपूर्ण भाग नहीं था. प्राकृतिक धनसंपदा और कृषि उत्पादों से भरपूर. मेवाड़ में लोग सुखीसंपन्न थे. खाने के लिए सालों तक का अनाज बड़ेबड़े भवनों और उन की कोठियों में भरा रहता था.

बहुत ही अच्छी पैदावार वाली मिट्टी थी. न सूखे या बाढ़ की प्राकृतिक आपदा और न ही किसी बाहरी के घुसपैठ से उत्पन्न हुई विपदा की समस्या थी. राज्य में किसी भी तरह की कोई कमी नहीं थी.

राजमहल काफी बड़ा बना था, जिस की सुरक्षा 7 घेरे में की गई थी. महल में कोई परिंदा भी बगैर सुरक्षाकर्मियों की जांचपरख और अनुमति के पर नहीं मार सकता था. रानी की सुरक्षा के भी काफी कड़े इंतजाम किए गए थे.

क्या मजाल थी कि बगैर राजा रावल रत्न सिंह की अनुमति और आदेश के राजमहल का कुछ भी बाहर निकलने पाए या भीतर प्रवेश हो जाए. न कोई तिनका और न ही किसी तरह की सूचना संदेश! किंतु राज्य के लोगों को उन की कल्पनाओं और निजी सोचविचार से कैसे रोका जा सकता था.

यही कारण था कि रानी पद्मिनी की खूबसूरती की चर्चाएं दबी जुबान पर होती रहती थीं. वही हवा में तेजी से फैलने वाली खुशबू की तरह हजारों मील दूर हिंदुस्तान की दिल्ली की गद्दी पर बैठे सुलतान अलाउद्दीन खिलजी तक जा पहुंची थी.

खिलजी एक सनकी किस्म का शासक था. वह जिसे हासिल करने के लिए मन में ठान लेता था, उसे हासिल कर के ही छोड़ता था.

उसे राजा रत्न सिंह के राजदरबार से निष्कासित ज्योतिष के द्वारा रानी की अपूर्व सुंदरता का बखान सुनने को मिला था. वह उसे पाने के लिए लालायित हो उठा. किंतु खिलजी को नहीं मालूम था कि रानी को पाना तो दूर, वह उस का दीदार तक नहीं कर

सकता था. फिर भी वह एक बड़ी सेना ले कर चित्तौड़गढ़ के मुहाने पर जा पहुंचा. उस ने सभी कुछ जंग जीत कर ही हासिल किया था, हीरेजवाहरात और खानेपीने का शौकीन खिलजी एक विक्षिप्त किस्म का इंसान था. उस का मानना था कि दुनिया की हर दुर्लभ वस्तु सिर्फ उस के पास ही हो. रानी पद्मिनी और उन की असाधारण सुंदरता को भी वह दुर्लभ वस्तु की तरह ही मानता था.

पद्मिनी को पाने के लिए चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर विशाल सेना के साथ चढ़ाई तो कर दी. किंतु दुर्ग की सुरक्षा को भेद तक नहीं पाया. राजपूत सैनिकों की अद्भुत वीरता के आगे खिलजी के सैनिकों की एक नहीं चली, जबकि वह सैनिकों के साथ महीनों तक चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी किए जमा रहा.

उस दौरान दुर्ग के बाहर युद्ध चलता रहा, लेकिन भीतर सारे पर्वत्यौहार और दूसरे तरह के आयोजन पूरे जोश और उत्साह, उमंग के साथ मनाए जाते रहे.

युद्ध की रणनीति और कौशल के बावजूद जब खिलजी दुर्ग में घुस नहीं पाया, तब उस ने कूटनीति की योजना बनाई. उस ने युद्ध समाप्ति और मित्रता के संदेश के साथ अपने एक दूत को रावल रत्न सिंह के पास भेजा.

खिलजी ने अपने संदेश में लिखा, 'हम आप से मित्रता करना चाहते हैं. रानी की सुंदरता के बारे में बहुत सुना है, इसलिए हमें सिर्फ रानी का चेहरा दिखा दीजिए, हम सैनिकों का घेरा उठा कर दिल्ली लौट जाएंगे.'

यह संदेश सुनते ही रत्न सिंह आगबबूला हो गए. मगर रानी ने इस पर दूरदर्शिता का परिचय देते हुए पति को समझाया, ''मेरे कारण व्यर्थ ही मेवाड़ के सैनिकों का खून बहाना बुद्धिमानी नहीं है.'' यह कहते हुए रानी ने अपनी नहीं, बल्कि पूरे मेवाड़ की चिंता जताई.

उन्होंने राजा से कहा कि उन के कारण पूरा मेवाड़ तबाह हो जाएगा. प्रजा को काफी नुकसान होगा. उन्हें भारी दुख उठाना पड़ेगा. उन की छोटी सेना खिलजी की विशाल सेना के आगे बहुत दिनों तक और नहीं टिक पाएंगी. 2 राज्यों के बीच दुश्मनी हो जाएगी सो अलग. उस का भी भविष्य में किसी न किसी रूप में नुकसान उठा पड़ सकता है.

इसलिए रानी बीच का रास्ता निकालते हुए राजा से बोली कि उन्हें राजधर्म का निर्वाह करते हुए खिलजी की बात मान लेनी चाहिए. वह चाहे तो आईने में अपना चेहरा उसे दिखा सकती हैं.

राजा को पद्मिनी की यह सलाह पसंद आई और उन्होंने शर्त मानते हुए खिलजी को अपना अतिथि बनाने का संदेश भेज दिया, साथ ही रानी द्वारा आईने में चेहरा दिखाने के सुझाव की शर्त बता दी.

दूसरी तरफ खिलजी को भी महीनों तक युद्ध करते हुए यह एहसास हो गया था कि चित्तौड़गढ़ की सेना को हराना आसान नहीं था. उन का राशन भी खत्म होने वाला था और 4 महीने की जंग में उस के हजारों सैनिकों की जान चली गई थी. यह वजह रही कि उस ने भी रत्न सिंह की शर्त मानते हुए उन के प्रस्ताव के साथ आतिथ्य स्वीकार कर लिया.

दुर्ग में खिलजी के अतिथि सत्कार के लिए महल में सरोवर के बीचोबीच भव्य आयोजन की तैयारी की गई थी. स्वादिष्ट भोजन का उत्तम प्रबंध किया गया. मनोरंजन के लिए लोक कलाकारों को विशेष तौर पर बुलाया गया था.

इन में सब से महत्त्वपूर्ण शर्त के मुताबिक महल की दीवार पर आईना इस तरह से लगवाया गया, ताकि रानी अपने कमरे में खिड़की के पास बैठने पर उन का चेहरा आईने में नजर आए. आईने की परछाईं को सरोवर के साफ और स्थिर पानी में दिखने के इंतजाम किए गए थे.

यहां तक तो सब कुछ ठीक था. निर्धारित समय के अनुसार खिलजी और राजा रत्न सिंह आतिथ्य आयोजन के लिए आमनेसामने बैठ गए थे. उन के आगे किस्मकिस्म के पेय परोसे जाने लगे. थोड़ी दूरी पर नृत्य गीतसंगीत का कार्यक्रम भी शुरू हो गया.

आखिरकार वह घड़ी भी आ गई, जब खिलजी ने सरोवर के पानी में रानी का खूबसूरत चेहरा देखा. रानी की पानी में अप्रतिम सुंदरता को देख कर वह दंग रह गया. उस ने जो कुछ सुना था और उस के मन में किसी स्त्री के अपूर्व सुंदरता की जो कल्पना थी, रानी पद्मिनी उस से भी कई गुणा अत्यधिक सुंदर दिख रही थी.

फिर क्या था. एक पल के लिए उस के मन में विचार आया, 'जो पानी में इतनी सुंदर दिख रही है, सामने से और न जाने कितनी सुंदर होगी ?'

खिलजी ने अपना आपा खो दिया और दूर खड़े अपने सैनिकों को इशारा कर रावल रत्न सिंह को धोखे से गिरफ्तार कर लिया.

रत्न सिंह को कैद कर वह अपने साथ दिल्ली ले आया और उन्हें जंजीरों में जकड़ कर कैदखाने में डाल दिया. उन के सामने प्रस्ताव रखा कि रानी पद्मिनी को सौंपने के बाद ही उन्हें मुक्त किया जाएगा. यह संदेशा उस ने दुर्ग में रानी के पास भिजवा दिया.

दुर्ग में राजा के कैद किए जाने की खबर से खलबली मच गई, लेकिन रानी ने धैर्य का परिचय देते हुए कूटनीतिक जवाब भेजा.

संदेश में लिखवाया, 'मैं मेवाड़ की महारानी अपनी 700 दासियों के साथ आप के सम्मुख उपस्थित होने से पहले अपने पति राजा रत्न सिंह के दर्शन करना चाहूंगी. मुझे पहले उन की सलामती का प्रमाण देना होगा.'

रानी का यह संदेशा पा कर खिलजी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और अद्भुत सुंदर रानी को पाने के लिए बेताब हो गया. उस ने रानी की शर्त तुरंत स्वीकार ली.

उस के संदेश को पाते ही रानी ने अपने सेनापति गोरा और उन के भतीजे बादल से रत्न सिंह को छुड़वाने की योजना बनाई. दोनों रियासत के अत्यंत ही वीर और पराक्रमी योद्धा थे. उन के साहस, बल और पुरुषार्थ से सारे शत्रु कांपते थे. वे ताकवर ही नहीं, कुशाग्र बुद्धि के भी थे. रानी गोरा के पास गई. तब उस ने रानी को वचन दिया कि जब तक गोरा का शीश रहेगा, तब तक राजा रत्न सिंह का मस्तक नहीं कटेगा.

रानी गोरा की बात सुन कर गदगद हो गईं. उस के बाद गोरा और बादल योजना बना कर दिल्ली की ओर कूच कर गए. योजना के मुताबिक गोरा ने 700 सशस्त्र सैनिकों को पालकियों में बिठा दिया था. जबकि खिलजी को बताया कि पालकियों में रानी पद्मिनी की 700 दासियां हैं. उन्हीं में से एक पालकी में रानी होगी. उन के इशारे पर वे बाहर निकल आएंगी. उन पालकियों को कंधा देने वाले

सैनिक ही थे. इस तरह से गोरा और बादल करीब 3 हजार से अधिक सैनिकों के साथ दिल्ली पहुंचे थे.

दूत से इस की जानकारी मिलने पर खिलजी खुशी से उछल पड़ा और उस ने तुरंत रत्न सिंह को पद्मिनी से मिलवाने का हुक्म दे दिया. आदेश की सूचना पा कर गोरा ने बादल को आगे की रणनीति समझाई.

उस से कहा कि रानी के वेश में लोहार जाएगा. उस के पीछे की पालकी में वह स्वयं रहेगा. साथ में दासियों की 10 पालकियां भी होंगी, जिन में दासियों के वेश में सैनिक होंगे.

लोहार रत्न सिंह को लोहे की जंजीरों से मुक्त कर देगा. बाहर धुड़सवार आड़ लिए तैयार रहेंगे. रत्न सिंह के आते ही वे उन्हें ले कर आंधी की तरह उड़ जाएंगे. उस के बाद गोरा योजना के मुताबिक रत्न सिंह के कैदखाने की तरफ बढ़ गए.

राजा रत्न सिंह ने वेश बदले गोरा को पहचान लिया. वह उस के गले लग गए. उन्होंने उस के साथ राजदरबार में की गई बीते समय की बेइज्जती की माफी मांगी. यहीं उन से एक भूल हो गई और खिलजी के सेनापति को उस पर संदेह हो गया.

देर नहीं करते हुए उस ने खिलजी तक इस की तत्काल सूचना भेज दी. यह सुन कर खिलजी बौखला उठा. खिलजी की सेना आने तक रत्न सिंह को ले कर गोरा और बादल फरार हो चुके थे. हालांकि वे जल्द ही खिलजी के सैनिकों से घिर गए. उस के सेनापति जफर ने ललकारते हुए उन पर हमला कर दिया था.

दोनों के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया. एक तरफ खिलजी के हजारों सैनिक थे, जबकि गोरा और बादल राजा रत्न सिंह को बचाते हुए कुछ सैनिकों के साथ ही जंग जीतने के प्रयास में थे.

अंततः उन के बीच खूब तलवारें चलीं. एकदूसरे पर भाले फेंके गए. गोरा और बादल जख्मी होने के बावजूद लड़ते रहे. एक मौका ऐसा भी आया जब गोरा ने अपनी तलवार खिलजी की गरदन पर रख दी, लेकिन उस ने चपलता के साथ अपनी बेगम की आड़ ले ली. उस की बेगम ने अपने पति को छोड़ देने की भीख मांगी. गोरा एक पत्नी द्वारा पति के रहम की भीख मांगने पर पसीज गया. तब तक मौका पा कर उस के सेनापति ने गोरा पर हमला बोल दिया.

खिलजी बच निकलने में सफल हो गया, जबकि जफर ने गोरा का सिर काट डाला. तभी गुस्से में बादल ने जफर का भी शीश काट दिया. इस भयंकर युद्ध में गोरा और बादल की मौत हो गई, लेकिन राजा रत्न सिंह वहां से निकल भागने में सफल हो गए.

उन्होंने चित्तौड़गढ़ पहुंच कर सारा वाकया रानी पद्मिनी को सुनाया. पद्मिनी गोरा और बादल की शहादत से काफी आहत हुईं. उन की याद में रत्न सिंह और रानी ने चित्तौड़गढ़ किले में रानी पद्मिनी के महल के दक्षिण में 2 गुंबद बनवाए. उन्हें गोरा और बादल का नाम दिया गया.

खिलजी बच निकलने में सफल हो गया, जबकि जफर ने गोरा का सिर काट डाला. तभी गुस्से में बादल ने जफर का भी शीश काट दिया. इस भयंकर युद्ध में गोरा और बादल की मौत हो गई, लेकिन राजा रत्न सिंह वहां से निकल भागने में सफल हो गए. उन्होंने चितौड़गढ़ पहुंच कर सारा वाकया रानी पद्मिनी को सुनाया. पद्मिनी गोरा और बादल की शहादत से काफी आहत हुईं.

उधर अलाउद्दीन खिलजी अपनी हार से काफी आहत हो गया था. वह बदले की आग में जल रहा था. वह रानी को पाने के लिए भी व्याकुल था. उस की स्थिति एकदम से विक्षिप्तावस्था जैसी हो गई थी.

हार से खुद पर लज्जित था. बदले की आग में जलते हुए खिलजी ने एक बार फिर चित्तौड़गढ़ पर हमला करने की ठान ली. इस बार उस ने पूरी तैयारी के साथ हजारों सैनिकों को ले कर चित्तौड़गढ़ दुर्ग के चारों तरफ डेरा डाल दिया.

यह लड़ाई पहले की लड़ाइयों से ज्यादा खतरनाक थी. एक बार फिर रानी पद्मिनी ने अपनी सूझबूझ से मुगल सेना की बड़ी फौज को हटवाने की पहल की, लेकिन तब तक खिलजी काफी आक्रामक बन चुका था.

वह चोट खाए नाग की तरह बन चुका था. रानी ने खिलजी को राजा के साथ संधि करने की सूचना भेज कर उस के गुस्से को शांत करने की कोशिश की, किंतु उस में सफलता नहीं मिली.

उधर 6 महीने से दुर्ग के घेरे और युद्ध के कारण किले में खाद्य सामग्री की किल्लत होने लगी. दोनों मौसमी फसलों की बुआई तक नहीं हो पाई. हजारों सैनिकों की जानें चली गईं. राजा रत्न सिंह भी परेशान और चिंतित रहने लगे.

मुगल सेना का दबदबा दुर्ग पर बढ़ता ही जा रहा था. रानी को दुर्ग में रहने वाली औरतों और लड़कियों की अस्मिता की चिंता सताने लगी. रानी ने एक बड़ा फैसला लिया. वह फैसला जौहर की चिता का था. उस के लिए सैनिकों ने केसरिया परिधान में इस की तैयारी शुरू कर दी.

गोमुख के उत्तरी भाग वाले मैदान में एक विशाल चिता बनाई गई. रानी पद्मिनी ने अपनी हजारों रमणियों के साथ गोमुख में स्नान किया और सभी एक साथ भयंकर आग की उठती लपटों वाली चिता में प्रवेश कर गईं. उन्होंने सामूहिक जौहर को जिस तरह से अपनाया, उस से उन का अप्रतिम सौंदर्य अग्नि में जल कर कुंदन बन गया.

आसमान में आग की लपटें छू रही थीं. बाहर खिलजी कुछ समझ नहीं पा रहा था कि दुर्ग में आखिर क्या हो रहा था. इस जौहर से राजा रत्न सिंह भी आहत हो गए. उन्होंने दुर्ग में मौजूद 30 हजार से अधिक सैनिकों के लिए किले के द्वार खुलवा दिए.

द्वार खुलते ही सभी सैनिक भूखे शेर की भांति खिलजी की सेना पर टूट पड़े. इस तरह से 6 महीने और 7 दिनों के खूनी संघर्ष के बाद 18 अप्रैल, 1303 को खिलजी को जीत मिली. लेकिन दुर्ग में चारों ओर शव ही शव थे. न कोई स्त्री और न ही कोई बच्चे और जवान व्यक्ति. यहां तक कि राजा रत्न सिंह भी वीरगति को प्राप्त हो चुके थे.

रानी पद्मिनी ने राजपूत नारियों की कुल परंपरा, मर्यादा और गौरव को बचाने का जो बलिदान दिया, वह इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया. ●

कासगंज, उत्तर प्रदेश

2 बच्चों का पिता बनने के बाद भी राकेश ने अपनी प्रेमिका कांस्टेबल रूबी से संबंध खत्म नहीं किए थे. एक दिन जब उस की पत्नी रत्नेश को सच्चाई पता चली तो राकेश ने प्रेमिका की खातिर पत्नी व दोनों बच्चों की हत्या कर शव आंगन में दफना दिए. इस के अलावा अपने दोस्त राजेंद्र उर्फ कलुआ की इस तरह साजिश से हत्या कर दी कि...

ठीक 3 साल पहले 26 अप्रैल, 2018 की सुबह के करीब साढ़े 11 बज रहे थे. उत्तर प्रदेश के कासगंज में थाना ढोलना क्षेत्र के पास रेलवे ट्रैक पर बकरियां चराते हुए एक आदमी चला जा रहा था. ट्रैक के दोनों ओर झाड़जंगल की वजह से वह आदमी लगभग हर दिन इसी ट्रैक के पास अपनी बकरियां चराने के लिए आता था.

लेकिन उस दिन उस ने कुछ ऐसा देखा जिस से उस की रूह कांप गई थी. रेलवे ट्रैक पर एक व्यक्ति की लाश पड़ी थी. उस लाश की स्थिति इतनी भयानक थी, जिसे देख कर उस का दिल दहशत से भर गया था. उस लाश का न तो सिर था और न ही दोनों हाथों की हथेलियां.

यह देख बकरियां चराता हुआ यह शख्स अपनी बकरियां उसी ट्रैक पर छोड़ कर सीधा अपने घर की ओर भागा. उस लाश को देख कर वह इतना डर गया था कि उस के गले से आवाज तक नहीं निकल रही थी.

थोड़ा समय बीता तो वह उसी ट्रैक पर ढोलना थाने के पुलिसकर्मियों की टीम को

मृतका रत्नेश और उस के दोनों बच्चे

दोस्त के षडयंत्र का शिकार बना राजेंद्र उर्फ कलुआ

प्रेमिका की खातिर इतना बड़ा गुनाह

❑ शाहनवाज

ले कर पहुंचा और उस ने पुलिसकर्मियों को दूर से उस जगह की ओर इशारा कर के दिखाया, जहां पर वह लाश पड़ी थी.

ढोलना थाने की पुलिस लाश के पास पहुंची और उन्हें भी अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हुआ. वैसे भी बिना गरदन और हथेलियों वाली डैड बौडी हर दिन देखने को नहीं मिलती.

मौके पर पहुंची पुलिस की टीम ने आसपास के इलाके की घेराबंदी कर तुरंत जांच शुरू कर दी.

कुछ ही देर में देखते ही देखते उस इलाके में और अधिक पुलिसकर्मी आ पहुंचे और उन के साथ फौरैंसिक की पूरी टीम आ पहुंची. नियमित छानबीन करते हुए पुलिस को लाश के शरीर पर पहने कपड़ों की जेब से एक आधार कार्ड और एलआईसी का एक कागज भी मिला.

आधार कार्ड पर मृत शख्स का नाम राकेश था. आधार कार्ड को बेस बना कर पुलिस ने जल्द ही आधार कार्ड पर दिए पते पर संपर्क साधा और मृत व्यक्ति के पिता बनवारी लाल को लाश की पहचान करने के लिए जल्द से जल्द आने के लिए कहा.

कुछ ही घंटों में बनवारी लाल अपने 2 बेटों, राजीव और प्रवेश के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए. तीनों का शरीर पसीने से लथपथ था.

बनवारी लाल एक रिटायर्ड पुलिसकर्मी होने के नाते मामले की गंभीरता को बहुत अच्छे से समझ सकते थे. लेकिन बात लाश की पहचान की थी, वह भी तब जब उन्हें अपने बेटे की लाश की पहचान करनी थी तो उन का दिल जोरों से धड़क रहा था.

वह घटनास्थल पर मौजूद पुलिसकर्मियों से हांफते हुए बोले, ''साहब, आप ने मुझे याद किया ?''

ढोलना थानाप्रभारी ने बनवारी लाल से कहा, ''जी हां, आप को एक लाश की पहचान करने के लिए बुलाया गया है. क्योंकि मृत व्यक्ति की जेब से बरामद आधार कार्ड में राकेश का नाम दिया हुआ था और कुछ एलआईसी के कागजात भी थे.''

बनवारी लाल हांफते स्वर में डरते हुए बोले, ''जी साहब, आप हमें लाश के पास ले कर चलिए.''

यह कहते हुए वह पुलिस टीम के साथ चल दिए. पुलिस की एक टीम बनवारी लाल और उन के दोनों बेटों को वहां ले गई, जहां पर मृत लाश को नीले रंग की प्लास्टिक की शीट में लपेट कर रखा गया था.

बनवारी लाल ने की लाश की शिनाख्त

लाश के पास खड़े व्यक्ति ने बनवारी लाल और अन्य 2 लोगों को आते हुए देख कर नीली शीट में लगी चेन को नीचे की ओर

घर के आंगन से बरामद रत्नेश और उस के बच्चों के कंकाल और हत्या में प्रयुक्त लोहे की रौड

पैरों तक खींचा और बनवारी लाल को मृतक को देखने देने के लिए खुद साइड में खड़ा हो गया.

मृत व्यक्ति का सिर नहीं होने की वजह से बनवारी लाल उसे एक नजर देख कर डर से कांप गए, लेकिन अगले ही पल उन का डर शोक में तब तब्दील हो गया, जब उन्होंने मृत व्यक्ति की लाश के पहने कपड़ों को देखा.

ये वही कपड़े थे जो बनवारी लाल ने कुछ महीनों पहले अपने बेटे राकेश को उस के जन्मदिन पर गिफ्ट किए थे.

कपड़े देख कर बनवारी लाल अचानक से फूटफूट कर रोनेबिलखने लगे और जोर से चिल्लाचिल्ला कर राकेश का नाम ले कर चीखने लगे.

अपने भाई की लाश की ऐसी हालत और पिता को रोताबिलखता देख कर राजीव और प्रवेश की आंखों से आंसू रोके नहीं रुके. लेकिन फिर भी पिता का सहारा बनते हुए दोनों ने बनवारी लाल को लाश से दूर किया.

कुछ देर में थानाप्रभारी वहां आए और उन्होंने रोते हुए बनवारी लाल को ढांढस बंधाया. उन्होंने बनवारी लाल से कहा, ''मुझे अफसोस है आप के बेटे की मौत पर. हमारी तफ्तीश जारी है. केस को सुलझाने के लिए हमें आप से राकेश को ले कर कुछ जरूरी सवाल करने हैं. आप थाने में पहुंचिए हम यहां पर अपनी जांच कर के थाने लौट कर आप से बात करेंगे.''

सिर और हथेलियां कटी लाश को पहचानना किसी के वश की बात नहीं थी, इसलिए थानाप्रभारी ने लाश की पहचान को पुख्ता करने के लिए लाश की डीएनए जांच करवाना जरूरी समझा.

उन्होंने जल्द ही राकेश के मातापिता से संपर्क कर उन का डीएनए सैंपल लिया और उसे आगरा स्थित विधि विज्ञान प्रयोगशाला में भेज दिया.

इस घटना को तीन साल हो गए और साल 2021 की अगस्त में एक दिन अचानक से कासगंज के ढोलना थाने में आगरा के विधि

विज्ञान प्रयोगशाला से डीएनए रिपोर्ट का रिजल्ट आया.

डीएनए रिपोर्ट ने बढ़ाई पुलिस की बेचैनी

रिपोर्ट खोल कर जब थानाप्रभारी ने देखा तो उन की आंखें खुली की खुली रह गईं. उन के मन में हजारों सवाल तूफान की तरह खड़े हो उठे. 3 साल से ठंडे बस्ते में पड़ा मामला अचानक से अब एक नया मोड़ ले चुका था.

दरअसल, जिस डीएनए रिपोर्ट का इतने लंबे समय से इंतजार हो रहा था, उस रिपोर्ट में मृत व्यक्ति का डीएनए बनवारी लाल और इंद्रावती के डीएनए से कोई मैच ही नहीं था.

यह देख कर थानाप्रभारी ने 3 साल पुरानी इस केस की फाइलें निकलवाईं. मृत व्यक्ति की पहचान का पता लगाने के लिए उन्होंने अप्रैल, 2018 में उस इलाके से गुमशुदा लोगों की लिस्ट निकलवाई.

राकेश की उम्र के लोगों में उस इलाके से सिर्फ एक ही आदमी गायब हुआ था, वह था गांव नौगवां, थाना गंगीरी, अलीगढ़ का रहने वाला राजेंद्र उर्फ कलुआ.

बिलकुल समय न गंवाते हुए पुलिस तुरंत कलुआ के घर पहुंची और उन से कलुआ के बारे में पूछताछ की. कलुआ तो नहीं मिला लेकिन पुलिस को कई ऐसे तार मिल गए जोकि इस केस से जुड़े हो सकते थे.

कलुआ के मातापिता ने बताया कि उन के बेटे की दोस्ती राकेश के साथ थी. 25 अप्रैल को गायब होने के एक दिन पहले राकेश कलुआ को ले कर अपने बीवीबच्चों को ढूंढने का नाम ले कर उसे अपने साथ ले गया था. जिस के बाद कलुआ फिर कभी घर नहीं लौटा.

कलुआ के मांबाप से उन का डीएनए का सैंपल ले कर पुलिस ने फिर से आगरा स्थित विधिविज्ञान प्रयोगशाला भेज दिया. इस बार डीएनए की रिपोर्ट जल्द ही आ गई थी.

रिपोर्ट से यह साफ हो गया था कि 3 साल पहले रेलवे ट्रैक पर मरने वाला व्यक्ति राकेश नहीं बल्कि राजेंद्र उर्फ कलुआ था, क्योंकि डीएनए के सैंपल कलुआ के मांबाप से मिल गए थे.

पूरे मामले में कुछ इस तरह से मोड़ आना किसी को भी अपना सिर पकड़ने पर मजबूर कर सकता था जोकि थानाप्रभारी ने किया भी.

थानाप्रभारी ने 3 साल पहले अपने मन में उठने वाले सवालों को एक बार फिर से महसूस किया. उन्हें अचानक से वह सवाल याद आया कि सिर कटी लाश को देख कर बनवारी लाल ने एक पल में कैसे पहचान लिया कि यह उन के बेटे की लाश थी?

कलुआ से किस की कैसी दुश्मनी हो सकती थी? इस के अलावा इसी तरह के और भी कई सवाल थानाप्रभारी के मन में उठने लगे थे. इन सभी सवालों को ढूंढने के लिए पुलिस की टीम ने तत्परता से काम करना शुरू कर दिया था.

अगस्त के आखिरी दिनों तक पुलिस ने इस मामले की छानबीन के लिए प्रदेश में अपने मुखबिरों को सतर्क कर दिया था. उसी दौरान 31 अगस्त, 2021 के दिन पुलिस के एक ऐसे ही मुखबिर ने बताया कि वे जिस व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं, उसे उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा से 10 किलोमीटर दूर बिसरख गांव में देखा गया है. यह व्यक्ति खुद राकेश ही था.

ढोलना पुलिस बिना किसी देरी के मुखबिर की दी हुई सूचना पर बिसरख गांव जाने के लिए निकल पड़ी. उसी बीच ढोलना थानाप्रभारी ने बिसरख थाने की पुलिस को इस की सूचना दी.

करीब 2 घंटे बाद मुखबिर के बताए हुए पते पर छापा मार कर पुलिस की टीम ने दिलीप शर्मा नाम के एक शख्स को पकड़ लिया, जिस का हुलिया काफी हद तक राकेश की तरह था.

दिलीप नाम का यह शख्स इलाके में प्रेमिका रूबी के घर में मौजूद था और वे दोनों कमरे में बंद हो कर एकदूसरे के साथ प्रेम प्रसंग में लीन थे. मामले की गंभीरता को देखते हुए ढोलना थानाप्रभारी बिसरख थाने में दिलीप को पूछताछ के लिए ले आए.

पूछताछ के दौरान पहले तो दिलीप ने खुद की पहचान दिलीप के नाम से बताई, लेकिन जब पुलिस की टीम ने उस की फोन लोकेशन, वाट्सऐप चैट इत्यादि के रिकौर्ड के आधार पर पूछताछ करनी शुरू की तो वह चारों खाने चित्त हो गया और अपना असली नाम राकेश बताते हुए पुलिस के सामने अपना गुनाह कुबूल कर लिया.

उस ने सिर्फ अपने दोस्त कलुआ की ही हत्या नहीं, बल्कि अपनी पत्नी और 2 बच्चों की हत्या का जुर्म भी कुबूल कर लिया, जिसे सुन कर सब की आंखें खुली की खुली रह गईं. इस शातिर कातिल के कत्ल की कहानी सुन कर किसी की भी रूह कांप जाए.

नौगवां, गंगीरी अलीगढ़ का रहने वाला राकेश ग्रेटर नोएडा में एक डाइग्नोसिस सेंटर में लैब टेक्नीशियन था. वह अपने छोटे से परिवार, जिस में उस की पत्नी रत्नेश, 3 साल की बेटी अवनि और डेढ़ साल के बेटे अर्पित के साथ ग्रेटर नोएडा से 10 किलोमीटर दूर चिपयाना गांव की पंचविहार कालोनी में रहता था. यह उस का अपना घर था.

उस के छोटे से परिवार में खुशियों की कोई कमी नहीं थी, लेकिन राकेश अपने शादीशुदा जीवन से खुश नहीं था. राकेश की शादी साल 2012 में उत्तर प्रदेश के एटा की रहने वाली रत्नेश से हुई थी. लेकिन यह शादी उस ने अपने परिवार के दबाव में की थी.

राकेश प्रेमिका से करना चाहता था शादी

दरअसल, राकेश बिसरख गांव की रहने वाली रूबी को अपनी शादी से पहले से प्यार करता था. दोनों किसी समय में साथ में पढ़ते थे. लेकिन परिवार की जिम्मेदारियों के बोझ की वजह से उस ने पहले प्राइवेट इंस्टीट्यूट से लैब टेक्नीशियन का कोर्स किया और ग्रेटर नोएडा में जौब करने लगा.

परिवार के दबाव में उस ने रत्नेश से शादी तो कर ली लेकिन रूबी के साथ उस का प्रेम संबंध खत्म नहीं हुआ, बल्कि वक्त के साथ उन का प्यार परवान चढ़ता गया. इसी दौरान रूबी की उत्तर प्रदेश में कांस्टेबल के पद पर नौकरी लग गई. राकेश के रत्नेश के साथ बच्चे भी हो गए. पहले अवनि फिर अगले साल अर्पित.

अपने परिवार में इतना उलझा हुआ होने के बावजूद वह रूबी से मिलने के लिए समय निकाल लिया करता था. रूबी और राकेश अकसर वाट्सऐप के जरिए अश्लील चैट भी

पुलिस हिरासत में बीवीबच्चों और दोस्त का हत्यारा राकेश उर्फ दिलीप शर्मा, उस की प्रेमिका रूबी तथा परिवार के अन्य सदस्य

किया करते थे, जिस से राकेश के मन में रूबी के लिए प्यार का तूफान उमड़ पड़ता था.

साल 2018 की वैलेनटाइंस डे (14 फरवरी) के दिन जब राकेश इसी तरह से रूबी के साथ वाट्सऐप पर सैक्स चैट में लीन था तो उस की पत्नी रत्नेश ने राकेश को उसे पीछे से रंगेहाथों पकड़ लिया. उस दिन राकेश और रत्नेश का खूब झगड़ा भी हुआ.

प्रेमिका की खातिर पत्नी व 2 बच्चों की हत्या कर आंगन में गाड़ा

दोनों के बीच झगड़ा अपने चरम पर पहुंच चुका था और राकेश ने अपना आपा खो दिया. राकेश ने आव देखा न ताव, रत्नेश पर लोहे की रौड से वार कर उस का सिर फाड़ दिया. रत्नेश की वहीं मौके पर मौत हो गई.

लेकिन रत्नेश की मौत के बाद मामला यहीं ठंडा नहीं हुआ. उस ने इस मौके का फायदा उठाया और अपने बच्चों से भी अपना पिंड छुड़ाने के बारे में विचार किया. उस ने जिस लोहे की रौड से रत्नेश की हत्या की थी, उसी से अपने दोनों बच्चों को भी मौत के घाट उतार दिया.

उस ने रातोंरात उन तीनों के लाशों को छिपाने के लिए अपने ही घर के आंगन में गहरा गड्ढा खोद दिया और उन तीनों को उसी में दफना दिया.

अगले दिन उस ने मजदूरों को बुलवा कर अपने घर के आंगन में सीमेंट की पुताई कर फर्श बनवा दिया.

यही नहीं, उस ने उसी दिन अपने स्थानीय इलाके के पुलिस थाने में जा कर अपने बीवी बच्चों की गुमशुदगी की सूचना भी दर्ज करवा दी. और यह सब उस ने अकेले नहीं किया, बल्कि अपनी प्रेमिका कांस्टेबल रूबी के दिए प्लान के अनुसार किया.

कुछ दिनों बाद जब रत्नेश के मायके से राकेश को फोन आने लगे तो पहले तो राकेश उन की बात यूं ही टालता रहा, लेकिन जब मायके वालों की तरफ से जोर बढ़ता गया तो उस ने अपनी प्रेमिका रूबी को यह बात बताई.

रूबी ने इस से बचने के लिए एक और प्लान सुझाया. जिस को सफल बनाने के लिए राकेश को एक और कत्ल करना था, जोकि उसी की उम्र और कदकाठी का होना चाहिए था. इस के लिए उस ने अपने गांव के बचपन के दोस्त राजेंद्र उर्फ कलुआ को चुना.

वह अगले दिन गांव जा कर अपनी बीवीबच्चों की तलाश करने के बहाने अपने साथ कलुआ को ले कर निकल गया. उस ने कलुआ को रास्ते में दारू भी पिलाई और खाना भी खिलाया.

जब वे रेलवे ट्रैक के पास सुनसान इलाके में पहुंचे तो राकेश ने मौका देख कर पहले से जंगलों में छिपा कर रखे गंडासे से कलुआ पर प्रहार कर दिया. कलुआ राकेश के पहले ही हमले को नहीं सह पाया और बेहाल हो कर नीचे गिर पड़ा.

राकेश ने घर वालों को किया साजिश में शामिल

राकेश ने मौके का फायदा उठा कर कलुआ पर इतने वार कर दिए कि उस की जान वहीं पर ही निकल गई.

राकेश ने उस के बाद कलुआ का सिर और हाथ के पंजे काट दिए ताकि लाश की पहचान न हो सके.

अपने इस काले कत्ल की दास्तान में उस ने अपने घरवालों को भी शरीक कर लिया. राकेश ने अपने घर वालों को लालच दिया कि अगर उस की शादी रूबी से हो गई तो मोटा पैसा दहेज में मिलेगा.

उस ने लाश की पहचान करने के लिए अपने पिता को राजी कर लिया. जिस के बाद ये सारी कहानी शुरू हुई.

इस बीच राकेश ने अपनी पहचान छिपाने के लिए एक फरजी आधार कार्ड भी बनवा लिया, जिस में उस ने अपना नाम दिलीप शर्मा रखा. रूबी की मदद से उस ने प्राइवेट अस्पताल से कुछ दिनों में कहीं बाहर जा कर अपने नाक की प्लास्टिक सर्जरी भी करवा ली. लेकिन अंत में वह पकड़ा ही गया.

पकड़े जाने के बाद पुलिस ने राकेश की निशानदेही पर पंचविहार कालोनी में उस के घर के आंगन में गड्ढा खुदवा कर उस की पत्नी और दोनों बच्चों के कंकाल और उस लोहे की रौड को बरामद कर लिया, जिस से उस ने अपने पूरे परिवार का खात्मा कर दिया था.

उस के बाद राकेश को साथ ले कर रेलवे स्टेशन के पास उस जगह पर छापा मारा, जहां पर उस ने कलुआ का कत्ल कर गंडासा छिपाया था.

पुलिस ने इस पूरे मामले में अभी तक कुल 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है. जिन में राकेश, उस की प्रेमिका रूबी, पिता बनवारी लाल, माता इंद्रावती व दोनों भाई राजीव और प्रवेश शामिल हैं. वे सभी फिलहाल जेल की सलाखों के पीछे हैं. ●

फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

प्यार को भस्म कर गया नफरत का शोला

❑ दिनेश बैजल 'राज'/संजीव दुबे

नेहा और उत्तम: प्यार के चलते अपनों की नफरत का शिकार बने

एक ही जाति के आसपड़ोस में रहने वाले नेहा और उत्तम एकदूसरे को मोहब्बत करते थे और शादी करना चाहते थे. लेकिन नेहा के पिता देवीराम यादव ने इस की इजाजत नहीं दी तो दोनों घर से भाग गए. इस के बाद देवीराम की नफरत इन के प्यार पर शोला बन कर ऐसी टूटी कि...

उत्तर प्रदेश का फिरोजाबाद जिला चूड़ियों एवं कांच के सामान बनाने के लिए प्रसिद्ध है. इसी जिले के थाना सिरसागंज के गांव जहांगीरपुर में देवीराम यादव अपने परिवार के साथ रहता था. देवीराम खेतीकिसानी करता था.

परिवार में उस की पत्नी के अलावा 3 बेटियां व सब से छोटा बेटा था. इन में तीसरे नंबर की बेटी नेहा थी. सुंदर होने के साथसाथ चंचल स्वभाव की नेहा गांव से करीब 10 किलोमीटर दूर सिरसागंज के एक इंटर कालेज में 10वीं कक्षा में पढ़ती थी.

इसी गांव में देवीराम के मकान के सामने सुघर सिंह यादव भी अपने परिवार के साथ रहता था. वह भी खेतीकिसानी करता था. इस काम में उस के बेटे उस का हाथ बंटाते थे. 4 बेटों में उत्तम तीसरे नंबर का था. कक्षा 10 में फेल होने के बाद उस का मन पढ़ाई से उचट गया. इस के बाद वह शटरिंग का काम करने लगा था.

नेहा और उत्तम के घर आमनेसामने होने और एक ही जाति के होने से दोनों के परिवारों में नजदीकियां थीं. 16 वर्षीय नेहा जवानी की दहलीज पर कदम रख चुकी थी. इस उम्र में लड़कियों का लड़कों के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक बात है. नेहा के साथ भी यही हुआ.

जब कभी घर के सामने दरवाजे पर खड़े उत्तम पर उस की नजर पड़ जाती, वह चोर निगाह से उसे देख लेती. धीरेधीरे उसे उत्तम अच्छा लगने लगा. जब वह स्कूल जाती तो रास्ते में अकसर उत्तम मिल जाता था. वह भी उसे चाहत की नजरों से देखता था. उस की उम्र करीब 20 साल थी. धीरेधीरे दोनों एकदूसरे की ओर आकर्षित हुए.

नेहा और उत्तम के बीच लुकाछिपी का यह सिलसिला काफी दिनों तक चलता रहा. दोनों एकदूसरे से अपने प्यार का इजहार करने में सकुचा रहे थे, क्योंकि उन का यह पहलापहला प्यार था.

एक दिन स्कूल जाते समय रास्ते में उत्तम ने हिम्मत जुटा कर नेहा से पूछ ही लिया, नेहा कैसी हो? तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?

नेहा तो इस पल का न जाने कब से इंतजार कर रही थी. उस ने मुसकराते हुए कहा, ''मेरी पढ़ाई तो ठीक चल रही है, पर तुम कैसे हो?

''मैं भी अच्छा हूं.'' उत्तम ने जवाब दिया.

''उत्तम तुम ने पढ़ाई क्यों छोड़ दी?'' नेहा ने पूछा.

''मेरा मन नहीं लगता था. कुछ काम करूंगा तो चार पैसे इकट्ठा कर लूंगा.''

जब भी दोनों मिलते एकदूसरे की तरफ देख कर मुसकरा देते थे. इस दौरान दोनों का झुकाव एकदूसरे के प्रति गया. धीरेधीरे नेहा और उत्तम के प्रेम संबंध हो गए.

दोनों ने एकदूसरे को अपनेअपने मोबाइल नंबर भी दे दिए थे. जिस से उन के बीच फोन पर भी बातचीत होने लगी. रही बात मिलने की तो नेहा से वह उस के स्कूल जाने पर सिरसागंज में बेरोकटोक मिल लेता था.

धीरेधीरे उन का प्यार परवान चढ़ने लगा. दोनों किसी न किसी बहाने मिल लेते थे. उन के प्रेमसंबंध यहां तक पहुंच गए थे कि उन्होंने शादी तक करने का फैसला कर लिया था.

वे एक ही जाति के थे, इसलिए उन्हें पूरा विश्वास था कि उन के घर वालों को उन की शादी पर कोई ऐतराज नहीं होगा. लेकिन उन के सामने समस्या यह थी कि नेहा से बड़ी 2 बहनें अभी अविवाहित थीं.

छायांकन: मौडलिंग

नेहा और उत्तम मिलने और मोबाइल पर बात करने में पूरी सावधानी बरतते थे. लेकिन गांवों में प्यारमोहब्बत या अवैध संबंधों की बातें ज्यादा दिनों तक छिपती नहीं हैं. नेहा और उत्तम के मामले में भी यही हुआ.

प्यार पर पहरा भी हुआ नाकाम

कई बार दोनों को साथ पकड़ा गया. इस के बाद नेहा के घर वालों ने उसे काफी समझाया और उत्तम से न मिलने की धमकी भी दी गई. किशोरी के परिजनों ने मेलजोल पर रोक के लिए उत्तम और उस के परिवार से भी शिकायत की. चेतावनी के बाद भी नेहा और उत्तम मिलते रहे, भविष्य की भूमिका बनाते रहे. हां, दोनों ने अब सावधानी जरूर बरतनी शुरू कर दी थी.

लेकिन प्रेम का रंग हलका हो या गाढ़ा, अपना रंग आसानी से नहीं छोड़ता. ज्यादा अंकुश लगाने का परिणाम यह हुआ कि प्रेमीयुगल पर प्यार का ऐसा खुमार चढ़ा कि दोनों ने घर से भाग कर शादी का निर्णय ले लिया. और फिर दोनों मार्च 2021 में अपनेअपने घरों से भाग गए.

किसी तरह इस बात का पता नेहा के घर वालों को लग गया. उन्होंने दोनों की तलाश शुरू कर दी. दोनों प्रेमी अभी सिरसागंज ही पहुंचे थे कि धर लिए गए.

दोनों को घर लाया गया. हंगामा भी हुआ. गांव वालों ने बीचबचाव कर दोनों पक्षों में समझौता करा दिया. समझौता भले ही हो गया हो, लेकिन दोनों परिवारों में तल्खी बढ़ती गई. अब नेहा पर कड़ा पहरा रहने लगा.

प्रेमी युगल किसी तरह सीने पर पत्थर रख कर कई महीने शांत रहे. नेहा के घर वालों ने भी सोचा कि अब शायद नेहा के सिर से प्यार का भूत उतर गया है. लेकिन उन की सोच गलत थी. दोनों के दिल में प्यार की आग धधक रही थी.

नेहा ने इस बात का फायदा उठाया और एक दिन मौका मिलते ही उत्तम से मिली. वह उत्तम को देखते ही उस से लिपट गई. उस की आंखों में आंसू आ गए. वह बोली, ''उत्तम, मेरे घर वालों और गांव वालों से डर कर तुम मुझे कहीं भूल तो नहीं जाओगे?''

> प्रेमी युगल के शवों की तलाश के लिए गोताखोरों की टीम बुलाई गई. 26 अगस्त को पीएसी के गोताखोर स्टीमर ले कर बटेश्वर के नौरंगी घाट पहुंचे और देवीराम द्वारा यमुना में शव फेंके जाने वाले स्थान व आसपास कई किलोमीटर के क्षेत्र में शवों की तलाश शुरू की गई.

इस पर उत्तम ने उस के होंठों पर हाथ रख कर उसे चुप कराते हुए कहा, ''नेहा दो सच्चे प्रेमियों को मिलने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती. हमारे प्यार के बीच चाहे कितनी भी मुश्किलें आएं, मैं वादा करता हूं कि तुम्हारा हर तरह से साथ दूंगा. मैं जिंदगी भर तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा.''

31 जुलाई, 2021 की सुबह 10 बजे दोनों अचानक लापता हो गए. उस समय दोनों के परिवार व आसपास के लोग अपनेअपने काम पर चले गए थे. प्रेमी युगल के फिर से लापता होने की किसी को खबर नहीं हुई.

काफी देर बाद दोनों के घर वालों को इस बात का पता चला. घर वाले उन्हें खोजने में जुट गए. कई घंटे की तलाश के बाद भी उन का सुराग नहीं लगा.

गांव वालों ने इस संबंध में पुलिस को सूचना देने की बात कही. लेकिन बदनामी के डर से नेहा के पिता देवीराम ने थाने में सूचना देने या रिपोर्ट करने से मना कर दिया.

सुघर सिंह और उस के परिजन बेटे उत्तम को रिश्तेदारियों व संभावित स्थानों पर तलाश करते रहे. इस के बाद 10 अगस्त को थाना सिरसागंज में सुघर सिंह ने अपने बेटे उत्तम की गुमशुदगी दर्ज करा दी.

गुमशुदगी दर्ज कराने के बाद गांव में उसे पता चला कि उत्तम का नेहा के घरवालों ने अपहरण कर लिया है.

पुलिस की 6 टीमें जुटीं जांच में

इस बात की जानकारी होने पर सुघर सिंह ने 12 अगस्त को जान से मारने की नीयत से उत्तम के अपहरण की रिपोर्ट भादंवि की धारा 364 के अंतर्गत नेहा के पिता देवीराम, चाचा शिवराज व गांव के ही श्याम बिहारी, रोहित, राहुल, अमन उर्फ मोनू तथा चालक गुंजन निवासी कुतुकपुर के विरुद्ध दर्ज करा दी.

रिपोर्ट दर्ज होने की भनक मिलते ही आरोपी फरार हो गए. मामले की गंभीरता को देखते हुए एसएसपी अशोक कुमार शुक्ला ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए एसपी (ग्रामीण) डा. अखिलेश नारायण के नेतृत्व में 6 टीमों का गठन किया.

पुलिस ने प्रेमी युगल की खोजबीन करते हुए 24 अगस्त को नेहा के पिता देवीराम को

पीएसी के गोताखोरों द्वारा 19 घंटे तलाश किए जाने के बावजूद प्रेमी जोड़े का शव बरामद नहीं हुआ

उत्तम यादव का शव घर आने पर रोतीबिलखती उस के घर और आसपड़ोस की महिलाएं

शक के आधार पर हिरासत में ले लिया. पुलिस को किसी अनहोनी का शक था क्योंकि देवीराम ने अपनी नाबालिग बेटी के लापता होने के संबंध में थाने में कोई रिपोर्ट दर्ज क्यों नहीं कराई थी ?

पुलिस ने जब उस से सख्ती से पूछताछ की तो वह टूट गया. उस ने अपना जुर्म कुबूल करते हुए कहा, ''बेटी नेहा के अपने प्रेमी उत्तम के साथ भाग जाने से उस के परिजन काफी नाराज थे. इस कृत्य से बेटी ने परिवार की नाक कटवा दी.''

इस सनसनीखेज अपहरण व हत्याकांड का रहस्योद्घाटन करते हुए पुलिस को देवीराम ने जो खौफनाक जानकारी दी, वह रोंगटे खड़ी कर देने वाली थी.

देवीराम ने बताया कि 31 जुलाई, 2021 को नेहा जब उत्तम के साथ घर से भाग गई तो सभी लोग उस के लिए परेशान हो गए. इस बीच उन की खोजबीन की गई. इसी दौरान दोपहर को उत्तम के दोस्त वीनेश निवासी कुतुकपुर ने फोन पर उसे सूचना दी कि दोनों पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हैं. तब उस ने वीनेश से कहा कि वह किसी तरह वीनेश को वहीं रोके रहे. वह दिल्ली पहुंच रहा है. वीनेश ने ऐसा ही किया.

उधर देवीराम कुछ लोगों को साथ ले कर कार से दिल्ली के लिए निकल गया और पुरानी दिल्ली पहुंच गया. पिता और अन्य को देख कर नेहा डर गई. प्रेमी युगल समझ नहीं पा रहा था कि उन के साथ अब क्या होगा.

देवीराम नेहा और उत्तम को रात करीब 2 बजे थाना नसीरपुर स्थित बांकलपुर भट्ठे पर ले आया. यहां दोनों को समझाने का प्रयास किया. लेकिन वे नहीं माने.

उन के न मानने पर उस ने अपने साथ आए लोगों को घर भेज दिया. इस के बाद फोन कर अपने भाई शिवराज को इस घटनाक्रम की जानकारी दी.

शिवराज आगरा जिले के पिनाहट स्थित बाबा बर्फानी कोल्ड स्टोर पर मुनीम की नौकरी करता था. शिवराज कार ले कर भट्ठे पर आ गया. यहां से नेहा और उत्तम को कार में बैठा कर वे नौरंगी घाट पहुंचे.

उन्होंने पहले बेटी नेहा की गला दबा कर हत्या कर लाश यमुना में फेंक दी. इस बीच उत्तम ने शोर मचाया. तब उत्तम की भी गला दबा कर हत्या कर उस की लाश भी उसी स्थान पर यमुना में फेंक दी. शिवराज गाड़ी ले कर पिनाहट चला गया. जबकि देवीराम पैदल ही गांव पहुंचा.

> पुलिस ने प्रेमी युगल की खोजबीन करते हुए 24 अगस्त को नेहा के पिता देवीराम को शक के आधार पर हिरासत में ले लिया. पुलिस को किसी अनहोनी का शक था, क्योंकि देवीराम ने अपनी नाबालिग बेटी के लापता होने के संबंध में थाने में कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई थी.

इस के बाद एसएसपी अशोक कुमार शुक्ला ने आगरा पुलिस से संपर्क किया. प्रेमी युगल के शवों की तलाश के लिए गोताखोरों की टीम बुलाई गई.

26 अगस्त को पीएसी के गोताखोर स्टीमर ले कर बटेश्वर के नौरंगी घाट पहुंचे और देवीराम द्वारा यमुना में शव फेंके जाने वाले स्थान व आसपास कई किलोमीटर के क्षेत्र में शवों की तलाश शुरू की गई.

19 घंटे तक पुलिस के गोताखोरों ने तलाशे शव

19 घंटे की तलाश के बाद भी युवक व किशोरी नेहा के शव बरामद नहीं हुए. एसपी अशोक कुमार शुक्ला के अनुसार शवों को फेंके हुए काफी समय हो चुका है. ऐसे में शवों के बह कर जाने और जलीय जंतुओं द्वारा खाने से भी इनकार नहीं किया जा सकता है. हालांकि पुलिस ने हार नहीं मानी और शवों की अपने स्तर से यमुना व आसपास के क्षेत्रों में तलाश जारी रखी.

जबकि वास्तविक कहानी कुछ और ही निकली. जहांगीरपुर गांव का यह प्रेमी जोड़ा औनर किलिंग का शिकार तो हुआ था. लेकिन पूरे मामले के तार उत्तर प्रदेश सहित दिल्ली, राजस्थान व मध्य प्रदेश से जुड़े निकले.

राजस्थान व मध्य प्रदेश में एक युवक और एक किशोरी के शव मिलने के बाद इस मामले में 42 दिन बाद चौंकाने वाला खुलासा हुआ.

प्रेमी युगल का देवीराम व घरवालों ने दिल्ली से अपहरण कर दोनों की हत्या कर शव राजस्थान व मध्य प्रदेश में फेंक दिए थे. देवीलाल पुलिस को गुमराह कर दोनों के शवों को बटेश्वर स्थित नौरंगी घाट स्थित यमुना में फेंकने की बात कहता रहा.

इस घटना का खुलासा दूसरे आरोपी शिवराज, जोकि नेहा का चाचा है, ने पुलिस रिमांड के दौरान किया. नामजद आरोपी शिवराज ने 3 सितंबर को कोर्ट में सरेंडर कर दिया था. जहां से उसे जेल भेज दिया गया.

पुलिस ने उस की रिमांड के लिए 13

नेहा और उत्तम की हत्या के आरोपी नेहा का पिता देवीराम यादव, चाचा शिवराज यादव और सुनील

सितंबर को प्रार्थनापत्र दिया. इस पर कोर्ट ने 14 सितंबर को 48 घंटे का रिमांड स्वीकृत किया.

थाना सिरसागंज के थानाप्रभारी प्रवेंद्र कुमार व आईओ एसएसआई मोहम्मद खालिद आरोपी शिवराज को ले कर थाने आए और उस से पूछताछ की. इस संबंध में जो असली कहानी सामने आई, वह इस प्रकार निकली—

31 जुलाई, 2021 को नेहा व उत्तम गांव से भाग कर दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचे थे. वहां पहुंच कर उत्तम ने रहने के लिए कमरा किराए पर लेने का निर्णय लिया. इस काम में मदद के लिए उस ने कुतुकपुर निवासी अपने करीबी दोस्त वीनेश को फोन किया.

वीनेश के पिता विनोद दिल्ली में काम करते हैं. वीनेश दिल्ली आताजाता रहता था. वीनेश उस समय अपने गांव में था. उसे उत्तम ने पूरी बात बताई और दिल्ली में रहने के लिए कमरा किराए पर दिलाने की बात कही.

वीनेश ने यह जानकारी नेहा के पिता देवीराम को दे दी. जानकारी मिलते ही देवीराम ने कहा, ''वीनेश, तुम उसे वहीं रोक कर रखो.''

इस पर वीनेश ने उत्तम से कहा, ''तुम मैट्रो पर ही मिलना. मैं दिल्ली आ रहा हूं. वहां तुम्हें कमरा दिलवा दूंगा.''

यह सुन कर उत्तम और नेहा को तसल्ली हुई. वे वीनेश के आने का इंतजार करने लगे.

देवीराम अपने भाई शिवराज व गांव के श्याम बिहारी, रोहित, राहुल, अमन उर्फ मोनू व कुतुकपुर के वीनेश व गुंजन ड्राइवर के साथ ईको कार से 31 जुलाई को ही दिल्ली के लिए रवाना हो गए. रास्ते में बीचबीच में वीनेश उत्तम से मोबाइल पर बात करता रहा.

दिल्ली पहुंच कर वीनेश ने उत्तम से संपर्क किया. अचानक वीनेश के साथ अपने घरवालों को देख कर नेहा व उत्तम डर गए. लेकिन देवीराम ने दोनों को प्यार से समझाते हुए कहा, ''तुम लोगों को इस तरह नहीं भागना चाहिए था. इस से दोनों ही परिवारों की गांव में बदनामी होगी. तुम लोग घर चलो.''

बहलाफुसला कर वे दोनों को दिल्ली से अपने साथ ले आए. रात करीब एक बजे वे लोग थाना नसीरपुर स्थित बांकलपुर भट्ठे पर पहुंचे. यहां दोनों को समझाते रहे कि वे एकदूसरे को भूल जाएं. लेकिन दोनों एक साथ रहने की जिद पर अड़े रहे. उन्होंने कहा कि वे शादी करना चाहते हैं और शादी के बाद वे गांव नहीं आएंगे.

> पुलिस इस अपहरण और हत्याकांड में शामिल 12 आरोपियों में से देवीराम व सुनील को गिरफ्तार कर चुकी है, जबकि शिवराज ने कोर्ट में सरेंडर कर दिया था. अन्य फरार चल रहे आरोपियों बालकराम, जैकी, जितेंद्र, श्याम बिहारी, रोहित, राहुल, अमन उर्फ मोनू, गुंजन व दगाबाज दोस्त वीनेश की तलाश की जा रही थी.

दगाबाज निकला जिगरी दोस्त वीनेश

उत्तम ने जिस जिगरी दोस्त वीनेश से सिर छिपाने के लिए मकान दिलाने को कहा था. वही दोस्त प्रेमी युगल की जान का दुश्मन बन गया. उस ने फोन कर नेहा के पिता देवीराम को दोनों के ठिकाने की जानकारी दे कर दिल्ली ले जा कर उन्हें धोखे से पकड़वा दिया. दोस्त यदि दगा न करता तो आज प्रेमी युगल जिंदा होता.

तभी देवीराम के भाई शिवराज ने अपने परिचित जितेंद्र शर्मा को फोन कर आलू व्यापारी सुनील की बोलेरो ले कर आने को कहा. कुछ देर बाद जितेंद्र शर्मा सुनील के साथ उस की बोलेरो ले कर रात 3 बजे भट्ठे पर पहुंच गया.

उत्तम और नेहा को भट्ठे से पिनाहट स्थित कोल्ड स्टोरेज पर ला कर शिवराज ने एक कमरे में दोनों के हाथपैर बांध कर बंधक बना कर 2 दिन यानी 2 व 3 अगस्त को रखा. यहां देवीराम ने अपने भाई व अन्य के साथ एक खौफनाक साजिश रची.

इस के बाद देवीराम ने अपने परिचित बालकराम को फोन कर मध्य प्रदेश के भिंड

सुखी जीवन संतुष्ट परिवार समृद्ध घर की मार्गदर्शक पत्रिकाएं

हमारा उद्देश्य पाठकों को ऐसे नए युग में ले जाना है जहां कड़ी मेहनत, लगन व बुद्धि के बल से सफलता प्राप्त होती है न कि जाति, धर्म, पाखंड, जोड़तोड़ या भ्रष्टाचार की वजह से. यदि हम आत्मसम्मान के साथ सिर ऊंचा कर के जीना चाहते हैं तो हमें अपना भविष्य आत्मबल पर तय करना होगा.

दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 281
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

शहर में मिलने के लिए कहा. 3 अगस्त की रात साढ़े 10 बजे देवीराम उस का भाई शिवराज, देवीराम का भतीजा जैकी, सुनील प्रेमी युगल नेहा व उत्तम को ले कर भिंड पहुंच गए. वहां उन्हें बालकराम मिल गया. वह भी गाड़ी में बैठ गया. गाड़ी झांसी ग्वालियर मार्ग होते हुए ग्वालियर जिले के डबरा पहुंची.

वहां पहुंच कर फ्लाईओवर से नीचे उतर कर लिंक रोड पर आ गए. यहीं पर उन लोगों ने बोलेरो में ही उत्तम के गले में रस्सी का फंदा कस कर उस की हत्या कर शव फेंक दिया. इस के साथ ही उस का प्राइवेट पार्ट

ग्वालियर के थाना आंतरी अंतर्गत सड़क किनारे पड़ी उत्तम यादव की लाश

काट दिया. इस के बाद नेहा को ले कर मुरैना रोड होते हुए राजस्थान के धौलपुर आ गए.

अलगअलग राज्यों में मिले शव

राजा खेड़ा रोड पर थाना दिहौली से करीब एक किलोमीटर दूर सुनसान जगह पर गाड़ी रोक ली. यहां नेहा की भी गले में रस्सी का फंदा लगा हत्या कर दी. उस की लाश भी वहीं फेंक दी.

हत्यारों ने लाश के चेहरे को मिट्टी से ढंक दिया. दोनों की हत्या कर शव ठिकाने लगा कर सभी हत्यारे पिनाहट वापस आ गए. फिर सभी अपनेअपने घर चले गए. देवीराम भी गांव अपने घर आ गया.

4 अगस्त, 2021 को राजस्थान के जिला धौलपुर जिले के थाना दिहौली क्षेत्र में कस्बा मरैना-दिहौली के बीच सड़क के किनारे खेत से सुबह 10 बजे नेहा का शव पुलिस ने बरामद किया था.

उस के गले में नाइलोन की पीले रंग की रस्सी से फंदा लगा था, जिस में 8-10 गांठे लगी थीं तथा चेहरा मिट्टी में दबा हुआ था.

इस पर एसपी धौलपुर केसर सिंह शेखावत ने शव की शिनाख्त नहीं होने पर 7 अगस्त को मैडिकल बोर्ड से उस का पोस्टमार्टम कराया. इस के बाद अंतिम संस्कार करा दिया गया. थाना दिहौली में हत्या का मुकदमा अज्ञात के नाम दर्ज कर लिया गया.

यहां से करीब 100 किलोमीटर दूर मध्य प्रदेश के जिला ग्वालियर के थाना आंतरी क्षेत्र में ग्वालियर झांसी हाईवे के पास भरतरी रोड पर सड़क के किनारे एक युवक की लाश उसी तरह की रस्सी से गला घोंट कर फेंकी हुई पुलिस को मिली.

पीले रंग की रस्सी में 8-10 गांठें लगी थीं. युवक का प्राइवेट पार्ट कटा हुआ था. यह शव उत्तम का था. लेकिन यह बात पुलिस को पता नहीं थी कि मृतक उत्तम है.

शिनाख्त न होने पर पोस्टमार्टम कराने के बाद धर्म का पता न चलने पर उसे दफना दिया गया. इस संबंध में थाना आंतरी पर हत्या का मुकदमा अज्ञात के खिलाफ दर्ज कर लिया गया.

एसपी (ग्वालियर) अमित सांगी के अनुसार, जांच के दौरान पुलिस के सामने एक महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि राजस्थान के धौलपुर में एक युवती की इसी तरह लाश मिली थी. इस पर धौलपुर पुलिस से जानकारी साझा की गई.

दोनों हत्याओं में समानता मिली. क्योंकि दोनों हत्याओं में जिस रस्सी का प्रयोग किया गया था, वह एक ही रस्सी के 2 टुकड़े थे. इस बात की पुष्टि उन के फौरेंसिक एक्सपर्ट ने भी की. दोनों लोग कपड़े भी पर्टिक्युलर कीमोफ्लाई के पहने हुए थे.

इस से अंदाजा लगाया गया कि हत्या के इन दोनों मामलों में कुछ न कुछ संबंध जरूर है. प्रथमदृष्टया ही लग रहा था कि प्रेमप्रसंग का या परिजनों द्वारा की गई हत्या है. इस के बाद पुलिस ने किशोरी व युवक के शवों की शिनाख्त के लिए उन के फोटो समाचारपत्रों में भी प्रकाशित कराए.

ऐसे हुआ खुलासा

उधर जब फिरोजाबाद पुलिस को यमुना में प्रेमी युगल की लाशें नहीं मिलीं, तब पुलिस ने आरोपियों के मोबाइल फोन की लोकेशन को खंगाला. इस से पुलिस को यह जानकारी मिल गई कि घटना के समय कहांकहां ये लोग गए थे.

पुलिस ने उस रूट पर पड़ने वाले सभी थानों से अज्ञात लाशों की जानकारी जुटाई. फोटो, कपड़ों व मृतकों के हुलिए के आधार पर नेहा और उत्तम की शिनाख्त हुई. फिर पुलिस आरोपियों को ले कर ग्वालियर पुलिस से मिली.

पुलिस आरोपी शिवराज व सुनील के साथ ही उत्तम के पिता सुधर सिंह व अन्य परिजनों को साथ ले गई थी. आरोपियों से शवों के फेंके गए स्थानों की तसदीक कराई. संबंधित दोनों थानों पर संपर्क किया. नेहा व उत्तम के फोटो व कपड़ों को देख कर पहचान लिया गया.

सक्षम अधिकारी के आदेश पर उत्तम के

दफनाए गए शव को जमीन से निकलवा कर परिजनों के सुपुर्द किया गया. थानाप्रभारी प्रवेंद्र कुमार सिंह व इस मामले के आईओ मोहम्मद खालिद दोनों थानों से सारे सबूत एकत्र कर फिरोजाबाद लौट आए.

उत्तम का शव जैसे ही गांव जहांगीरपुर पहुंचा, परिवार में कोहराम मच गया. बड़ी संख्या में भीड़ जुट गई. दोनों के भागने के बाद घरवाले समझ रहे थे कि वे लोग दोनों की तलाश कर रहे हैं. लेकिन नेहा के पिता व चाचा द्वारा हत्या करने की बात कुबूलने के बाद दोनों परिवारों में चीखपुकार मच गई.

जांच में पुलिस को पता चला कि प्रेमी युगल की हत्या में प्रयुक्त नाइलोन की लगभग 15 मीटर रस्सी पिनाहट से खरीदी गई थी. इसी रस्सी के 2 टुकड़े कर दोनों का गला घोंट कर हत्या की गई थी.

थाना सिरसागंज पुलिस ने पिनाहट से इस रस्सी विक्रेता की दुकान से वह बंडल भी बरामद कर लिया है, जिस से आरोपियों ने रस्सी खरीदी थी. इस के साथ ही बोलेरो भी बरामद कर ली. इसी गाड़ी में प्रेमी युगल की हत्या की गई थी.

हत्यारे इतने शातिर थे कि उन्होंने प्रेमी युगल की अलगअलग स्थानों पर हत्या कर शव

एसएसपी ए.के. शुक्ला, एसपी (ग्रामीण) डा. अखिलेश कुमार, थानाप्रभारी प्रवेंद्र कुमार सिंह व जांच अधिकारी मोहम्मद खालिद

अलगअलग राज्यों के दूरदराज इलाकों में इसलिए फेंके, ताकि सुनियोजित ढंग से की गई इन हत्याओं का कभी खुलासा न हो सके.

साथ ही देवीराम सिरसागंज पुलिस को गुमराह करता रहा कि हत्या कर दोनों के शव यमुना नदी में फेंक दिए थे, ताकि शव न मिलने पर वे लोग हत्या जैसे अपराध से बच जाएं.

लेकिन तीनों राज्यों की पुलिस की सूझबूझ से औनर किलिंग का परदाफाश हो गया. आंतरी और दिहौली थाना पुलिस ने दोनों मृतकों के डीएनए सैंपल सुरक्षित रख लिए थे, जो फिरोजाबाद पुलिस को सौंप दिए.

इस के बाद दोनों थानों में दर्ज मुकदमे थाना सिरसागंज में दर्ज मुकदमे में समाहित हो गए.

पुलिस इस अपहरण और हत्याकांड में शामिल 12 आरोपियों में से देवीराम व सुनील को गिरफ्तार कर चुकी है, जबकि शिवराज ने कोर्ट में सरेंडर कर दिया था.

अन्य फरार चल रहे आरोपियों बालकराम, जैकी, जितेंद्र, श्याम बिहारी, रोहित, राहुल, अमन उर्फ मोनू, गुंजन व दगाबाज दोस्त वीनेश की तलाश की जा रही थी.

नेहा और उत्तम एकदूसरे से बेइंतहा प्यार करते थे. दोनों शादी करना चाहते थे. लेकिन नेहा के घर वालों को यह रिश्ता मंजूर नहीं था. इस के बाद नेहा के घर वालों की झूठी शान की नफरत का शोला प्रेमी युगल के प्यार पर ऐसा गिरा कि प्रेमी युगल की जान ले ली. ●

पागलखाना जो अब है भूतखाना

खबर

भूतों में विश्वास रखने वाले हर जगह मिल जाएंगे. लोगों को हर सुनसान और निर्जन जगहों में भूत होने का भ्रम होता है. लोग वहां जाने से कतराने लगते हैं. ऐसी ही एक जगह अमेरिका में है, जो बीती सदी के साठ के दशक में दुनिया का सब से बड़ा पागलों का अस्पताल हुआ करता था.

अब वह भूतिया 'पागलखाना' बन चुका है. वहां जाने के नाम से लोगों की रूह कांप जाती है, जबकि उसे पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है. एक रिपोर्ट के अनुसार, यहां आने वाले अधिकतर लोगों का मानना है कि यह भूतों से भरा पागलखाना है. जहां कई लोग भूतों के बारे में पता करने के लिए आते हैं.

वह अजूबा अमेरिका के जौर्जिया में स्थित है. सेंट्रल स्टेट हौस्पिटल के नाम के इस अस्पताल में मनोरोग से ग्रस्त मरीजों का उपचार होता था. यह हौस्पिटल साल 1842 में बना था, जो साल 1960 तक पहुंचतेपहुंचते दुनिया का सब से बड़ा पागलखाना माना जाने लगा. उस जमाने में यहां 12 हजार से ज्यादा मरीजों का एक साथ इलाज चलता था.

बताते हैं इस हौस्पिटल में मरीजों को अमानवीय तरीके से रखा जाता था. उन्हें तरहतरह से यातनाएं दी जाती थीं. बच्चों को लोहे के पिंजरे में बंद रखा जाता था, जबकि बड़ों को जबरदस्ती स्टीम बाथ और ठंडे पानी से नहाने के लिए कहा जाता था.

इस पागलखाने के मैदान में 25 हजार से ज्यादा मरीजों को दफनाया जा चुका है. यहां उन मरीजों के नाम की मेटल से बनी प्लेट गड़ी हुई हैं. यही वह वजह है कि अब यह भूतों का डेरा बन चुका है. लोगों का मानना है कि वहां मरे हुए वैसे मनोरोगियों की आत्मा भटकती रहती है, जिन्हें अमानवीय यातनाएं दी गई हैं.

करीब हजार एकड़ में बने अस्पताल की 200 से ज्यादा खाली पड़ी इमारतों में भूत पकड़ने वाले लोग आते हैं. वैसे इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिला है कि वहां किसी ने भूत को देखा है. ●

मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

बेवफा बीवी बरदाश्त नहीं

दीक्षा की खूबसूरती पर फिदा हो कर ही हरेंद्र ने उस से विवाह किया था. लेकिन शादी के कुछ दिनों बाद ही हरेंद्र को शक हो गया कि पत्नी के अन्य कई लोगों के साथ संबंध हैं. इस की पुष्टि उसे पत्नी के फोन के काल रिकौर्डर की बातों से हो गई. फिर क्या था, उस ने बेवफा पत्नी को बीच सड़क पर ऐसी सजा दी कि...

❑ मोहम्मद आसिफ 'कमल' एडवोकेट

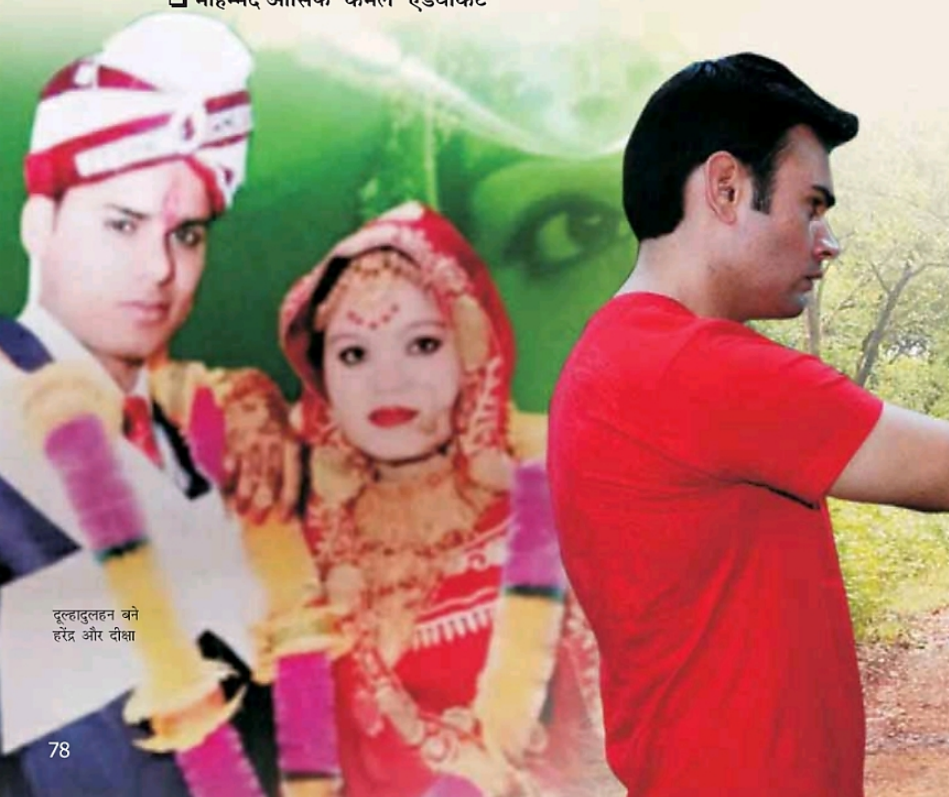

दूल्हादुलहन बने हरेंद्र और दीक्षा

हरेंद्र और दीक्षा की शादी के 2 साल हो चुके थे, मगर उन के बीच अटूट रिश्ता नहीं बन पाया था. वे पतिपत्नी जरूर थे, लेकिन यह कहना गलत होगा कि वे एकदूसरे को बेइंतहा मोहब्बत करते थे.

कारण हरेंद्र की कई आदतें दीक्षा को पसंद नहीं थीं और हरेंद्र को भी दीक्षा का बारबार मायके जाने की जिद करना अच्छा नहीं लगता था. एक तरफ दीक्षा की 17-18 साल की कच्ची उम्र थी तो वहीं दूसरी तरफ कामधंधे से बेफिक्र हरेंद्र को अपनी पुश्तैनी धनसंपत्ति पर बहुत ही गुमान था.

रक्षाबंधन के एक सप्ताह पहले से ही दीक्षा मायके जाने की जिद करने लगी थी, जबकि हरेंद्र उस की बात को टालने लगा था. वह दीक्षा के मायके जाने का कारण जान गया था. उस के मोबाइल फोन में रिकौर्ड बातों से उस का संदेह और भी गहरा हो गया था.

''मुझे मायके जाना है तो जाना है... मैं और कोई बहाना नहीं सुनूंगी.'' दीक्षा अपनी बात पर अड़ती हुई बोली.

''पिछले महीने ही तो तुम मायके गई थी...'' हरेंद्र ने कहा.

''गई थी, लेकिन 4 दिन बाद रक्षाबंधन है...राखी पर घर जाना है...सभी जाते हैं,'' दीक्षा विफरती हुई बोली.

''सभी जाते हैं तो क्या हुआ? आनेजाने में खर्च भी तो होगा.'' हरेंद्र ने कहा.

''तो मैं क्या करूं? कोई काम क्यों नहीं करते हो? कमातेधमाते क्यों नहीं हो?'' दीक्षा बोली.

''नहीं कमाता हूं तो क्या तुम्हें भूखा रखता हूं? खानेपहनने के लिए नहीं देता हूं? 2 महीने पहले ही तुम्हें 10 हजार रुपए का स्मार्टफोन खरीद कर दिया है.''

''वो तो तुम्हारा फर्ज बनता है पत्नी को खुश रखना और उस की अच्छी देखभाल करना,'' दीक्षा बोली.

''तुम हो तो पांचवीं फेल, पर बातें पढ़ेलिखों जैसी करती हो. मुझे ही अधिकार और फर्ज का पाठ पढ़ा रही हो. तुम्हारा क्या कर्तव्य है, कभी समझा है?'' हरेंद्र ने जवाबी हमला बोलते हुए ताना मारा.

''तुम ने भी हमारी बात कभी नहीं मानी, जब देखो तब शराब के नशे में धुत रहते हो. बापदादा की कमाई पर गुजारा कर रहे हो, आवारा दोस्तों के साथ घूमतेफिरते रहते हो और कितने ऐब गिनवाऊं, बताओ...'' दीक्षा लगातार बोलती जा रही थी.

उस की एकएक बात हरेंद्र को चुभ रही थी. गुस्से में उस ने हाथ उठाया और एक थप्पड़ उस

छायांकन: मौडलिंग

के गाल पर जड़ दिया. थप्पड़ खा कर दीक्षा तिलमिला गई. तन कर बोलने लगी, ''ऐंऽऽ तुम ने मुझे थप्पड़ मारा. अब तो मैं यहां एक पल भी रुकने वाली नहीं हूं. अभी के अभी मायके जाऊंगी. देखती हूं कि तुम कैसे रोकते हो मुझे.'' यह कहती हुई दीक्षा अपने कमरे से बाहर जा कर सूखने के लिए फैले कपड़े समेटने लगी.

हरेंद्र भी गुस्से से कमरे से बाहर निकल आया. बाइक स्टार्ट की और कहीं चला गया. कहां गया, इस की जानकारी केवल उस के यारों को ही थी.

2 घंटे बाद घर लौटा तो देखा, दीक्षा मायके जाने के लिए अपने सामान के साथ तैयार बैठी थी. हरेंद्र के हाथ में एक थैला था. उस का गुस्सा शांत हो चुका था. उस ने थैला उसे देते हुए सौरी बोला. फिर कहा, ''इस में तुम्हारी छोटी बहन शीतल और तुम्हारे लिए सलवारसूट के कपड़े हैं, मायके में सिलवा लेना.''

इसी के साथ उस के चेहरे को दोनों हाथों से पकड़ कर अगले दिन सुबहसुबह मायके छोड़ आने का वादा किया.

सलवारसूट का कपड़ा देख कर दीक्षा पति का थप्पड़ भूल गई. खुश हो कर बोली, ''बहुत सुंदर है, तुम्हारे लिए चाय बना कर लाती हूं.''

दीक्षा चली गई मायके

अगले रोज वह अपने मायके चली गई. दीक्षा का मायका मुरादाबाद जिले की तहसील बिलारी के गांव मुड़िया राजा का था. वह अरविंद कुमार की बेटी थी.

अरविंद कुमार के 2 बेटियों दीक्षा व शीतल के अलावा 2 बेटे अभिषेक व आयुष थे. दीक्षा बड़ी बेटी थी. उन्होंने दीक्षा का विवाह 28 नवंबर, 2019 को पास के ही गांव ढकिया नरू निवासी भागीरथ के बेटे हरेंद्र के साथ किया था.

बात 18 अगस्त, 2021 की है. रात के समय करीब साढ़े 9 बजे थे. अरविंद कुमार के पिता अतर सिंह अपनी पोतियों शीतल और दीक्षा के साथ घर पर थे.

दीक्षा और हरेंद्र: दीक्षा पति के शराब पीने की आदत से परेशान थी तो हरेंद्र पत्नी की बेवफाई से

उन दिनों उन का बड़ा बेटा अपने परिवार के साथ हिमाचल के सोलन में रह रहा था. उस की रोजीरोटी वहीं से चलती थी. और छोटा बेटा राजकुमार अपनी रिश्तेदारी में गया हुआ था और रक्षाबंधन की वजह से उस की पत्नी अपने मायके गई हुई थी. इस तरह से उस समय घर में केवल दीक्षा और उस की छोटी बहन शीतल ही थी.

रात को दरवाजा खटखटाने की आवाज सुन कर अतर सिंह ने अपनी पोती को आवाज दी, ''शीतल बेटा, देखो तो इस वक्त कौन आया है?''

शीतल दादा की आवाज सुन कर नीचे गई. दरवाजा खोला. देखा उस के जीजा हरेंद्र थे. शीतल वहीं से बोली, ''दादाजी, जीजाजी आए हैं.''

हरेंद्र सीढ़ियां चढ़ता हुआ सीधे अतर सिंह के कमरे में जा पहुंचा. बोला, ''रामराम बाबा, कैसे हैं?''

''रामराम बेटा, आओ बैठो. अच्छा हुआ तुम आ गए मैं घर में अकेला बैठा ऊब रहा था.'' कहते हुए उन्होंने फिर शीतल को आवाज लगाई, ''बेटा शीतल, दीक्षा को बोलो हरेंद्र के लिए पानी और कुछ खाने को ले कर आए.''

''अरे नहीं बाबाजी, मैं तो बस समझिए आप का हालचाल लेने आया हूं. कल रक्षाबंधन है. सुबहसुबह चला जाऊंगा.''

अतर सिंह ने हरेंद्र को सम्मान के साथ बैठाया. वैसे भी दीक्षा रक्षाबंधन के त्यौहार की वजह से आई हुई थी. किसी तरह की कोई शिकायत नहीं थी.

''बाइक से आए हो?'' अतर सिंह ने पूछा.

''नहीं कार से आया हूं.'' थोड़ी देर में ही हरेंद्र ने अंग्रेजी शराब का एक अद्धा अपनी जेब से निकालते हुए बोला, ''बाबाजी, गिलास मंगाओ. आज आप के साथ हो जाए एकएक पैग.''

अतर सिंह हरेंद्र के इस व्यवहार को देख कर हतप्रभ रह गए.

फिर भी शांति से कहा, ''बेटा तुम्हारी शादी को करीब 2 साल होने जा रहे हैं, आज तक तो तुम ने मेरे सामने कभी शराब नहीं पी.

> हरेंद्र अपनी पत्नी को हमेशा शक की निगाह से देखता था. यहां तक कि उस ने दीक्षा को जो मोबाइल दिया था, उस में आटोमैटिक वायस रिकौर्डिंग का ऐप डाउनलोड कर दिया था और उस के सभी काल की रिकौर्डिंग सुनता था. उसी से उसे पता चल गया था कि उस के कई चाहने वाले हैं. उन्हीं में एक उस का बहनोई भी था. यही नहीं, हरेंद्र को यह भी शक था कि उस के मायके में भी कई प्रेमी हैं.

तो फिर आज तुम ऐसा कैसे कह रहे हो ?''

''बाबाजी, यूं ही मूड हो आया. सोचा कि अपने दोस्तों के साथ तो पीता ही रहता हूं, क्यों न आप के साथ पी कर कुछ गिलेशिकवे दूर कर लिए जाएं.'' हरेंद्र बोला.

''लेकिन बेटा मेरी तबीयत ठीक नहीं है. ये देखो मेरी दवाई.'' अतर सिंह ने जेब से दवाई निकाल कर दिखाते हुए कहा, ''मैं शराब नहीं पीऊंगा.''

उसी वक्त दीक्षा भी कमरे में पानी का गिलास और खाने की थाली ले कर आ गई. सामने शराब देख कर गुस्से भरी नजरों से हरेंद्र को घूरा. बोली कुछ नहीं. खाने की थाली सामने रखी और गिलास को रख कर तेजी से

दीक्षा के पिता अरविंद कुमार का बिलारी तहसील अंतर्गत मुड़िया राजा स्थित मकान

जाने लगी. गिलास का पानी छलक कर वहीं छोटे से स्टूल पर फैल गया.

''दिखता नहीं है, यहीं मोबाइल रखा हुआ है, गीला हो गया तो.. ?'' हरेंद्र की बात पूरी भी नहीं हुई कि उस के मोबाइल की रिंगटोन बजने लगी. उस ने काल रिसीव की, ''हैलो...''

उधर से जो आवाज आई, उसे सुन कर दीक्षा को आवाज लगाई, ''...ये लो सुनो, तुम्हारा ही फोन है, मेरे जीजाजी हैं, तुम से ही बात करना चाहते हैं.''

ननदोई की उस के लिए आई काल जान कर दीक्षा ने तुरंत हरेंद्र के हाथों से फोन ले लिया और नीचे सीढ़ियों से उतरने लगी.

हरेंद्र भी उस के पीछेपीछे आया और चुपके से दीक्षा और अपने बहनोई के बीच फोन पर हो रही बातों का अनुमान लगाने लगा. हरेंद्र ने दीक्षा को यह कहते हुए सुना, ''मैं ने पहले मना किया है हरेंद्र के फोन पर मेरे लिए फोन नहीं करें, क्योंकि उसे हम पर अब शक है.''

वास्तव में हरेंद्र अपनी पत्नी को हमेशा ही शक की निगाह से देखता था. यहां तक कि उस ने दीक्षा को जो मोबाइल दिया था, उस में आटोमैटिक वायस रिकौर्डिंग का ऐप डाउनलोड कर दिया था. दीक्षा की गैरमौजूदगी में वह उस के सभी काल की रिकौर्डिंग सुनता था.

उसी से उसे इस बात का पता चल गया था कि उस के कई चाहने वाले हैं. उन्हीं में एक उस का बहनोई भी था. उस की लच्छेदार बातों से हरेंद्र को अनुमान हो गया था कि दीक्षा उस के साथ बेवफाई कर रही है.

यही नहीं हरेंद्र को यह भी शक था कि उस के मायके में भी कई प्रेमी हैं. ऐसा होना भी स्वाभाविक था. क्योंकि दीक्षा बला की खूबसूरत थी, उसे देख कर कोई भी उस पर मोहित हुए बिना नहीं रह सकता था. हरेंद्र भी उस की खूबसूरती को देख कर ही शादी करने के लिए राजी हुआ था.

दूसरी बात दीक्षा के बातें करने का लहजा और मजाक का जवाब मजाक में देने का अंदाज किसी को भी पसंद आ जाता था. वीडियो कालिंग की दीवानी थी. उस के कई वीडियो कालिंग की क्लिपिंग्स हरेंद्र भी देख चुका था.

उसे देखते हुए हरेंद्र के सीने पर सांप लोटने लगते थे कि दीक्षा उस के साथ प्रेम से क्यों नहीं पेश आती है? वह उस से हमेशा रूखी बातें क्यों करती है. जबकि दूसरों के साथ वह दिल की बातें उड़ेल कर रख देती थी.

वीडियो कालिंग, फ्लाइंग किस तो ऐसे देती थी जैसे वह प्रेमी नहीं पति हो. यह सब बातें हरेंद्र को भीतर से खाए जा रही थीं. उस के वैवाहिक संबंध में मधुरता कम कड़वाहट अधिक भर गई थी.

ऊपर से दीक्षा द्वारा बारबार शराबीकबाबी कहना, नाकारा, नालायक मर्द कहते हुए ताने मारना हरेंद्र को काफी दुखी कर देता था. बातबात पर उस की दीक्षा से बहस हो जाती थी. ऐसी बहस रक्षाबंधन के कुछ रोज पहले भी हो गई थी.

दीक्षा को मारी गोली

कुछ समय बाद दीक्षा हरेंद्र के कमरे में आ कर उस का मोबाइल लौटाने आई. खाना स्टूल पर पड़ा देख कर बोली, ''आप ने कुछ खाया नहीं ?''

''अरे बेटी, इसे अपने कमरे में ले जा, वहीं तुम दोनों खाना खा लेना. और हां, शीतल को एक गिलास गर्म दूध ले कर भेज देना. सोने से पहले वाली दवाई खानी है.'' अतर सिंह बोले.

उस के बाद दीक्षा और हरेंद्र नीचे के अपने कमरे में आ गए. अगले दिन अतर सिंह को जो सूचना मिली उस से पूरा परिवार सदमे में आ गया.

बात ही कुछ ऐसी हुई कि अतर सिंह के परिवार से ले कर भागीरथ के परिवार में खलबली मच गई.

हरेंद्र भागीरथ का सब से छोटा बेटा था. उन का पुश्तैनी मकान बिलारी से सिरसी जाने वाले मार्ग के किनारे ग्राम ढकिया नरू में है. भागीरथ का परिवार वहीं सालों से रहते आए हैं. सिरसी मार्ग पर सड़क के किनारे उन की अच्छी खेतीबाड़ी भी है.

अतर सिंह की नींद सुबह देर से तब खुली, जब नीचे घर में कोई हलचल सुनाई दी. शीतल से कुछ लोग तेज आवाज में बातें कर रहे थे. आवाज सुन कर अतर सिंह भी नीचे गए. घर पर आए एक सिपाही को देख कर वह अचंभित हो गए.

जल्द ही उन्हें मालूम हो गया कि दीक्षा को गोली लगी है. वह मुरादाबाद अस्पताल में है. अतर सिंह अभी पूरा मामला समझ पाते इस से पहले ही सिपाही ने बताया कि दीक्षा की मौत हो चुकी है. वह बेहद घायलावस्था में थाना कुंदरकी क्षेत्र के बाईपास के किनारे पैट्रोलिंग पुलिस को मिली थी. वह खून से लथपथ तड़प रही थी.

पुलिस ने इस की सूचना थानाप्रभारी संदीप कुमार को देने के बाद उसे निकट के अस्पताल पहुंचा दिया था. डाक्टर ने उस के सिर में गोली लगने की जानकारी दी और प्राथमिक उपचार के बाद जिला मुख्यालय रेफर कर दिया, परंतु उस ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया.

थाना कुंदरकी पुलिस मृतका की शिनाख्त में जुट गई. अभी वह इस केस की कागजी कारर्वाई कर ही रहे थे. तभी उन्हें कोतवाली बिलारी से सूचना मिली कि कुंदरकी बाईपास

सीओ देशदीपक सिंह

के किनारे घायलावस्था में जो युवती मिली थी, उस के हमलावर ने कोतवाली में सरेंडर कर दिया है. वह हमलावर कोई और नहीं बल्कि दीक्षा का पति हरेंद्र ही था.

हरेंद्र ने ही अपनी पत्नी दीक्षा की हत्या की सूचना कोतवाली बिलारी को दे दी थी.

बिलारी कोतवाली के प्रभारी आर.पी. सिंह ने हरेंद्र से मामले की पूछताछ की. हरेंद्र ने अपना अपराध स्वीकारते हुए बताया कि उस

दीक्षा की मां और पिता अरविंद कुमार

का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण था. विवाह के 2 महीने बाद ही उसे मालूम हो गया था कि उस की पत्नी के और भी प्रेमी हैं. इस कारण वह हमेशा मायके जाती रहती थी.

हरेंद्र ने अपनी मृतक बीवी पर यह भी आरोप लगाया कि वह किसी की चिकनीचुपड़ी बातों में तुरंत आ जाती थी और पति को छोड़ कर उस के ही प्रेम इजहार को महत्त्व देती थी. हरेंद्र का कहना था कि दीक्षा ही प्रेमी को फंसा कर रखती थी.

थानाप्रभारी संदीप कुमार

इस कारण वह हमेशा पत्नी से नाराज रहता था. इस की वजह से घर में कलह काफी बढ़ गई थी. घटना के दिन भी रात को उस की ननदोई से फोन पर हुई बात को ले कर काफी बहस हो गई थी.

उस रात बात इतनी बिगड़ गई कि जबरन रात को ही घर से बाहर उसे ले कर निकल पड़ा. उसे अपनी गाड़ी में बिठाया और बाईपास पर नीचे उतार कर उस के सिर में गोली मार दी.

उस के बाद कुछ दूर जा कर सोच में पड़ गया कि उसे अब क्या करना चाहिए. हालांकि गोली लगने से दीक्षा तड़पती हुई गिर पड़ी थी. पुलिस के आने तक उस की सांसें चल रही थीं.

हरेंद्र के बयानों के आधार पर उस से पूछताछ थाना कुंदरकी में भी हुई. वहां उस ने पुलिस को घटनास्थल पर ले जा कर हत्या में इस्तेमाल तमंचा बरामद करा दिया, जो उस ने जंगल में फेंक दिया था. उस की बताई हुई जगह पर तलाशी के बाद एक बाइक भी कब्जे में ली गई.

पुलिस ने दीक्षा के पिता अरविंद कुमार की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर ली. हरेंद्र से पूछताछ के बाद उसे न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया.

पुलिस का कहना है कि घटनास्थल पर मोटरसाइकिल बरामद हुई है. यह सवाल बना रहा कि जब हरेंद्र अपनी ससुराल कार से आया था तब मोटरसाइकिल कहां से आ गई? क्या हत्या में हरेंद्र के साथ कोई और भी शामिल था? इस बारे में पुलिस कोई जवाब नहीं दे सकी थी.

बहरहाल, थानाप्रभारी संदीप कुमार चार्जशीट तैयार करने से पहले इस बात की जांच कर रहे हैं कि मृतका के पति हरेंद्र ने पत्नी पर जो आरोप लगाए थे, उन में कितनी सच्चाई है? ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX™

Advanced Formula For
Strong Immunity

कैप्सूल, सिरप, ओरल ड्राप्स एवं पाउडर

Multivitamin, Multiminerals & Antioxidants

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगो से बचाए

ZEE LABORATORIES LTD.

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

(Registered) RNI DELHI 64905/15/DL(C)-14/1391/19-21. ® P.O. SRT Nagar, ND-55. Posting Date 06-12. Published on 26/10/2021. Pgs. 84